



अहिंसक-भौतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 2 ■ 16-30 नवम्बर, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

□ सदस्यता शुल्क :

- ◆ एक प्रति : बारह रु.
- ◆ वार्षिक : 300 रु.
- ◆ त्रैवार्षिक : 700 रु.
- ◆ दस वर्षीय : 2000 रु.

□ विज्ञापन सहयोग :

- ◆ द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

□ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

Website : anuvratinfo.org



- ◆ मूल्य है सीमाकरण का
- ◆ सुफल जीवन का रहस्य
- ◆ बालकों का मानसिक स्वास्थ्य
- ◆ मत करो बचपन पर निर्ममता
- ◆ जब बच्चा सवाल पूछने लगे
- ◆ बच्चों से छीन ली बंदूक, दिया प्रेम का सबक
- ◆ अच्छे संस्कार कैसे डालें
- ◆ अमर प्रेरणापुंज पं. जवाहरलाल नेहरू
- ◆ कन्नू और पिन्टू
- ◆ राहुल की नादानी
- ◆ पतंग
- ◆ कैसे पढ़ाये लाइले को
- ◆ गोरैया के चार बच्चे
- ◆ बाल साहित्य एवं बाल मनोविज्ञान
- ◆ बचपन को झुठलाते घोषणा-पत्र
- ◆ बालक स्कूल में क्यों पिछड़ता है
- ◆ श्रम का महत्त्व
- ◆ स्वास्थ्य एवं संस्कारों पर ध्यान दें
- ◆ संस्कारों को समर्पित : ज्ञानशाला

- आचार्य महाप्रज्ञ 3
- आचार्य महाश्रमण 5
- द्वारकेश भारद्वाज 6
- डॉ. मदन डांगी 8
- आशीष वशिष्ठ 10
- प्रमोद भटनागर 11
- डॉ. विभा सिंह 12
- प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा 14
- सीताराम गुप्ता 16
- सत्यनारायण 'सत्य' 18
- डॉ. सूरज मृदुल 19
- डॉ. अनामिका प्रकाश 20
- शिवचरण मंत्री 21
- राजकुमार जैन 'राजन' 22
- सचिन कुमार जैन 24
- रूपनारायण कावरा 26
- भारती शर्मा 27
- हीरालाल छाजेड़ 28
- मुनि अमृतकुमार 30

■ स्तंभ

- ◆ संपादकीय 2
- ◆ राष्ट्र चिंतन 15
- ◆ प्रेरणा / लघुकथा 7, 13, 23
- ◆ झांकी है हिन्दुस्तान की 25
- ◆ अणुव्रत आंदोलन 33-40

खो रहा है बचपन?

बचपन को हम हमारे हाथों ही रुला रहे हैं छोटी उम्र में ही विद्यालय की राह दिखाकर, छात्रावास में दाखिला दिलाकर, स्वयं की महत्वाकांक्षाओं को लाद कर, जेब खर्च देकर और बाल उत्पीड़न के द्वारा।

बच्चा घर-आंगन की मुस्कान है। बच्चे की मुस्कराहट देख हम हमारा दुःख भूल जाते हैं और नई प्रेरणा लेते हैं लेकिन वैश्वीकरण की वर्तमान व्यवस्थाओं ने बचपन की मुस्कराहट को छीन उसे छोटी वय में ही तीन वर्ष के होते-होते विद्यालय की राह दिखा दी है। यदि हमारी संतान ढाई से तीन वर्ष की उम्र में विद्यालय नहीं गई तो वह पिछड़ जायेगी, तेजी से प्रसारित इस प्रतियोगी धारणा ने नन्हें-मुन्नों से माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, भाई-बहिन की गोद को छीन लिया है, वह गोद जहां बैठ बालक प्यार की लौरियाँ सुनता हुआ जीवन की सीख पाता है। विद्यालय जाने की उम्र चार वर्ष की है ताकि बच्चा घर-आंगन में पूरे समय रह, बड़ों के हाथों में पल अपना सही विकास कर सके और परिजनों का भरपूर लाड़-प्यार पा सके। यह विडम्बना ही है कि आज बाल पीढ़ी बड़े बुर्जुगों के हाथों में नहीं, आया के हाथों में पल अपने बचपन को बिसरा रही है।

छोटी उम्र में ही विद्यालय जाने के लिए समय पर उठना, आनन-फानन में तैयार होना, बिना अल्पाहार के ही विद्यालय जाना, विद्यालय अनुशासन में बंधना, कक्षा - गृह कार्य का तनाव झेलना, शिक्षिका की डॉट-डपट सुनना तीन-चार साल की नन्हें जान पर आफत का दैनिक क्रम हो गया है जो बचपन को उदासीन बना रहा है। नन्हें सी जान को अंग्रेजी भाषा में बोलना, पढ़ना आवश्यक हो गया है क्योंकि बिना अंग्रेजी जाने माता-पिता की महत्वाकांक्षाओं का क्या होगा? जब दो-चार शब्द-वाक्य अंग्रेजी के बोल लेता है या अंग्रेजी कविता का संगान करता है तो माँ-बाप का सीना फूल जाता है और यदि वह हिन्दी भाषा की कविता बोलता है तो माता-पिता का उत्साह ठंडा हो जाता है। विदेशी भाषा के प्रति हमारे इस मोह ने बाल प्रतिभाओं के स्वाभाविक विकास को अवरुद्ध कर दिया है।



महानगरों की स्थितियाँ तो और भी विचित्र हो चली हैं कामकाजी माता-पिता होने के कारण छः सात वर्ष की उम्र में ही बच्चे का उस स्कूल में दाखिला करवाया दिया जाता है जहाँ छात्रावास की सुविधा हो। माता-पिता का कहना है हमें नौकरी पर जाना है, व्यापार संभालना है इस कारण बच्चों का पूरा ध्यान नहीं दे पाते। उसे डॉक्टर-इंजीनियर बनाना है, बड़ा आदमी बनाना है इसलिये हॉस्टल में डाल दिया है। बालक-बालिका इंजीनियर-डॉक्टर नहीं बनना चाहते पर माता-पिता की जिद के आगे उन्हें विज्ञान वर्ग में पढ़ना होता है जबकि संतान कला या वाणिज्य वर्ग में जाना चाहती है। माता-पिता की बढ़ती चाहत ने बच्चों को अवसाद के घेरे में उलझा दिया है। छात्रावास में कभी-कभार माता-पिता मिलने आते हैं, शुल्क अदा करते हैं और चले जाते हैं। माता-पिता के जाते ही फिर से शुरु होता है अकेलेपन का सफर जो बच्चों को अंदर तक हिला देता है।

बालक-बालिकाओं को जेब खर्च के नाम पर जो राशि मिल रही है उसका दुरुपयोग हो रहा है या सदुपयोग यह देखने की हमें फुर्सत ही नहीं है। माता-पिता की इस लापरवाही और उदासीनता के कारण बालपीढ़ी व्यसन की तरफ आकृष्ट हुई है। महानगरों में हुए सर्वेक्षण के अनुसार बढ़ती जेब खर्च की राशि ने माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर तक पढ़ने वाले विद्यार्थियों में व्यसन की लत को बढ़ाया है, 15 से 19 वर्ष के बच्चों में शराब पीने का चलन बढ़ा है और 45 फीसदी बचपन शराब के हवाले हो गया है। तेजी से छूट रहे-खो रहे बचपन को बचाने के लिए आवश्यक है कि माता-पिता जागें, अपनी महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगाये और बाल पीढ़ी को खेलने-कूदने के पूरे अवसर दें।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

मूल्य है सीमाकरण का

आचार्य महाप्रज्ञ

प्राचीन साहित्य में मनुष्यों की कई कोटियाँ बतलाई गई हैं। आधुनिक मनोविज्ञान में भी मनुष्य के कई प्रकार बतलाए गए हैं। मनुष्यता की दृष्टि से श्रेष्ठ मनुष्य कौन हो सकता है? मानवता की दृष्टि से स्वयंभू गुण वाला व्यक्ति कौन हो सकता है? उसकी कसौटियाँ क्या हैं? उसके मानदण्ड क्या हैं? जिनके आधार पर कहा जा सके कि यह अच्छा मनुष्य है। जैन आचार-संहिता या दार्शनिक दृष्टि से मनुष्य की चार कोटियाँ हमारे सामने हैं।

श्रेष्ठ मनुष्य की पहली कसौटी है कषाय का उपशमन। जो शान्त रहना जानता है, जिसे शान्त रहने की कला आती है, जो उत्तेजना में नहीं जाता, बात-बात में क्रोध नहीं करता, वह मानवोचित गुणों से युक्त मनुष्य कहा जा सकता है।

श्रेष्ठ मनुष्य की दूसरी कसौटी है विनम्रता। जो आदमी विनम्र है, अहंकार से दूर है, वह मनुष्य के श्रेष्ठ गुणों से युक्त है। मनुष्य किस बात का अहंकार करता है? मनुष्य के पास अहंकार करने जैसी कोई चीज नहीं है। अहंकार तो वही कर सकता है जो शाश्वत है। मैं सदा परम बना रहूँगा, मैं सदा चरम बना रहूँगा, अविनाशी रहूँगा, जिसके लिए इस बात की गारंटी हो, वही व्यक्ति अहंकार कर सकता है। लेकिन नश्वर मानव के लिए ऐसी कोई बात नहीं है। उसे कभी तो रोग आक्रान्त कर देता है, कभी सत्ता हाथ से फिसल जाती है, कभी अधिकार और धन-वैभव चला जाता है। आखिर कौन-सी संपदा है उसकी जो सदा अक्षुण्ण रहने वाली है? रूप नाशवान, धन नाशवान, बल-वैभव नाशवान, शरीर भी नाशवान है, फिर किस बात का अभिमान और अहंकार?

श्रेष्ठ मनुष्य की तीसरी कसौटी है सरलता। जो सरल होता है, वह अच्छा आदमी है। सरल होना जीवन की बहुत

बड़ी उपलब्धि है। महाप्रभु ईसा के जीवन का जो वर्णन है, उसमें बार-बार यही कहा गया है कि मोक्ष में या परम पथ में जाने का अधिकार उसी को है जो शिशु की तरह सरल होता है। कुछ लोग सरल व्यक्ति को 'भोला' मान लेते हैं, किन्तु सरलता और भोलेपन में अन्तर है। भोले आदमी को सरल नहीं कहा जा सकता। सरल वह होता है जो सब बातों को जानता है, समझता है, अपने विवेक से पूरा काम लेता है और अपने जीवन में किसी प्रकार का छल-कपट और प्रवंचना नहीं करता। जो एकदम पारदर्शी रहता है वह व्यक्ति सरल होता है। जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है सरलता।

श्रेष्ठ मनुष्य की चौथी कसौटी है संतोष। जो संतोष करना जानता है, सीमा करना जानता है, उसे श्रेष्ठ मनुष्य कहा जा सकता है। जो सीमा करना नहीं जानता, 'बस अब नहीं' यह कहना नहीं जानता, वह अच्छा आदमी नहीं कहा जा सकता। अच्छाई और श्रेष्ठता का गुण उसमें कभी आ नहीं सकता। हो सकता है उसके पास प्रचुर मात्रा में धन हो जाए, सत्ता की भी प्राप्ति हो जाए, पर अच्छा आदमी वह नहीं बन सकता। भगवान महावीर का एक महत्वपूर्ण शब्द है सीमाकरण। हम किसी पदार्थ को सर्वथा छोड़ नहीं सकते, किन्तु उसका सीमाकरण किया जा सकता है। अनावश्यक हिंसा नहीं करूँगा, निश्चित सीमा से अधिक संग्रह नहीं करूँगा। सदा सत्यवादी बनने की बात दुष्कर है, किन्तु यह संकल्प किया जा सकता है कि मैं कभी अनर्थकारी झूठ नहीं बोलूँगा। ब्रह्मचारी नहीं बन सकता, किन्तु अब्रह्मचर्य की सीमा करूँगा,

यह संकल्प किया जा सकता है। सावधिक शीलव्रत की बात इससे जुड़ी हुई है। कोई भी गृहस्थ पूर्णतया अपरिग्रही नहीं हो सकता, इतने से ज्यादा उपभोग नहीं करूँगा। यह सीमाकरण जितना धार्मिक है, उतना ही आज की समस्याओं का भी सटीक समाधान है। आज सीमा का अतिक्रमण समस्या पैदा कर रहा है। आदमी 'बस' कहना नहीं जानता। खाना खाते समय शायद वह और ज्यादा खाने की अनिच्छा व्यक्त कर दे, किन्तु धन, वैभव, सत्ता आदि के लिए वह 'इत्यलम्' कभी नहीं कहेगा। इनके लिए वह किसी भी सीमा को मान्य नहीं करेगा, जितना भी मिलता रहे, उसके लिए कम ही होगा।

संतोष, सुखी जीवन का बहुत बड़ा सूत्र है। इसे ठीक से समझ लें और स्वीकार कर लें तो आदमी बहुत अच्छा जीवन जी सकता है। जो संतोष का मूल्यांकन ठीक से नहीं करता, संतोष के महत्व को जो नहीं जानता, केवल संग्रह को ही सब कुछ मानता है, उसके लिए समस्या पैदा होती है। जिसके जीवन में 'तृप्ति' नहीं है, वह सदा समस्याओं से संकुल बना रहेगा।

एक धनी आदमी अपनी दुकान पर बैठा था। चार-पाँच आदमी उसकी दुकान के सामने कार से उतरे। उनके व्यक्तित्व से लग रहा था कि जरूर ये किसी व्यापारिक काम से मेरे पास आए हैं। उसने सबका स्वागत किया और आने का मंतव्य पूछा। उन लोगों में से एक ने कहा- 'हम एक संबंध के सिलसिले में आए हैं। हमने सुना है आपके एक लड़का है। अभी उसने बिजनेस मैनेजमेंट का कोर्स पूरा किया है। हमारे भी एक लड़की है।

दिशा बोध

अभी-अभी एम.बी.बी.एस. किया है। हम चाहते हैं कि उसके लिए आप अपनी स्वीकृति प्रदान करें।

विवाह के संबंधों में चाहे-अनचाहे लेन-देन की बात आ ही जाती है। जैसे नींबू की खटास मन-ही-मन अनुभव करने पर मुंह में लार आनी शुरू हो जाती है, वैसे ही शादी के संबंध में लड़के वालों की स्थिति होती है। लड़का पैदा होते ही परिवार के लोग बड़े-बड़े मंसूबे बाँधने लगते हैं। लड़का जैसे-जैसे शिक्षा प्राप्त कर योग्य बनता जाता है, परिवार के लोगों की आकांक्षाएँ, कामनाएँ भी उसे लेकर आकाशी उड़ान भरने लगती हैं। कितना मिलेगा ? इसके आंकड़े बनाने लगते हैं। संयोग से किसी ऐसे परिवार से विवाह का प्रस्ताव आता है जो हर प्रकार से समर्थ है तो फिर वह आकांक्षा प्रबल से प्रबलतर और प्रबलतम हो जाती है।

सेठ ने कहा- 'आपका प्रस्ताव सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई। किन्तु इस संदर्भ में तत्काल 'हाँ' कहने की स्थिति में नहीं हूँ। लड़का अभी शादी के लिए अरुचि दिखा रहा है। आपसे पहले भी कई लोग संबंध लेकर आ चुके हैं। उनमें दूर के रिश्ते वाले लोग भी थे, उनका दबाव भी काफी रहा। और जाते-जाते पाँच करोड़ देने की बात भी कह गए, किन्तु लड़के की अभी शादी की मानसिकता ही नहीं है। वह दो नई इंडस्ट्री शुरू करना चाहता है। मैंने कहा- शादी के बाद भी यह काम कर सकते हो, किन्तु उसका आग्रह है। ऐसी स्थिति में मैं क्या कर सकता हूँ?'

विवाह का प्रस्ताव लेकर आए आगंतुक लोगों से पाँच करोड़ मिलने की बात कह कर सेठ ने अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें अपने मंतव्य की सूचना दे दी कि पाँच करोड़ से अधिक की बात करो तो विचार किया जा सकता है।

इस संदर्भ में देखें कि बड़प्पन की भावना भी जागी, धनवान और पुत्रवान होने का दर्प भी जागा और इसके कारण

आदमी अपने ही जाल में इस तरह क्यों फँसता है ? क्योंकि उसके सामने कोई सीमा नहीं है। कोई सीमा तो होनी चाहिए, कहीं तो कोई अंत होगा। दिन की सीमा है, रात की सीमा है, धरती की परिधि की भी सीमा है, वह भी असीम नहीं है। सिवाय आकाश के कोई असीम नहीं है। लोकाकाश की दृष्टि से आकाश की भी सीमा हो जाती है। असीम कुछ भी नहीं है, पर आदमी की आकांक्षा, तृष्णा असीम है। उस असीमता के आधार पर वह व्यवहार करने लग जाता है।

लोभ भी जागा। आने वाले लोग भी काफी पैसे वाले थे। सेठ ने इतनी बड़ी पार्टी को हाथ से नहीं जाने देने का पूरा प्रयत्न भी किया। वह अपने निजी कक्ष में गया और वहाँ से बहुत सारे कागजात और बही-खाते लाकर आगंतुक लोगों को दिखा कहा कि यह देखें हमारी कंपनियों का वार्षिक टर्नओवर, किसी का बीस करोड़, किसी का तीस करोड़। मैं तो चाहता हूँ कि अब वह अपनी गृहस्थी बसाकर सारे काम को सँभाल ले, लेकिन वह अपनी स्वीकृति ही नहीं देता।

सेठ ने इशारे से अपनी प्रचुर धन-संपदा का पूरा खाका उन लोगों के सामने रख दिया और दहेज में मिल रहे पाँच करोड़ की बात कहकर परोक्ष रूप से उन्हें समझा भी दिया कि इससे ऊपर जाएँ तभी इस संबंध में कुछ किया जा सकता है। सेठ के सारे बही-खाते सामने ही रखे थे कि इतने में कई गाड़ियों से एक साथ उतरकर लोगों ने उनके ऑफिस को चारों ओर से घेर लिया। संबंधों की बात करने आए लोगों में से एक ने कहा- 'सेठजी! हम सगाई-संबंध की कोई बात करने नहीं

आए। हम तो इन्कमटैक्स विभाग के लोग हैं। अपने बही-खाते हमारे सामने रखकर हमारी बहुत सारी समस्याओं का समाधान कर दिया। हमारे मांगने पर तो आप असली खाते हमें नहीं दिखाते, इसलिए बात कुछ दूसरे ढंग से करनी पड़ी।

सेठ के सारे ऑफिसों की, उनके घर की तलाशी हुई। सारे कागजात जब्त हुए और पाँच करोड़ दहेज की इच्छा संजोए सेठ को पचास करोड़ से हाथ धोने पड़े।

आदमी अपने ही जाल में इस तरह क्यों फँसता है ? क्योंकि उसके सामने कोई सीमा नहीं है। कोई सीमा तो होनी चाहिए, कहीं तो कोई अंत होगा। दिन की सीमा है, रात की सीमा है, धरती की परिधि की भी सीमा है, वह भी असीम नहीं है। सिवाय आकाश के कोई असीम नहीं है। लोकाकाश की दृष्टि से आकाश की भी सीमा हो जाती है। असीम कुछ भी नहीं है, पर आदमी की आकांक्षा, तृष्णा असीम है। उस असीमता के आधार पर वह व्यवहार करने लग जाता है।

वर्तमान समस्याओं के संदर्भ में अगर धर्म के द्वारा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान हो सकता है, तो वह एकमात्र सीमाकरण से ही हो सकता है।

हमें 'सीमा' शब्द पर बहुत ध्यान देना होगा। हर बात की सीमा करें। संग्रह की भी सीमा करें। अगर सीमाकरण का यह सिद्धान्त व्यापक बनता है तो जो कार्य साम्यवाद के द्वारा नहीं हुआ, वह कार्य सीमाकरण के द्वारा हो सकता है। अगर मनुष्य का हृदय बदल जाए और वह इस सच्चाई को समझ ले कि असीम रहकर हम इस दुनिया में जीने के अधिकारी नहीं हैं। असीम की ओर अग्रसर होना मृत्यु की दिशा में प्रयाण करने जैसा है। यह सच्चाई समझ में आ जाए और सीमा का मूल्य ज्ञात हो जाए तो फिर बहुत सारी समस्याओं का अंत हो जाएगा, जिनसे आज सारा विश्व आक्रान्त है।



सुफल जीवन का रहस्य

आचार्य महाश्रमण

आदमी अच्छा इंसान बन सकता है, बशर्ते कि वह त्याग, संयम को स्वीकार करे। तीन तत्त्व ऐसे हैं जो आदमी को खराब बनाने वाले हैं। और भी अनेक तत्त्व ऐसे हो सकते हैं, किन्तु मेरा विश्वास है कि उन तीनों में बहुत कुछ समा जाता है। वे तीन तत्त्व हैं गुस्सा, नशा और मृषा।

पहला तत्त्व है गुस्सा। जब आदमी को गुस्सा आता है, आवेशयुक्त बन जाता है। शांत स्वभाव वाला आदमी जितना अच्छा लगता है, गुस्सेल, बात-बात में आक्रुष्ट होने वाला और अंट-संट बोलने वाला व्यक्ति उतना ही अशोभनीय लगता है। उसके साथ रहना भी अच्छा नहीं लगता है। आदमी इस गुस्से की बीमारी से मुक्त बने। उपशम के अभ्यास के द्वारा, क्षमा के अभ्यास के द्वारा और सहिष्णुता के अभ्यास के द्वारा आदमी गुस्से पर नियंत्रण करे।

अनेक लोग ऐसे हैं, जो गुस्सा करना नहीं चाहते, किन्तु गुस्सा बिना बुलाए आ जाता है। गुस्से पर नियंत्रण न होने के कारण छोटी-छोटी बात में आदमी को कई बार गुस्सा आ जाता है और दुःखी बन जाता है। जो व्यक्ति शांत स्वभाव वाला है, उसके साथ अभद्र व्यवहार करने पर भी वह अपनी शांति को भंग नहीं करता। जो व्यक्ति गुस्से की कमजोरी से आहत है, ग्रस्त है, उसे उपशम कषाय का कुछ अभ्यास करना चाहिए

● सबसे पहले मन में संकल्प करे कि मुझे गुस्से से मुक्त होना है।

● तत्पश्चात् वैसा ही प्रयास करे।

● ध्यान का अभ्यास करे।

● दीर्घश्वास का प्रयोग करे।

● ज्योतिकेन्द्र-प्रेक्षा का प्रयोग करे।

● रात्रि-शयन से पूर्व यह चिंतन करे कि मेरा स्वभाव शांत हो रहा है।

● प्रातः पुनः संकल्प करे कि आज पूरे दिन मुझे गुस्सा नहीं करना है।

● उन व्यक्तियों को याद करे जो शांत

स्वभाव के लिए प्रख्यात हैं और उन जैसा बनने की भावना करे।

जो व्यक्ति इस प्रकार गुस्सामुक्ति के लिए संकल्प, प्रयोग और अभ्यास करता है वह एक बड़ी कमजोरी से मुक्त हो जाता है।

दूसरा तत्त्व है नशा। हम लोग गांवों, कस्बों और ढाणियों में जाते हैं। नगरों और महानगरों में भी जाते हैं। विभिन्न लोगों से संपर्क होता है। तब लगता है कि नशा काफी व्यापक है। इस नशे के कारण लोगों की स्थिति भी कितनी खराब हो जाती है। आर्थिक दृष्टि से तो नुकसान होता ही है, मानसिक दृष्टि से भी नुकसान संभव है और शारीरिक दृष्टि से भी नुकसान हो सकता है। जयपुर से दिल्ली की ओर प्रस्थान यात्रा में एक बार एक बहिन ने बताया कि उसका पति शराबी है। वह एक रुपया कमाता है और दस रुपया गंवाता है। मैं बहुत गरीब हूं, मेरे पास मकान नहीं है, खाने के लिए अनाज नहीं है।

मैंने अनुभव किया कि गरीबी का एक प्रमुख कारण है नशा। जो व्यक्ति कमाई कम करता है और शराब आदि नशे में खर्च अधिक करता है, वह कैसे अपने बच्चों को खाना खिला सकता है? कैसे स्वयं खा सकता है और कैसे रहने के लिए मकान और पहनने के लिए कपड़ों की समुचित व्यवस्था कर सकता है? इसलिए आदमी यह चिंतन करे कि दुर्दशा करने वाला नशा मेरे पास न आ जाए। आदमी प्रारंभ से ही यह संकल्प करे कि मैं नशामुक्त जीवन जीऊंगा और फिर जीवन-व्यवहार में भी उस संकल्प को प्रायोगिक बनाए तो आदमी एक बड़ी बीमारी से बच सकता है।

तीसरा तत्त्व है मृषा। आदमी बेईमानी करता है। बेईमानी का एक महत्वपूर्ण तत्त्व है झूठ बोलना। ऐसे आदमी बहुत कम मिलेंगे जो यह कह सकें कि हम कभी झूठ नहीं बोलते। अनेक व्यक्ति ऐसे होंगे जो सामान्यतया झूठ नहीं बोलते, किंतु व्यापार-धंधे

में और टैक्स बचाने के मामले में झूठ बोल जाते हैं। अगर सत्यवादिता का संकल्प हो तो आदमी झूठ से काफी अंशों में बच सकता है। ईमानदारी को सर्वोत्तम नीति माना गया है। अगर आदमी का संकल्प पुष्ट हो तो जीवन में प्रामाणिकता को काफी अंशों में रखा जा सकता है।

अच्छा इंसान बनने के लिए प्रामाणिकता का अभ्यास बहुत अपेक्षित है। छोटे बच्चों में भी झूठ बोलने के संस्कार आ जाते हैं। कुछ बातें ऐसी होती हैं जो बिना सिखाए ही व्यक्ति सीख जाता है। मृषा बोलने वाला व्यक्ति भयभीत रहता है। उसके दिमाग में तनाव रहता है। यदि आदमी एक बात गलत बोलता है तो फिर उसको ढंकने के लिए दूसरा झूठ बोलना पड़ता है। फिर उसको ढंकने के लिए तीसरा झूठ बोलना पड़ता है। इस प्रकार झूठ की परंपरा बढ़ती जाती है। झूठ बोलने वाले व्यक्ति को दिमाग की कितनी कसरत करनी पड़ती है। साफ-साफ बात कहने वाला और सही बात कहने वाला व्यक्ति तनाव से बच सकता है। उसका दिमाग भी भयमुक्त रह सकता है। इसलिए आदमी झूठ बोलने से बचे और सत्य, मधुर व प्रिय भाषा का प्रयोग करें।

उपरोक्त तीनों बातों से दूर रहने वाला व्यक्ति एक अच्छा इंसान बन सकता है। उसका वर्तमान जीवन तो अच्छा बनता ही है, अगली गति भी अच्छी होने की संभावना रहती है। धर्म का एक मजबूत आधार यही है कि आत्मा का त्रैकालिक अस्तित्व है। यदि पूर्वजन्म और पुनर्जन्म का सिद्धांत न हो तो धर्म की मूल्यवत्ता भी कुछ कम हो जाएगी। फिर तो धर्म केवल वर्तमान जीवन के लिए ही रह जाएगा और केवल वर्तमान के लिए इतना कौन ध्यान देगा? इसलिए जो आदमी अपनी अगली गति के बारे में सोचता है, विचार करता है, वह इन कमजोरियों से मुक्त होने की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करे।

बालकों के चहुँमुखी सम्यक् विकास हेतु शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य भी जरूरी है। दोनों ही प्रकार के स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक हैं। सामान्यतः माँ बाप अथवा बालक शारीरिक स्वास्थ्य के विकास पर तो पर्याप्त ध्यान देते हैं परन्तु मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अधिकांश माँ बाप में बालक के लिए रुचि व सोच समझ की कमी ही देखी जाती है। संभवतः वे इसकी आवश्यकता भी नहीं समझते। उनकी यह समझ होती है कि मन मानस का विकास तो स्वतः ही होता है। मानसिक स्वस्थता तो ईश्वरी देन है। परन्तु यह सोच वास्तविक समझ के नितान्त विपरीत है।

मानसिक स्वस्थता की बालक के व्यक्तित्व निर्माण में महती भूमिका होती है व्यक्तित्व निर्माण में मानसिक स्वास्थ्य के समुचित प्रभाव को नकारना बालक के सर्वतोमुखी विकास के लिए विमुख होना है। बालक जब मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तब ही उसकी आदतें, स्वभाव, व्यवहार आदि सर्वप्रिय बन सकेंगे एवं शिक्षा आयोजना भी तभी सुकृत हो सकती है। मानसिक रुग्णता बालक की शिक्षा आयोजन में अवरोधक होती है। प्रखर व विलक्षण बुद्धिवाला बालक भी इस अवरोध के रहते अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं कर सकता। माता-पिता बालक को सभी सहूलियत मुहैया करवाने पर भी बालक के विकास के प्रति वे चिन्तातुर व असंतुष्ट ही देखे जाते हैं। उन्होंने अपने बालक के प्रति जो सपने संजाये हुए थे वे साकार होते प्रतीत नहीं होने की स्थिति में उनका मन क्षुब्ध रहता है।

मानसिक अस्वस्थता का मुख्य कारण घर का दूषित वातावरण होता है टूटे हुए घर अस्वस्थ मानसिकता वाले बालकों के पालना गृह होते हैं। घर का वातावरण मुख्य रूप से बालक का निर्माण करते हैं क्योंकि वे ही बालक के घनिष्ठ सम्पर्क में रहते हैं। अतः बालक का

बालकों का मानसिक स्वास्थ्य

द्वारकेश भारद्वाज

मानसिक विकास पालकों की क्रिया (आधार व्यवहार) तथा बालक की प्रतिक्रिया के संदर्भ में होता है। यह सोचना कि बालक का भावनात्मक व मानसिक विकास अपने आप सहज रूप में होता है गलत है, पालक ही इसके लिए जिम्मेवार हैं।

प्रायः सामान्य प्रतीत होने वाले घरों के बच्चों में मानसिक कुंठायेँ व विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जो आगे चलकर अपराधिकवृत्तियों तक में भी प्रकट हो सकती हैं। अक्सर पालकों को यह पता नहीं चलता है कि उनके आचार व्यवहार का बालक पर कितना महत्वपूर्ण व दूरगामी प्रभाव होता है। हम कुछ ऐसे व्यवहारों का विश्लेषण नीचे की पंक्तियों में प्रस्तुत करते हैं जो बालक के मनमानस में उथलपुथल उत्पन्न कर सकती है।

बालक के अपने सहज व्यक्तित्व व कृतित्व की पालकों द्वारा उपेक्षा एवं नकारात्मक वृत्ति प्रायः मानसिक कठिनाइयाँ उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण घटक ही नहीं नींव के पत्थर का काम करती है। हर बालक माँ-बाप ही नहीं अपने सभी बड़े व हमजोलियों तक से भी स्नेहमय मधुर व आत्मीयता पूर्ण व्यवहार का आकांक्षी रहता है। माता-पिता से वह यह चाह करता है कि वे उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करें, उसकी बात सुनें व उसकी जरूरतों को पूरी करें। परन्तु ऐसा नहीं होता है। मम्मी पापा दोनों ही हों व परिवार एकाकी हो तो बच्चे उपेक्षा का शिकार होते हैं। बच्चों

को अपनी सुनाने व ध्यान आकर्षित करने पर, थके-माँदे आये हैं चबर-चबर कर तंग मत करो, की तुनकमिजाजी से भरपूर झिड़की सुन मन मसोस रह जाना पड़ता है। बच्चे खिन्न हो अंदर ही अंदर कुंठित हो ध्यान आकर्षित करने को उठा पठक यानि अपराधवृत्त की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। मेरे पापा-मम्मी को इतनी फुरसत का वक्त व धैर्य कहाँ जो बालक की बात सुने व उसकी आवश्यकता को पूरी करें, ऐसे तथाकथित पापा मम्मी के बच्चे अपने को उपेक्षित समझन लगते हैं।

बालक की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति न करना संतुलित प्रशंसा न करना एक की प्रशंसा व दूसरे की निन्दा करना पक्षपात पूर्ण तुलना करना, पालन पोषण अहसान जताकर करना, उचित बात को भी सुनी अनसुनी कर देना आदि व्यवहार ऐसे हैं जिनसे अभिभावकों द्वारा बालक की उपेक्षा प्रगट होती है। इस प्रकार के उपेक्षापूर्ण आचार व्यवहार



से बालक के मन पर विपरीत व सत्यानाशी प्रभाव पड़ता है।

उपेक्षापूर्ण व्यवहार से बालक में चिन्ताओं का उद्भव तो होता ही है क्योंकि वह अपने को असुरक्षित समझता है साथ ही उसमें विद्रोह की भावना भी पनप जाती है। परिणाम स्वरूप वह अपने पालकों का बात-बात में विरोध करता है जो समाज विरोधी व असामाजिक संस्कारों को जागृत करता है। वह यह सोचने लगता है कि जब मेरी ही कोई परवाह नहीं करता तो मैं किसी की परवाह क्यों करूँ? वह उपेक्षा का बदला असामाजिक व्यवहारों द्वारा लेता है। घोर उपेक्षा से बालक में भावनात्मक निरपेक्षता का ही उदय होता है। ऐसी दशा में उसे किसी वस्तु व व्यक्ति में अपनापन नहीं दिखाई देता है न उसका घर है, न स्कूल, न समाज न देश। उसमें विध्वंसात्मक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। उसके कोमल भाव नष्ट हो उसमें कड़वाहट आ जाती है। किशोरों व युवाओं में पनप रहे असामाजिक हिंसक व मर्यादाहीन कृत्यों का विश्लेषण उपरोक्त स्थितियों के आधार पर किया जा सकता है।

बालक के प्रति पालकों के मन में उपेक्षा उत्पन्न होने के कारणों पर भी गंभीरता से विचार करना मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण के आधार पर करना जरूरी है। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होना, सौतेली माँ या बाप का होना, अनचाही संतान होना, हम दो व हमारे दो, की भावना के विपरीत अधिक संतान होना। माँ-बाप के एक दूसरे से विमुख छतीस (36) के अंक की स्थिति में रहना कुछ स्नेह व्यक्तिगत देखभाल की कमी अर्थात् माता का मातृत्व कर्तव्य ग्रहण न करना भी बालक की उपेक्षा का कारण होता है। प्रायः सामाजिक राजनैतिक व अन्य महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में तल्लीन रहने वाली मातायें मातृत्व कर्तव्य ग्रहण न करने वाली माताओं की श्रेणी में आती

हैं जो उनकी मजबूरी बन जाती है। ऐसी माताओं के बालकों की देखभाल का भार प्रायः नौकर चाकरों पर डाल दिया जाता है जो अवांछनीय है क्योंकि नौकरों का मानसिक स्तर बहुत निम्न होता है और वे मर्यादाओं में संस्कारित भी नहीं होते। यही कारण है कि सामाजिक राजनैतिक क्षेत्रों में रची बसी महिलाओं के बालक उपेक्षित होते हैं।

उपरोक्त सारी रामकहानी का सार संक्षेप यह है कि घर में पालकों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से बालकों में मानसिक अस्वस्थता पैदा हो जाती है जो विकसित होकर किशोरों व युवाओं में अपराधवृत्ति की जनक सिद्ध होती है। लेकिन उपेक्षावृत्ति से उत्पन्न मानसिक अस्वस्थता का निवारण भी कोई कठिन कार्य नहीं है। आवश्यकता केवल माता-पिता को अपनी सोच समझ बालोचित बना एवं बालक के मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को जान बालक की भावनात्मक व क्रियात्मक पर समुचित व विवेकपूर्ण ध्यान देने की है। माँ बाप 'मेरा भगवान बालकों में है' की वैचारिकी से विभूषित हों क्योंकि बालक राष्ट्र की अमूल्य धरोहर व परिवार का दीपक जो है। यदि माता-पिता अभिभावक शिक्षक आत्मविश्लेषण करके अपने व्यवहार को बालक के प्रति मधुर स्नेहासिक्त एवं सहकारी बनाने में सफल हो जायें तो वे अपना, अपने उनके तथाकथित जिगर के टुकड़ों (संतानों) व समाज का बहुत बड़ा हित कर सकते हैं। घर में हँसी खुशी व सहकारी वातावरण बालकों की स्वस्थ मानसिकता का निर्माण करने में अवश्य सफल होगा यह उक्ति एक मनोवैज्ञानिक तथ्य पर आधारित है। स्वस्थ मानसिकता वाले बच्चे माँ-बाप के गर्व की गवाही देते हैं।

बी-68, ज्ञानद्वार हवेली,
अर्जुनलाल सेठीनगर,
जयपुर - 302004

सन्नाटा

उस दिन स्थानीय कॉलेज में इंटर की परीक्षा हो रही थी, तभी एक औरत कुर्ती और सलवार में परीक्षा हॉल में पहुँची। उस समय वहाँ एक दम 'पिन ड्रॉप साइलेन्स' था, जहाँ उस हॉल की सारी लड़कियाँ, अपने-अपने प्रश्न का जवाब दे रही थीं। वह औरत एक लड़की के पास जाकर बोली- ऐ मुझे आठ और नवें प्रश्न के जवाब नहीं मिल रहे हैं, सो तुम जल्दी से दो, नहीं तो मैं फेल हो जाऊँगी। यह सुनकर उस मेधावी छात्र ने, उसे हटाते हुए कहा, चलो-चलो यहाँ से, मेरे पास किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं है। यह देखकर उसने उसकी पीठ थपथपाई फिर भी इस केन्द्र में चोरी हो रही है या नहीं उसे देखने के लिए, वह पुनः उससे घिट (प्रश्न का जवाब) माँगने के लिए पास खड़ी रही और उसे तंग करती रही। यह देखकर वह छात्रा उसे फटकारते हुए बोली, भागो यहाँ से, नहीं तो कलक्टर मणीकाजी यहाँ आ जाएगी तो, हम दोनों की यह परीक्षा रद्द कर देगी। 'क्या तुम मणीकाजी को पहचानती हो?'

'नहीं, मैंने उनका सिर्फ नाम सुना है। इसके साथ यह भी सुना है कि वह अपने प्रशासन में बहुत कठोर हैं।' 'हूँ, तुमने उसे देखा नहीं है?' 'नहीं!'

'तो वह कलक्टर मणीका मैं ही हूँ! यह सुनकर वह छात्रा अवाक् होकर उसे देखने लगी। कारण उसने उसे डॉट-फटकार कर, वहाँ से भगाने का प्रयास किया था। यह सोचकर, वह सन्नाटे में पड़ गयी थी, न जाने वह अब उसके साथ कैसा सलूक करती है?'

डॉ. सुरज मृदुल
गुरुद्वारा के सामने, रमना
मुजफ्फरपुर (बिहार)

मत करो बचपन पर निर्ममता

डॉ. मदन डांगी

आधुनिक युग के राम एवं रमा लम्बे प्रेम प्रसंग के चलते, दोनों उच्च शिक्षा प्राप्त, ऊँची सेवा पर आरूढ़, महत्वाकांक्षी पहले लिव इन रिलेशनशिप में साथ, गर्भ निरोधक की चूक से विवाहित जीवन जीने को मजबूर लगभग पैंतीस चालीस वय को पार कर साथ रहने लगे। यद्यपि इस वय में भी वंशवृद्धि के लिए आतुर नहीं थे, जो गर्भस्थ शिशु था उससे निजात भी नहीं पाना चाहते थे। आने वाले शिशु की कई कल्पनाएं सँजोने लगे। यदि गर्भस्थ शिशु लड़की हुई तो उसे सौन्दर्य प्रतियोगिता से विश्व सुन्दरी, नृत्यांगना, अभिनेत्री, अन्तरिक्ष यात्री, राजनेता बनाने की बात मन में आई। यदि गर्भस्थ शिशु लड़का हुआ तो उसे आई.आई.टी. से प्रशिक्षित इंजीनियर, एम्स से डॉक्टर, आई.एम से प्रबन्ध विशेषज्ञ या फिर राजनेता बनाने की बात या जैसा क्रिकेट का महान खिलाड़ी बना सारे-रेकार्ड तोड़ने की क्षमता वाले बालक की कल्पना उभरी।

रमा की बढ़ती उम्र में गर्भ धारण एवं विकास कष्टप्रद था। पूरे गर्भकाल में वह चिकित्सक की देखभाल में रही, समय समय पर सभी जाँच, उचित उपचार लेती रही, प्रसव सामान्य न होकर ठीक समय में शल्य चिकित्सा से हुआ एवं स्वस्थ सुन्दर बच्चे को जन्म देकर राम रमा दम्पती अपने को धन्य महसूस कर रहे थे। शिशु का चौड़ा ललाट, सुन्दर मुखाकृति, लम्बी अंगुलियाँ देखते ही बनती थीं, परिवार में और कोई नहीं, उन्होंने अपने स्तर पर ही खुशियाँ बटोरी, प्रसूता एवं नवजात शिशु की देखभाल को एक आया की व्यवस्था की गई।



अस्पताल से छुट्टी पाकर अपने घर पर व्यवस्थित हुए। एक नए युग का प्रारम्भ इस दम्पती के लिए इस बालक के आगमन से हुआ।

एक महीने की समाप्ति पर बालक को व्योम नाम से संबोधित किया। जितना आकाश ऊँचा है, यह बालक उतनी ही जीवन की ऊँचाइयाँ हासिल करेगा, ऐसी मन में कल्पना थी। बालक को देख कर उन्हें वे सब बुलंदियाँ छूनी है, जो हम नहीं छू सके।

बालक की मानसिकता से उन्हें ऐसा लगा जैसे वह सब सुन रहा है और स्वीकृति दे रहा है। माँ-बाप दोनों आह्लादित थे। पहला बच्चा, माँ-बाप दोनों बच्चे के विकासक्रम से अनभिज्ञ थे कि बच्चा किस उम्र में करवट लेता है, कब बैठता है, कब घुटने चलता है, कब खड़ा होकर दौड़ता है, कब बोलता है? घर में कोई बड़ा-बुजुर्ग नहीं था जो उन्हें इसकी जानकारी देता। वे उसके विकास के लिए अति उत्सुक थे, पर सबका समय निर्धारित है कभी-कभी उसमें विलम्ब भी हो सकता है।

माँ के स्तन पर पोषित बालक का विकास सामान्य था। माँ-बाप की कल्पना को मूर्त रूप देने की जल्दी थी। उसकी वाणी सुनने को आतुर, यदि वह मधुर है तो इण्डियन ऑयडल से संगीतज्ञ बनाना, चाल-ढाल से नृत्य का प्रशिक्षण, लम्बी अंगुलियों से चित्रकारी या शल्य चिकित्सा की शिक्षा या फिर वाद्य वादक, लम्बी कद काठी हो तो फिर फौजी बनने की बात मन में आने लगी। वे सब बातें अभी गर्भ में ही छिपी थी। मनुष्य जब पैदा होता है निमित्त हो जाता है। कठिन श्रम एवं प्रयास उसके सेतु बन जाते हैं। बालक तीन वर्ष का हो गया। माँ-बाप ने उसके पैदा होते ही जीवन बीमा की पॉलिसी एवं भविष्य निर्माण हेतु बैंक से पच्चीस लाख का ऋण भी ले लिया और आश्वस्त हो चले कि इस बालक को आशानुरूप कुछ बना सकेंगे।

गहन चिन्तन के बाद आई.आई.टी. इंजीनियर बनाने की बात को अन्तिम रूप दिया। आजकल कैरियर सम्बन्धी जो केन्द्र चलाये जा रहे हैं, उनमें टोटल स्कूल महानगरों में प्रारम्भ से आई.आई.टी. कोचिंग देने की घोषणा करते हैं, कुल मिलाकर उन बालकों को 12-15 वर्ष तक कोचिंग दी जाने की व्यवस्था है। व्योम का भी चार वर्ष की उम्र में उस केन्द्र में दाखिला दिला दिया गया वह अबोध बालक अपने माँ-बाप को छोड़कर उस स्कूल एवं हॉस्टल में रहने को बाध्य हो गया। यह उम्र हँसने, खेलने, लड़ने, झगड़ने, माँ की लोरिया सुनने, मनुष्य बनने की तहजीब सीखने की थी पर।

बाल्यकाल के सभी गुण, दोषों से वंचित व्योम घर छोड़कर विद्यालय एवं छात्रावास में रहकर तनाव-ग्रस्त मानसिक विकास का बोझ झेल रहा था। छात्रावास में जीवन की भौतिक विकास की सारी सुख-सुविधाएं मिल रही थीं पर माँ-बाप का वात्सल्य एवं अपने परायों के स्नेह से वंचित रहना खल रहा था। पढ़ाई एवं

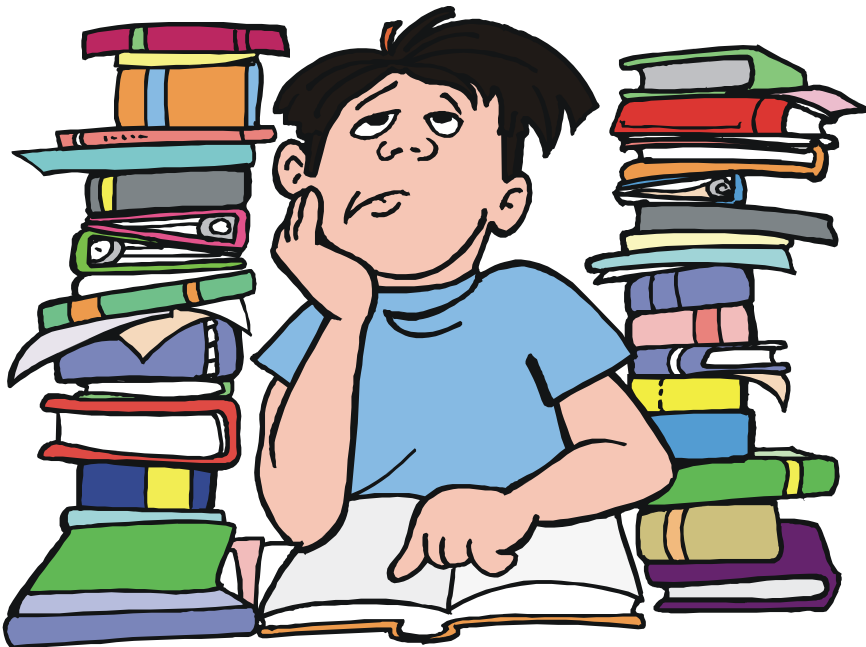
बस्ते का बोझ ढोते-ढोते उसकी कमर झुकने लग गई थी। खेल-कूद की अभिरुचि समाप्तप्राय हो चली। इस वय के बालक छिपा-छिपी, गुल्ली डण्डे, सितोलिया, रेत के आवास बना आह्लादित एवं उत्साहित रहते, एक-दूसरे बच्चों से झगड़ा एवं फिर पुनः एक होकर मस्ती से झूमते, इससे व्योम वंचित कर दिया गया। कठिन श्रम एवं पढ़ाई के बोझ से उसका शारीरिक विकास अवरुद्ध रहा एवं दृष्टि दोष पैदा होने से मोटा चश्मा लग गया। शारीरिक श्रम के अभाव में वह कुछ मोटा भी हो गया था। कक्षा के दूसरे साथी उसे मोटू कह कर चिढ़ाते। किसी तरह 15 वर्ष की आयु में प्रथम बार दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, यद्यपि प्रतिशत प्राप्तांक कम थे। उच्च माध्यमिक कक्षाओं में गणित के साथ विज्ञान विषयों का चयन साथ ही आई.आई.टी. की कोचिंग चलती रही। प्रशिक्षण का अत्यधिक भार, खान-पान की अरुचि एवं अनिद्रा का शिकार हो वह अत्यधिक तनाव एवं रुग्णता का शिकार हो गया। अपनी व्यथा वह किससे कहे, माँ-बाप का सपना पूरा करने को बाध्य था।

बाहरवीं बोर्ड की परीक्षा सत्तर प्रतिशत से पास की। आई.आई.टी. ट्रिपल आई.आई.टी., जी.ई.ई., प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सका। पी.ई.टी. निम्न श्रेणी के साथ पास की। शासकीय अभियांत्रिक शिक्षण संस्थानों में ऊँची फीस देकर प्रवेश लेना उसके आत्म सम्मान को ठेस पहुँचाने जैसा था, वह टूटा और ऐसा टूटा कि उसे अपने सारे मनसूबे धूमिल होते प्रतीत हुए। वह छोटी-सी वय में ही नशे का आदी हो गया। माँ-बाप का सामना करने का साहस शेष नहीं था, एक दिन रात को नींद की बेशुमार गोलियाँ लेकर चिर निद्रा में सो गया। जीवन के अन्तिम क्षणों में लिखा गया उसका पत्र इस प्रकार है

मेरे प्रिय राम पापा एवं रमा मम्मी, मुझे अत्यधिक दुःख है, जिस आकांक्षा एवं अपेक्षा से मुझे जन्म दिया, मेरा नाम व्योम रखा, मकसद था, व्योम की ऊँचाइयाँ छुऊँ और आपका नाम रोशन करूँ। तीन वर्ष की अल्पायु तक मैं आप लोगों के पास रहा, आप दोनों सेवारत थे, मेरी देखभाल एक आया के पास थी। वह मेरा लालन-पालन कैसे

करती, आपने कभी ध्यान नहीं दिया, घर में न दादा-दादी, न नाना-नानी न कोई भाई- बहिन। आस-पास जहाँ हम रहते थे वहाँ कोई पड़ोसी भी नहीं। भौतिक सुविधाओं की कोई कमी नहीं, पर आपका वात्सल्य, लोरी सुनकर गोद में सोने की चाहत, नाना-नानी, दादा-दादी की परियों की कहानी सुनने का अभाव, घर में छोटे भाई-बहिनों की कमी एवं आसपास के बच्चों से लड़ने-झगड़ने की चाहत कभी पूरी नहीं हुई। चार वर्ष की अल्पायु में आपने मुझे अपने सपने पूरे करने हेतु आवासीय विद्यालय में प्रवेश दिला दिया। आप कभी-कभी मुझे सँभालने आये एवं ढेर सारे तोहफे देकर गुम हो जाते। मैं आपके साथ रहने को छटपटाता, पर सब व्यर्थ। छुट्टियों में भी आप दोनों अत्यधिक व्यस्त रहते, मुझे यह बहुत खलता। मैं सामान्य नहीं रहता एवं आपके प्रति स्नेह एवं समर्पण के भाव, मुझमें नहीं पनप सके। छात्रावास एवं स्कूल में जो आज के बालकों को यातनाएं सहनी पड़ती हैं, अकल्पनीय हैं। मैंने उन्हें नियति समझ कभी उल्लेख नहीं किया। परीक्षा हमेशा होती रही, सफल भी होता रहा। मेरी चाह या लक्ष्य कभी इंजीनियर बनने की नहीं थी। पर महत्त्वाकांक्षा का बोझ मुझे ढोना पड़ा, कठिन परिश्रम से भी जब यह ध्येय पूरा नहीं हो सका, मैं टूट गया। मुझे कोई भी सम्बल देने वाला नहीं था, इस कारण मैंने स्वेच्छा से देह त्यागने का निर्णय लिया। आप मुझे क्षमा करेंगे। अब तक मेरी शिक्षा का जो खर्च किया है वह कर्ज के रूप में बाकी था, जो मुझे चुकाना था। वह कर्ज मैं आप पर ही छोड़ कर जा रहा हूँ, उसका दुःख है। मेरी यह गाथा दूसरों को नई दिशा देगी। माँ-बाप अपने मनसूबे अपनी औलाद से पूरा करने का घृणित कार्य नहीं करें यही आखिरी इच्छा है।

आपका अपना
व्योम



बालमन

आयु बढ़ने के साथ-साथ बच्चे के मानसिक, शारीरिक आकार व ढाँचे में भी परिवर्तन आने लगते हैं। विकसित मनोमस्तिष्क का स्वामी छोटा बच्चा पग-पग पर अपने माता-पिता व अभिभावकों से प्रश्न पूछने लगता है। हर नयी वस्तु व घटना उसके जीवन में एक नवीन अनुभव व कौतूहल होता है। बच्चा यह जानने का इच्छुक होता है कि आखिरकार यह क्या है? यह ऐसा क्यों है? ये ऐसे क्यों होता है? ये कैसे चलता है, कैसे घूमता है, कैसे दौड़ता है आदि अनेकानेक प्रश्न नन्हें से बच्चे के मस्तिष्क रूपी पिटारे में भरे होते हैं। ऐसी स्थिति में माता-पिता व अभिभावकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है क्योंकि बच्चे के इन सीधे-सादे प्रश्नों का उत्तर उन्हें ही देना होता है।

बच्चे के प्रश्न सरल व मासूमियत भरे होते हैं जिनका शायद हमारी अवस्था के हिसाब से कोई महत्व नहीं होता है। लेकिन बच्चे के लिए वो बहुत बड़े ज्ञान का प्रश्न होता है। ऐसा भी नहीं है कि बच्चे के सवाल हमेशा अटपटे व बचकाने ही होते हैं। आखिरकार कितने माता-पिता व अभिभावक इतने सक्षम हैं जो एक छोटे से बच्चे को यह बता पाने में सक्षम हैं कि आसमान का रंग नीला कैसे होता है।



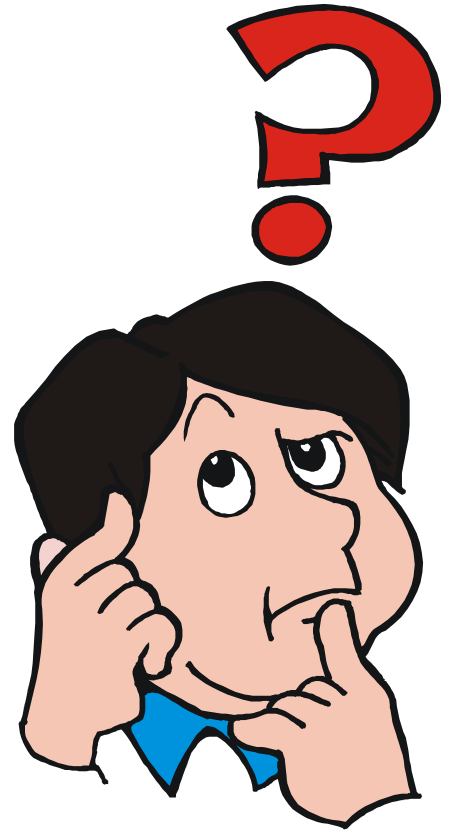
जब बच्चा सवाल पूछने लगे

आशीष वशिष्ठ

बादल कहाँ से आते हैं। आसमान से वर्षा कैसे होती है। दूध का रंग श्वेत क्यों होता है। कौन फूलों में रंग भरता है। पंखा कैसे चलता है। बिजली क्या होती है। बिजली दिखाई क्यों नहीं देती आदि इतने मासूम सवाल हैं जो शायद किसी भी पढ़े-लिखे का सिर एक बार घुमा सकते हैं।

अधिकतर मामलों में जब बच्चा माता-पिता व अभिभावकों से ऐसे प्रश्न पूछने लगता है तो हम उसका ध्यान बँटाने की कोशिश करते हैं या उलटा- सीधा उत्तर देकर उसकी बाल सुलभ जिज्ञासा का शमन करने का प्रयास करते हैं। लेकिन सही मायनों में हम बच्चे को आधा-अधूरा उत्तर या अधकचरी जानकारी देकर दिग्भ्रमित तो करते ही हैं वहीं उसे सही उत्तर न देकर उसके प्रश्न पूछने की जिज्ञासा व उत्कंठा को भी निरुत्साहित करते हैं।

माता-पिता व अभिभावकों की अवस्था व बच्चे की अवस्था में बड़ा अन्तर होता है। हम जिन विषयों व प्रश्नों को समय के साथ हल कर चुके होते हैं उन्हें हम विस्मृत कर देते हैं या याद रखने की जरूरत महसूस नहीं करते हैं। क्योंकि हमें कोई परीक्षा तो देनी नहीं होती कि हम हिन्दी के स्वर- व्यंजन याद रखें। एक छोटा बच्चा क ख ग का सस्वर पाठ कर सकता है वहीं मम्मी-पापा पुस्तक देखकर ही क ख ग सुना पाते हैं। अन्तर केवल



अभ्यास एवं अवस्था का ही है। बच्चा स्वाभाविक तौर पर घर के वातावरण व आस-पास घटने वाली घटनाओं से ही अधिक सीखता है।

समय के साथ जब बच्चा विद्यालय जाने लगता है तो वहाँ उसका दायरा बढ़ता है। विभिन्न पृष्ठभूमि वाले बालक-बालिकाओं से उसका संपर्क स्थापित होता है। विभिन्न धर्म-जाति, बोली-भाषा, खान-पान के अनेक बच्चों को देखकर उसे प्रसन्नता तो प्राप्त होती ही है वहीं जिज्ञासाएं भी मन-मस्तिष्क में उमड़ने-धुमड़ने लगती हैं। दिनभर की गतिविधियों को देखने- समझने व सुनने के उपरांत जब बच्चा अनुत्तरित प्रश्नों व जिज्ञासाओं के शमन हेतु माता-पिता व अभिभावकों की शरण में जाता है तो हमारी भूमिका बढ़ जाती है। बच्चे डर, संकोच व लज्जा के मारे किसी बाहरी से प्रश्न नहीं पूछते हैं क्योंकि उन्हें अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होती है। बच्चे की सारी दुनिया माता-पिता व अभिभावक में ही समायी होती है। इसीलिये बच्चा जब भी कोई प्रश्न पूछे तो उसे सहज भाव से ग्रहण

करना चाहिए और अपने ज्ञान के अनुसार उसे उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए। अगर किसी प्रश्न का उत्तर आपको मालूम न हो तो बेता बाद में बताऊंगा कहकर उसके किसी अन्य प्रश्न का उत्तर दें। कभी भी भूलकर या ज्ञान दिखाने हेतु बच्चे को गलत उत्तर न दें क्योंकि जो छाप आप उस पर डालेंगे उसका असर बच्चे के व्यक्तित्व पर ताउम्र रहता है।

बच्चे की जिज्ञासा शांत करने के लिए आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की सहायता भी ले सकते हैं। आजकल

बाजार में विभिन्न विषयों हेतु सैकड़ों पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें बड़े रोचक तरीके से बच्चे की छोटी-छोटी जिज्ञासाओं व प्रश्नों का उत्तर दिया होता है। ऐसे में आप बिना वक्त गवाएं इन पुस्तकों को क्रय कर लें। अगर बच्चा थोड़ा बड़ा हो तो उसके लिए आप मासिक पत्र-पत्रिकाएं भी लगवा सकते हैं। इससे बच्चे को नयी व रोचक जानकारी उपलब्ध होगी और उसकी सैकड़ों जिज्ञासाएँ भी शांत हो जाएँगी व नये-नये विषयों की जानकारी भी प्राप्त होती रहेगी।

सार यह है कि बच्चे का प्रश्न पूछना तो एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। ऐसे में बच्चे के प्रश्न को सहज भाव से ही लेना चाहिए। बच्चे को प्रेमपूर्वक शिष्ट भाषा में उत्तर देना चाहिए। बच्चे के प्रश्नों के माध्यम से आप उसकी रुचियों व लगाव को भी समझ सकते हैं कि उसकी किस क्षेत्र में अधिक रुचि है और ये जानकारी बच्चे का कैरियर तय करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

बी-2519, इंदिरा नगर
लखनऊ - 226016 (उ.प्र.)

बच्चों से छीन ली बंदूक, दिया प्रेम का सबक

प्रमोद भटनागर, राजसमंद

कर्णावट साहब यह बच्चा तो मेरे लिए मर गया। आठवीं कक्षा में पढ़ रहे अपने बेटे की शैतानियों से परेशान पालक ने यह कहा तो डॉ. महेन्द्र कर्णावट चौंक गए। वे राजस्थान के राजसमंद स्थित बाल निकेतन के मंत्री हैं। गांधी सेवा सदन इस स्कूल को चलाता है। डॉ. कर्णावट उस बच्चे को महाशैतान कहते हैं। हर वक्त तोड़फोड़ में लगे रहने वाले इस बच्चे से राज्य के खुफिया विभाग में काम करने वाले उसके पिता बहुत परेशान थे।

बच्चों में हिंसा की प्रवृत्ति खत्म करने के लिए अपने स्कूल में अनूठा प्रयोग कर रहे डॉ. कर्णावट ने बच्चे के पिता को दिलासा दी कि वे उसे बदलकर दिखाएंगे। उन्होंने उस बच्चे पर कोई रोक-टोक नहीं लगाई। यदि वह खिड़की के शीशे फोड़ देता तो वे कहते, 'सोचो इससे मुझे क्या मिला? इस तरह उन्होंने बच्चे में सोच-विचार को बढ़ावा दिया। आज उसकी शैतानियां आधी रह गई हैं। पढ़ने-लिखने में भी सुधार आया है।

लेकिन, यह तो बाद की बात है। इससे



कुछ साल पहले महात्मा गांधी और आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा दर्शन से प्रभावित होकर उन्होंने इसे अपने स्कूल में व्यावहारिक रूप देने का निश्चय किया था। उन्होंने केजी तथा पहली-दूसरी कक्षा के बच्चों तक में लड़ने-झगड़ने की प्रवृत्ति पाई। उन्हें लगा कि इसका रिश्ता खिलौने वाले पिस्तौल, राइफल, टैंक, बम से है। उन्होंने ये खिलौने हटाकर उनकी जगह एम्बुलेंस, ट्रेन, ब्लॉक से घर बनाने और पर्यावरण से जुड़े पशु-पक्षी, पेड़ जैसे खिलौने दिए। जल्दी ही बच्चों में लड़ने की प्रवृत्ति कम हुई और प्रेम की भावना का विकास होने लगा। उनमें तोड़ने- फोड़ने के बजाय निर्माण की भावना जागी। अब यदि कोई बच्चा पेंसिल लाना भूल जाता तो अन्य बच्चे उसे अपनी पेंसिल देते। बच्चों में सीखने की क्षमता भी बढ़ी है। डॉ. कर्णावट बच्चों को माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी

से कहानी सुनने, उनकी गोद में सोने और उनके साथ भोजन करने के लिए भी प्रेरित करते हैं। पालक आकर बताते हैं कि इससे वे बच्चों के निकट आए हैं।

एक प्रयोग उन्होंने बड़ी कक्षाओं के बच्चों पर भी किया। बोर्ड की परीक्षाएँ देने के लिए ये बच्चे दूसरे स्कूलों में जाते तो शिकायत करते कि वहाँ तो अन्य बच्चे नकल करते हैं। डॉ. कर्णावट ने खतरा भाँपा कि कल ये बच्चे भी नकल करने लगेंगे। उन्होंने परीक्षा के दो घंटे पहले प्रश्न-पत्र हल करने के लिए दिए और कहा कि वे न आने वाले प्रश्न छॉटे और किताब से देखकर उन्हें हल करके लाएँ। इससे उनके रिजल्ट में 99 फीसदी तक सुधार देखा गया।

5 सितंबर 2010 : दैनिक भास्कर से साभार
(शिक्षक दिवस पर दैनिक भास्कर के
सभी संस्करणों में प्रकाशित)

अच्छे संस्कार कैसे डालें

डॉ. विभा सिंह

कमला दीदी के बच्चे जब कभी हमारे घर आते हैं तो आते ही तूफान मचा देते हैं। इसे उठा, उसे पटक, इसे तोड़, उसे फेंक। बैठक में रखे सुन्दर महँगे शो पीस एक घण्टे में ही दो कौड़ी के हो जाते हैं।

एक अन्य अवसर पर मैंने नाश्ते की प्लेटें अभी टेबल पर रखी ही थीं कि कमला दीदी के बच्चे प्लेटों पर ऐसे टूट पड़े, जैसे कभी कुछ देखा ही न हो। मैं अन्दर से चाय लेकर आई तो देखा प्लेटें साफ। मुझे क्रोध आया पर मन ही मन नियंत्रण करते हुए मैंने कहा, 'कमला तुम इन्हें मना क्यों नहीं करती, आखिर खाने का भी कोई सलीका होता है। बच्चों को तौर-तरीके तुम नहीं सिखाओगी तो वे कैसे समझेंगे...। तुम तो कहती हो कि ये अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं। क्या इनके अंग्रेजी स्कूल में यही पढ़ाया जाता है।'

सीमा अभी आ कर बैठी ही थी कि उसकी बेटी टी.वी. पर रखे फूलों के गुलदस्ते के लिए मचलने लगी, जिद्द करने लगी। मैं कुछ कहती इससे पहले ही सीमा ने फूलों का वह गुलदस्ता उठाकर दे दिया। बच्ची तो चुप हो गई, लेकिन थोड़ी ही देर में उसने फूलों की जो गत बना दी, उसे देख कर मेरा दिल जरूर रो उठा। लेकिन मैं क्या कहती?

ये ऐसे उदाहरण हैं, जो हम दैनिक जीवन में अपने सामाजिक और पारिवारिक जीवन में नित्य प्रति देखते-सुनते हैं। वास्तव में बच्चों में अनुशासनहीनता इसलिए बढ़ रही है क्योंकि प्रारंभ में बच्चों के व्यवहारों पर उनके अभिभावक ध्यान नहीं देते और व्यावहारिक शिष्टाचार के अभाव में बच्चे ऐसा व्यवहार करते हैं कि उनके कार्यों के कारण ही अभिभावकों को



कई बार नीचा देखना पड़ता है।

बच्चों को प्रारम्भ से ही उनकी आयु और क्षमता के अनुसार सामान्य शिष्टाचार की बातें बतानी, समझानी चाहिए ताकि ये बातें उनके आकर्षक व्यक्तित्व का अंग बन सकें। घर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का बच्चे सादर अभिवादन हाथ जोड़कर करें। यदि आने वाला परिवार का सम्मानित स्वजन है तो बच्चे उसका चरण स्पर्श करें। इस प्रकार के आचरण से बच्चों में आत्मीयता, नम्रता और सामुदायिक भावना विकसित होगी। उनका परिचय क्षेत्र बढ़ेगा। वे सम्बन्धों की निकटता, प्रगाढ़ता को समझेंगे और उनमें शिष्टता के साथ-साथ कर्तव्य पालन की भावना भी आएगी। बच्चे अपनी बातचीत में भी दूसरों के प्रति सम्मान प्रकट करें, इस बात का भी ध्यान रखें। बच्चे किसी भी बात का उत्तर देते समय "जी हां"....."जी नहीं"....। "अच्छा जी..." "आप..." "धन्यवाद" जैसे शब्दों का प्रयोग करें। घर आए

व्यक्ति को बैठने के लिए अनुरोध करें, यदि घर में अन्य कोई न हो अथवा बच्चे किशोरावस्था में हैं तो आने वाले व्यक्ति के आने का प्रयोजन भी जानें और तदनुसार कार्य भी करें। "आपको किससे मिलना है? आपका परिचय" जैसे शब्द बच्चों के मुख से सुनकर भला कौन प्रसन्न नहीं होगा? बच्चों में बातचीत और व्यवहार की यह शिष्टता और शालीनता देखकर सभी प्रसन्न होंगे।

बच्चे चाहे आपके साथ हों अथवा अकेले, उन्हें ऐसी आदतें डालें कि वे हमेशा अच्छा सोचें-विचारें, अच्छा खाएँ। अच्छा बोलें, अच्छा पहने। उद्देश्य यह है कि उनके आचरण और व्यवहार में सुघड़ता दिखाई दे। बच्चे न केवल अपने हाथ-पैर, मुँह, बाल, कपड़े, जूते, मोजे आदि साफ रखें बल्कि अपनी अलमारी, अपना बिस्तर, अपना बस्ता, किताबें, कापियाँ आदि भी साफ रखें। अपनी दैनिक उपयोग की वस्तुएँ करीने से संभालकर स्वयं रखें

ताकि जब भी आवश्यकता हो वे स्वयं उन्हें उठा कर उपयोग कर सकें। बच्चों को प्रारम्भ से ही स्वयं तैयार होने की आदत डलवाएं ताकि आप ऐसे समय में बच्चों का नाश्ता, खाना आदि तैयार कर सकें। इससे न केवल आपका काम कम होगा बल्कि अनावश्यक दौड़- धूप भी कम होगी और आप तथा आपके पति समय पर अपने काम पर जा सकेंगे।

सलीके से खाएं, सलीके से खिलाएं। अपनी थाली अथवा प्लेट में उतना ही लें जितना कि आवश्यक हो। जूठा छोड़ना, खाते समय फैलाना, थाली में ही हाथ धोना, कमीज की बाँह से मुँह पोंछना, परदों से हाथ पोंछना, बड़ों की बातें सुनना और सुनकर उन्हें इधर-उधर कहना आदि उचित आचरण नहीं। यदि आप किसी के घर जा रही हैं और बैठक में गलीचा अथवा कालीन बिछा हुआ है तो उस पर जूते पहन कर न स्वयं बैठें न बच्चों को बैठने दें। खाने अथवा नाश्ते की वस्तुएँ 'हिसाब से' बच्चों को स्वयं परोस कर दें ताकि वस्तु सबको बराबर मिल सके। यदि वस्तुएँ छिलकेदार है तो छिलकों को सँभाल कर या तो खाली प्लेट में रखें अथवा उठकर आप बाहर जाएँ और ऐसे स्थान पर फेंकें जहाँ छिलके फेंकना उचित हो। कमरे में रखे शो पीस न छुएँ न उठाएँ। फूल पत्ते अथवा फल न तोड़ें न ही पत्रिकाओं के पन्ने अथवा चित्र फाड़ें।

विद्यालय हो अथवा घर, पार्क हो अथवा खेल का मैदान, सब स्थानों के निर्धारित नियम होते हैं, बच्चों में ऐसे संस्कार डालें कि वे इन नियमों का पालन करें। ये नियम कहीं पर लिखे नहीं होते, बस यह तो अपने आप बच्चे सीखते हैं उनका पालन करते हैं, यद्यपि इनमें से बहुत-सी बातें देखने सुनने में बड़ी सामान्य और छोटी लगती हैं लेकिन वास्तव में वे इतना प्रभाव डालती हैं कि कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अतः प्रारम्भ से ही बच्चों में ऐसे संस्कार डालें

कि वे न केवल दूसरों को अच्छे लगे बल्कि स्वयं की सफलता के लिए भी आधार बनाएँ। इस प्रकार का व्यवहार पाकर दूसरे आपके बच्चों की प्रशंसा ही करेंगे और इस प्रकार की प्रशंसा बच्चों को कार्यों के लिए प्रोत्साहित करेगी। वास्तव में इस प्रकार की प्रशंसा के वास्तविक अधिकारी तो आप ही हैं, क्योंकि बच्चों को इस योग्य आपने बनाया है।

बच्चों के व्यक्तिगत विकास में ली गई यह रुचि ही बच्चों को प्रगतिशील समाज के योग्य बनाएगी। बच्चों में पड़े ये संस्कार ही उन्हें पारिवारिक अपेक्षाओं के अनुकूल बनाते हैं, इसलिए यदि आप चाहती हैं कि बच्चे आपकी अपेक्षाओं को पूरा करें तो उन्हें शिष्ट बनाएं। शिष्टताजन्य व्यवहार उन्हें कदम-कदम पर नई सफलताएं प्रदान करेगा, लेकिन यह तभी संभव है जब आप अभी से उन्हें इसके लिए पुष्ट आधार प्रदान करें। स्वयं को आदर्श रूप से प्रस्तुत करें, क्योंकि बच्चे उसी राह पर चलते हैं, जिस पर अभिभावक उन्हें चलाते हैं।

**'विभावरी' जी-9, सूर्यपुरम्,
नन्दनपुरा, झॉसी-284003 (उ.प्र.)**



योगदान

एक बार एक जंगल में भयंकर आग लग गई। सभी आग बुझाने में जुट गए। वहीं जंगल में एक नन्हीं गोरैया भी रहती थी। सबको आग बुझाने में जुटे देख नन्हीं गोरैया से भी नहीं रहा गया। वह भी अपनी नन्हीं चोंच में पानी भर-भरकर आग पर डालने लगी। एक कौआ जो दूर एक पेड़ की डाल पर बैठा यह तमाशा देख रहा था गोरैया के पास आया और बोला, “क्या तुम समझती हो कि तुम्हारी नन्हीं चोंच का बूँद भर पानी इस भयंकर आग को बुझाने में कोई सहायता कर सकेगा?” गोरैया ने चोंच का पानी आग पर डालते हुए जवाब दिया, “ये तो मैं नहीं जानती पर एक बात ज़रूर जानती हूँ कि जब भी आग के बारे में बातें होंगी मेरा नाम आग लगाने वालों अथवा तमाशा देखने वालों में नहीं बल्कि आग बुझाने वालों में लिया जाएगा।”

**प्रेम नारायण गुप्ता
ए.डी.-26-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034**



अमर प्रेरणापुंज पं. जवाहरलाल नेहरू

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा

घटना अंकलेश्वर की है। उन दिनों वहां तेल की खोज के लिए कुएं खोदे गये थे। एक कुएं में से जब तेल की धारा फूट पड़ी तो सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। तेल की यह धारा हमारे देश के उज्ज्वल भविष्य की प्रतीक थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू भी तेल के उस कुएं को देखने के लिए अंकलेश्वर पहुंचे। इस तेल के कुछ धब्बे नेहरूजी की अचकन पर भी पड़ गये। अधिकारियों को चिंता हुई। उन्होंने सलाह दी कि अचकन बदल ली जाए, मगर नेहरूजी ने उसकी कोई आवश्यकता नहीं समझी। इसके विपरीत उन्होंने बड़े गर्व से कहा मैं तो तेल के धब्बों वाली यही अचकन पहनकर संसद में जाऊंगा और वहां पर बताऊंगा कि ये धब्बे हमारे अपने देश में निकले तेल के हैं।

ऐसे थे हमारे स्वतंत्र राष्ट्र के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, जिनमें राष्ट्रीयता और देश के प्रति अटूट निष्ठा कूट-कूट कर भरी हुई थी। राष्ट्र के साथ ही उनमें अपने राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज के प्रति भी अपार श्रद्धा थी। किसी भी परिस्थिति में वे अपने राष्ट्र के इन प्रतीकों का अपमान सहन नहीं कर सकते थे। एक बार उन्हें किसी छोटे कस्बे में राष्ट्रध्वज लहराना था। बेहद कड़ी धूप थी। संयोगवश

ध्वज की धिरी में कुछ खराबी हो गयी। उसे ठीक करने में कुछ वक्त लगा। लोगों ने सलाह दी कि जब तक धिरी ठीक हो, वे एक ओर छाया में बैठकर आराम कर लें, मगर नेहरूजी नहीं माने। वे वहीं पर तब तक खड़े रहे, जब तक धिरी ठीक नहीं हो गयी। इसके बाद उन्होंने ध्वजारोहण करके उसे सलामी दी और उसके बाद ही बैठे।

नेहरूजी में मानवता कूट-कूट कर भरी हुई थी। अपने देश के नागरिकों का चारित्रिक पतन देखकर उन्हें सख्त अफसोस होता था। अनुचित और अमानवीय घटनाओं को देखकर या सुनकर उनकी आंखों में क्रोध की लालिमा छा जाती थी और पीड़ित लोगों को देखकर उनकी आंखें भर आती थी। 1946-47 के साम्प्रदायिक दंगों ने उनकी आंखों को अक्सर ही नम बनाये रखा। नवंबर 1947 में जब अपनी कश्मीर-यात्रा के समय वे बारामूला में गये तो वहां पाकिस्तानी तत्त्वों द्वारा जनता पर किये गए अत्याचारों के बारे में सुनकर उनकी आंखें भर आयीं। लौटते समय एक स्थान से उन्होंने कुछ फूल चुनकर अपने पास रख लिए। जब नेहरूजी से यह पूछा गया कि वे इन फूलों का क्या करेंगे तो उन्होंने बड़े दुखी स्वर में उत्तर दिया 'दिल्ली पहुंचकर इन

फूलों को पूज्य बापू के चरणों में भेंट चढ़ाकर कहूंगा कि बारामूला में अब केवल इतनी ही सुंदरता और सभ्यता शेष रह गयी है।'

प्रधानमंत्री के रूप में पंडित जवाहर लाल नेहरू बहुत अधिक व्यस्त रहते थे। कभी उन्हें किसी राष्ट्रीय समस्या से उलझना होता था और कभी वे किसी अंतर्राष्ट्रीय समस्या की गुथी सुलझाने में लगे रहते। अपनी इन व्यस्तताओं के बावजूद छोटी-छोटी बातों की भी वे उपेक्षा नहीं कर पाते थे। अपनी साठवीं वर्षगांठ मनाने के लिए वे अमेरिका से सीधे मुम्बई पहुंचे। अनेक अधिकारी और मित्र उनके स्वागत के लिए हवाई अड्डे पर मौजूद थे। एक वृद्ध महिला अपने हाथ में आइसक्रीम लिये हुए नेहरूजी के निकट पहुंचने की कोशिश में थी। वह नेहरूजी को आइसक्रीम खिलाना चाहती थी। अधिकारियों ने उसे डांट दिया। अचानक नेहरूजी की उस पर दृष्टि पड़ गयी। उसका उद्देश्य जानकर वे सीधे उस महिला के पास पहुंच गये और उसके हाथ से आइसक्रीम लेकर खाने लग गये। उपस्थित जनसमुदाय आश्चर्यचकित रह गया और वह वृद्ध महिला प्रसन्नता से गद्गद हो उठी।

एक बार नेहरूजी संसद भवन से

बाहर निकल रहे थे कि दो व्यक्ति अनजाने में ही उनसे टकरा गये। अपनी ही किसी धुन में मस्त रहने के कारण वे नेहरूजी को नहीं देख पाये। अब टक्कर लगने पर उन्होंने नेहरूजी की तरफ देखा तो उनकी सारी मस्ती काफूर हो गयी। वे तेजी से एक ओर खिसकने लगे। नेहरूजी को उनकी कायरता पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने उन्हें रोका और उनकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहने लगे 'क्यों भाई, तुम्हें कहीं चोट तो नहीं आयी?' फिर समझाते हुए बोले 'तुम लोग बड़े कायर हो। इस तरह डरने से काम कैसे चलेगा? हम लोग सब समान हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं। फिर अनजाने में मुझसे टकरा जाने में इतना डरने की आवश्यकता ही क्या है?'

नेहरूजी जनतंत्रीय परंपराओं के प्रबल समर्थक थे। जनता की राय के सामने वे अपनी राय को कोई महत्व नहीं देते थे। 1952 के चीनी आक्रमण के समय भारत को काफी हानि उठानी पड़ी थी। उस समय के रक्षामंत्री श्री कृष्ण मेनन के विरुद्ध देश में जनरोष काफी प्रबल था। नेहरूजी यह भलीभांति जानते थे कि श्री कृष्ण मेनन न केवल निर्दोष हैं, बल्कि वे प्रबल राष्ट्रभक्त और कुशल प्रशासक भी हैं। इसलिए उन्होंने संसद में श्री कृष्ण मेनन की प्रशंसा की, लेकिन जनमत का आदर करते हुए उन्होंने श्री कृष्ण मेनन का त्यागपत्र स्वीकार भी कर लिया।

जनतंत्र और संसद के प्रति नेहरूजी के सम्मान का एक और उदाहरण हमें राज्यसभा में उस समय देखने को मिला, जब अस्वस्थ होने के कारण प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बार-बार उठने-बैठने में उन्हें बड़ी असुविधा हो रही थी। उस समय कुछ लोगों ने उन्हें सुझाव दिया कि वे बैठे-बैठे ही उत्तर देते रहें। इस सुझाव को उन्होंने तत्काल अस्वीकार कर दिया और तनिक भावावेश में आते हुए कहा 'संसद की कुछ व्यवस्था होती है। सभा का सम्मान होता है। उन सब को देखते हुए बैठकर उत्तर देना उचित नहीं है।'

जनतंत्र के कट्टर समर्थन के साथ ही नेहरूजी अनुशासन के भी पक्के हिमायती थे। जनतंत्र की आड़ में अनुशासनहीनता को बर्दाश्त करना वे अनुचित मानते थे। यह अनुशासन सभी व्यक्तियों पर समान रूप से लागू होना चाहिए। एक बार जब नेहरूजी किसी सभा में भाषण दे रहे थे तो बरसात शुरू हो गयी। लोग फिर भी सभा में जमे रहे। कुछ व्यक्तियों ने बरसात से बचने के लिए अपने-अपने छाते खोल लिए। इससे सभा में कुछ अव्यवस्था सी उत्पन्न होने लगी। कुछ लोग छाते लेकर नेहरूजी की तरफ भी बढ़े। नेहरूजी ने अपने लिए छाते को अस्वीकार करते हुए कहा 'एकता का महत्व बहुत अधिक होता है। कुछ लोग छाते लगाये हुए हैं और कुछ बरसात में भीग रहे हैं, यह कैसे उचित हो सकता है।'

नेहरूजी के इन शब्दों को सुनकर लोगों ने तत्काल अपने छाते बंद कर दिये और बरसात में भीगते हुए भाषण सुनते रहे।

10/611, मानसरोवर
जयपुर - 302020 (राजस्थान)



राष्ट्र विन्तन

◆ सभ्य समाज के लिए आतंकवाद सबसे बड़ा खतरा है। इस समस्या का मुकाबला अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सहयोग से पूरी ताकत के साथ किया जाना चाहिए। भारत को आतंकवाद का सबसे बड़ा शिकार बताते हुए कहा कि दो साल पहले मुंबई पर भयानक आतंकवादी हमले ने दिखा दिया कि आतंकवादी गुट काफी आधुनिक हो गये हैं। निर्दोष लोगों को मारने के इरादे से उच्च तकनीक और हथियारों का इस्तेमाल कर सकते हैं। आतंकवाद अंतर्राष्ट्रीय चुनौती बनकर उभरा है। उसके विश्वव्यापी जाल से क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को खतरा पहुंच रहा है।

प्रतिभा पाटिल, राष्ट्रपति

◆ तंबाकू जनित बीमारियों से देश में ही प्रति वर्ष 8-10 लाख लोगों की मौत हो जाती है। चिंता की बात यह है कि विकसित देशों में कड़े कानूनों से तंबाकू उत्पाद बेचने वाली कंपनियों की नजर भारत जैसे बाजारों पर टिकी हुई है। 2030 में तंबाकू से होने वाली दस में से 7 मौतें विकासशील देशों में होंगी। इसलिए तंबाकू के सेवन को हतोत्साहित करने के लिए हमें राष्ट्रव्यापी जेहाद छेड़ने की जरूरत है।

गुलाम नबी आजाद, केन्द्रीय मंत्री

◆ राष्ट्रीय शिक्षा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी योजना के तहत तैयार 1500 रुपए का टच स्क्रीन कम्प्यूटर विद्यार्थियों को अगले वर्ष जनवरी तक सुलभ हो सकेगा। इस उद्देश्य हेतु जनवरी 2011 तक ऐसे एक लाख कम्प्यूटरों की आपूर्ति के लिए इच्छुक कंपनियों से रुचि-पत्र आमंत्रित किए हैं। इस प्रकार के टच स्क्रीन कम्प्यूटरों की आपूर्ति के लिए रुचि-पत्र आईआईटी राजस्थान को पेश किए जा सकते हैं। आईआईटी राजस्थान के नेतृत्व में विभिन्न संस्थाओं के शोध दल ने इस कम्प्यूटर का डिजाइन किया है। कई विदेशी कंपनियों ने भी इस प्रकार के कम्प्यूटर तैयार करने की इच्छा व्यक्त की है।

मानव संशाधन विकास मंत्रालय

कन्नू एक दिन
अचानक पापा से बोली
कि मुझे तोता चाहिए।
सबने उसे समझाया कि
परिदे आकाश में उड़ते
हुए ही अच्छे लगते हैं
उन्हें पिंजरों में कैद
करना ठीक नहीं।
पक्षियों को भोजन से
भी ज़्यादा प्रिय
आज़ादी होती है। कन्नू
ने किसी की एक न
सुनी। पापा ने जब
कहा कि पक्षियों को
पिंजरों में बहुत कष्ट
होता है तो कन्नू ने
कहा मैं अपने तोते
की अच्छी तरह
देखभाल करूँगी
और उसे खूब
खिला-पिलाऊँगी।



कन्नू और पिंटू

सीताराम गुप्ता

एक नन्हीं परी जैसी खूबसूरत लड़की थी कन्नू। उम्र बहुत कम नहीं थी उसकी। स्कूल के अंतिम वर्ष की परीक्षाएँ दे चुकी थी और अगले साल कॉलेज जाने की तैयारी कर रही थी। लेकिन दिल छोटे-छोटे बच्चों जैसा कोमल था कन्नू का। सबको खूब प्यार करती। सबसे मीठी-मीठी बातें करती। घर की खिड़कियों पर आ बैठने वाले कबूतरों से इस तरह बातें करती जैसे वे सब उसकी बातें समझते ही हों। कभी किसी कबूतर को उड़ाया नहीं। कोई

कबूतर उड़कर अंदर आ जाता तो हाथ में दाने लेकर उसके पीछे-पीछे दौड़ती और कहती, कब्बू! कब्बू! आ दाना खा।”

कन्नू एक दिन अचानक पापा से बोली कि मुझे तोता चाहिए। सबने उसे समझाया कि परिदे आकाश में उड़ते हुए ही अच्छे लगते हैं उन्हें पिंजरों में कैद करना ठीक नहीं। पक्षियों को भोजन से भी ज़्यादा प्रिय आज़ादी होती है। कन्नू ने किसी की एक न सुनी। पापा ने जब कहा कि पक्षियों को पिंजरों में बहुत कष्ट होता

है तो कन्नू ने कहा, मैं अपने तोते की अच्छी तरह देखभाल करूँगी और उसे खूब खिलाऊँ-पिलाऊँगी।” जब माँ ने कहा कि तोता अपनी बीट से सारे घर को गंदा करेगा तो कन्नू ने कहा, तोते की और घर की सफाई की जिम्मेदारी मैं लेती हूँ। आपको कहीं गंदगी नहीं मिलेगी।”

कन्नू के पिता कहीं से एक बहेलिये से एक तोता खरीद लाए जो लोहे के एक मज़बूत पिंजरे में बंद था। वैसे तो पक्षी पकड़ना और बेचना क़ानूनी अपराध है फिर भी कुछ लोग यह ग़लत कार्य करते हैं जो नहीं करना चाहिए। पक्षी पकड़कर बेचने वाले ही नहीं उन्हें खरीदने वाले भी कम अपराधी नहीं। कन्नू तोते को देखकर चहकने लगी। कभी उसे पानी पिलाने का प्रयास करती तो कभी कुछ खिलाने का लेकिन तोता न तो कुछ खा रहा था

और न पानी ही पी रहा था। थोड़ी देर बाद उसने पंख फड़फड़ाने शुरू कर दिये। लगता था वह पिंजरे से बाहर निकलने का प्रयास कर रहा है। फिर उसने अपनी चोंच से पिंजरे की सलाखों को काटने का प्रयास किया लेकिन बेकार। कुछ देर कोशिश करने के बाद वह थक कर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद जब उसमें थोड़ी ताकत आई तो वह पुनः अपने पंख फड़फड़ाने लगा और चोंच से तीलियों को काटने का प्रयास करने लगा। तीलियाँ तो नहीं कटीं पर तोते बेचारे की चोंच लहलुहान हो गई। यह देखकर कन्नू उदास हो गई और उसकी आँखों से आँसुओं की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। वह तोते को कुछ न कुछ खिलाना चाहती थी पर सब बेकार। किसी तरह दिन गुज़रा और रात आई। रात में भी कन्नू कई बार तोते को देखने के लिए उठी और उसे खिलाने-पिलाने का प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली कन्नू को।

रात गुज़रने के बाद सुबह उठते ही कन्नू सबसे पहले तोते के पास जा पहुँची। तोते ने कातर दृष्टि से कन्नू को देखा लेकिन चुपचाप पिंजरे में बैठा रहा। न बोला और न हिला-डुला ही। कन्नू ने शाम को चने भिगोए थे पिंटू को खिलाने के लिए। कन्नू ने अपने इस तोते का नाम पिंटू रख दिया था। कन्नू ने काफी कोशिश की पिंटू को खिलाने-पिलाने की लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। कल की अपेक्षा आज पिंटू शांत था। सुबह से शाम हो गई लेकिन उसने कुछ नहीं खाया-पिया बस चुपचाप बैठा रहा। न ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाए और न अपनी चोंच से तीलियों को काटने की कोशिश की। लगता था या तो उसमें शक्ति ही नहीं रही अथवा वह सत्याग्रह का रास्ता अपना रहा था। भूखा-प्यासा रह कर अपनी माँग मनवाने पर अड़ गया था। या तो मुझे छोड़ दो नहीं तो अपनी जान दे दूँगा।

कल की अपेक्षा आज पिंटू शांत था। सुबह से शाम हो गई लेकिन उसने कुछ नहीं खाया-पिया बस चुपचाप बैठा रहा। न ज़ोर-ज़ोर से पंख फड़फड़ाए और न अपनी चोंच से तीलियों को काटने की कोशिश की। लगता था या तो उसमें शक्ति ही नहीं रही अथवा वह सत्याग्रह का रास्ता अपना रहा था।

सुबह तो कन्नू ने किसी तरह थोड़ा नाश्ता कर लिया था पर तोते की ये दशा देखकर उसकी भी भूख-प्यास उड़ गई थी। न तो उसने दोपहर का खाना खाया था और न शाम का ही। किसी तरह रात गुज़री। अगले दिन सुबह फिर कन्नू पिंटू के पास जा पहुँची। उसे लगा कि आज पिंटू ज़रूर कुछ खाएगा पर पिंटू ने किसी भी चीज़ को छुआ तक नहीं। वह बहुत कमज़ोर लग रहा था। उससे ठीक से बैठा भी नहीं जा रहा था। कन्नू ने भी न तो नाश्ता ही किया और न खाना ही खाया। वह भी चुपचाप पिंटू के पिंजरे के पास बैठी रही।

शाम होने तक कन्नू चुपचाप पिंटू के पिंजरे के पास बैठी रही। पिंटू की ये दशा देखकर उसकी आँखों में आँसू बहने लगे।

कन्नू ने पिंटू का पिंजरा उठाया और छत पर जा पहुँची। वहाँ जाकर उसने पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। कुछ देर तक तो पिंटू की समझ में कुछ भी नहीं आया। पिंजरे का दरवाज़ा खुला था फिर भी वह उसके अंदर बैठा था। कन्नू ने पिंजरे को धीरे से हिलाया तो पिंटू को जैसे होश आया। वह धीरे-धीरे अपने पैरों पर चलता हुआ पिंजरे से बाहर निकला और फुदककर वहीं मुंडेर पर बैठा गया। कन्नू ने पिंटू की ओर देखकर कहा, पिंटू हो सके तो मुझे माफ कर देना। मुझे नहीं पता था कि तुम्हें भी हमारी तरह ही आज़ादी पसंद है। मैं वादा करती हूँ कि जीवन में कभी भी किसी पशु-पक्षी को पिंजरे में कैद नहीं करूँगी।”

पिंटू ने एक बार कन्नू की ओर ध्यान से देखा मानो कह रहा हो कि अपना वादा याद रखना और फिर आकाश की अनंत ऊँचाइयों में विलीन हो गया। कन्नू काफी देर तक वहीं खड़ी हुई हाथ हिलाती रही जैसे अपने किसी बहुत पुराने परिचित से हमेशा के लिए विदा हो रही हो। उसके बाद कन्नू ने पिंजरे को उठाकर वहीं एक कोने में फेंक दिया। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी। वह दौड़ती हुए नीचे आई और अपनी माँ से कहा, माँ मुझे ज़ोर से भूख लगी है, मुझे कुछ खाने को दो।”

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

**बचपन सफेद कपड़ा है, उस पर चाहे
जैसा रंग चढ़ाया जा सकता है।**

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

राहुल बेटे! आज फिर तुम वाश-बेसिन पर नल चालू रखकर ब्रश कर रहे हो, तुम्हें कितनी बार समझाया है, चलो नल बंद करो। राहुल के पिताजी ने डॉटने के अंदाज में बेटे राहुल को कहा तो तुरत-फुरत राहुल भी नल बंद करके ब्रश करने लगा। ब्रश करते हुए राहुल मन ही मन गुस्सा कर रहा था। सोच रहा था, ये पापा भी पानी के मामले में हरदम मुझे डॉटते ही रहते हैं। न जाने सारा पानी इकट्ठा करके घर में कौन-सा समंदर बना लेंगे।

लेकिन पापा, पानी की कहाँ कमी है, ढेर सारा पानी ही पानी है अपने चारों ओर। मैंने तो ज्योग्राफी की किताब में पढ़ा भी है कि धरती पर 75 प्रतिशत तो पानी ही भरा पड़ा है।

लेकिन बेटे वो सागर का पानी है, जो हमारे न पीने के काम आता है, ना ही नहाने-धोने के। फिर किसी चीज के ज्यादा होने का मतलब यह तो नहीं कि हम उसे व्यर्थ ही बहाते रहें।

पापा की बात को अनसुना-सा करके

पापा ने उत्तर दिया- बेटे, मैंने तो पहले ही तुम्हें चेतावनी दे दी थी। अब पानी खतम हो गया है, तो मैं क्या करूँ, तुम्हें एक बाल्टी से ही काम चलाना चाहिए था।

किसी तरह मम्मी ने रसोई से एक बाल्टी पानी लाकर दिया और राहुल नहा-धोकर बाहर आया।

पापा ने फिर समझाया- बेटे, पानी की कीमत तुम अभी तक नहीं समझ पाए हो। पर्यावरण की हालत लगातार बिगड़ती जा रही है, बारिश साल-दर-साल कम होती जा रही है, ऊपर से जमीन के नीचे का पानी निरंतर घटता जा रहा है, हम अभी भी नहीं चेतते तो वह दिन दूर नहीं, जब पेट्रोल पंपों की तरह शहरों में वाटर पंप खुल जाएंगे और हमें लीटर-दो-लीटर पानी से काम चलाना पड़ेगा।

लेकिन पापा, सिर्फ मेरे पानी बचाने से क्या हो जाएगा, मैं यदि तीन बाल्टी की बजाय एक बाल्टी पानी से नहाने लग जाऊँगा तो क्या संसार की पानी की समस्या दूर हो जाएगी। राहुल ने पूछा।

हां बेटे, एक-एक आदमी को पानी बचाने के लिए आगे आना होगा। नहाने में ही नहीं बल्कि कपड़े धोने, रसोई के बर्तन साफ करने, कार-साइकिल आदि साफ करने में भी पानी का कम प्रयोग करना चाहिए। कपड़ों का गंदा पानी, पोछों का पानी और कार धोने में बचा पानी बाद में पेड़-पौधों को पिलाना चाहिए। यदि हर घर में ऐसा होने लगे तो हम प्रकृति का ढेर सारा पानी बचाए रख सकते हैं। पापा ने समझाया। राहुल के मन में एक सवाल बड़ी देर से उलझ रहा था, सो उसने पूछ ही लिया- पापा, क्या हम बारिश के पानी को भी बचाकर रख सकते हैं। ऐसे कई इलाके जहाँ रेगिस्तान हैं, वहाँ जब भी बारिश होती है, उस पानी को बड़े-बड़े हौजों में, जिन्हें टांके कहते हैं, बचाकर रखते हैं। बारिश के उसी पानी से

राहुल की नादानी

सत्यनारायण 'सत्य'

राहुल यूँ तो पढ़ने-लिखने में एक होनहार विद्यार्थी था। हर साल कक्षा में प्रथम आना उसकी आदत बन गई थी। और कोई भी कार्यक्रम होता तो वह बड़-चढ़कर हिस्सा लेता और उसमें जीतकर भी आता। इसीलिए उसके मम्मी-पापा उसे बड़ा प्यार करते थे। पर उसकी एक मात्र बुरी आदत यह थी कि वह पानी को फालतू खूब खर्च करता था। नहाता तो चार-पाँच बाल्टी अपने तन-बदन पर उड़ेल लेता, फिर चाहे शरीर पूरी तरह गीला हो या नहीं। ब्रश करता, तो वाश-बेसिन का नल तब तक चालू रखता जब तक पूरा ब्रश कर नहीं लेता। इन बुरी आदतों से उसके सभी घरवाले, खासकर उसके पापा खासे नाराज रहते थे। उन्होंने कई बार उसे समझाने की कोशिश की पर नतीजा वही ढाक के तीन पात।

लेकिन जब ब्रश करके डाइनिंग हॉल में आया तो पापा बोले- 'बेटे, तुमको मैंने कितनी बार समझाया है, पानी बड़ा अनमोल है, इसको फालतू में बर्बाद मत किया करो, लेकिन तुम तो मानते ही नहीं हो।'

राहुल अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया। धीरे-धीरे गर्मी का मौसम आया। शहर में सचमुच पेयजल की दिक्कत रहने लगी। वाटर सप्लाई वाले भी पानी की सप्लाई एक-एक दिन छोड़कर एक दिन करने लगे। राहुल के घर पर लगा ट्यूबवैल भी सूखने लगा था। इस तरह धीरे-धीरे पानी का संकट बढ़ने लगा था, लेकिन राहुल की आदतें थी कि बदलने का नाम ही नहीं ले रही थी।

एक दिन घर की टंकी में पानी काफी कम रह गया राहुल पापा की बात सुनकर बाथरूम में घुस गया। एक बाल्टी पानी तो यूँ ही गिरा दिया, फिर साबुन लगाया, लेकिन साबुन उतारने के लिए जैसे ही नल खोला, पानी गायब। उसकी साँस थम-सी गई, पापा ने कहा था लेकिन उसने नहीं मानी, अब क्या करे, बदन पर लगाया साबुन भी बिन पानी के कैसे उतारे। उसने बाथरूम से ही पापा को आवाज लगाई- 'पापा! पापा! कुछ करिए, मैंने साबुन लगा रखा है, और टंकी का पानी खतम हो गया है, प्लीज मेरी मदद कीजिए।'

फिर उनका सालभर का काम चलता है। यदि हम भी उनसे कुछ सीख लें और छत का पानी इकट्ठा कर लें, तो बड़ा मजा आ जाए।

ठीक है पापा, आज से मैं वादा करता हूँ कि मैं कभी भी पानी का दुरुपयोग नहीं

करूँगा। इस पानी को जो कि अनमोल है, सहेज कर रखूँगा। राहुल ने खुशी से चहकते हुए कहा।

पापा-मम्मी भी बड़े खुश थे कि आज उन्होंने राहुल को मना ही लिया पानी बचाने के लिए, और उन्हें इस बात की भी

खुशी थी कि अब वही राहुल अपने घर, परिवार, मौहल्ले, विद्यालय और मित्रों के वहाँ पानी की बचत करने की बात करेगा, जो आज के समय में बड़ी जरूरी है।

समता भवन के पास,
रायपुर (भीलवाड़ा)

पतंग

शाम हो चुकी थी, फिर भी राजेश पतंग उड़ाने में मशगूल था। इधर उसकी छोटी मौसी भी छत पर रोटी और चीनी खा रही थी। तभी राजेश की नानी छत पर आई और सारे सूखे हुए कपड़े को उठाकर अपने नीचे वाले कमरे में चली गई। लेकिन वह छत से उतरते वक्त यह कहती गयी। राजेश और निर्मला जल्दी छत से उतरो नहीं तो बंदर आकर काट लेगा। दोनों ही इनकी बात को अनसुनी कर छत पर ही डटे रहे। इस समय इन्हें थोड़ा भी डर नहीं था कि खूँखार बंदर आकर, इन्हें काट भी सकता है? शायद बचपन में ऐसा ही होता है, न किसी का डर और न किसी चीज की चिन्ता।

छत से उतरने के लिए राजेश और निर्मला को कई बार नीचे से लोगों ने बुलाया भी था लेकिन दोनों ने इनकी बात को अनसुनी कर, आसमान में उड़ते हुए पतंग को देखकर आनन्दित होते रहे। तभी एकाएक बंदरों का एक झुण्ड, इनके पास 'खो-खो' करते हुए आया और इन्हें काटने के लिए लपका। यह देखकर दोनों की सिटी-सीटी शुरु हो गई। अब इनके पास कोई चारा नहीं था, वहाँ से भागने का। निर्मला की तरफ से बंदरों ने हमला किया तो उसने जल्दी से अपनी रोटी फेंक दी, फिर भी वह रोटी खाकर उसकी तरफ लपका। दोनों इस समय बंदरों के झुण्ड से बिल्कुल घिर चुके थे। तभी तार की जाली ऊपर की ओर देखा कि छत पर राजेश और निर्मला दोनों इस समय बंदरों से घिर गए हैं। यह देखकर राजेश की नानी एक लाठी लेकर ऊपर आई और लाठी पटकते हुए उसने राजेश और निर्मला को नीचे बुलाया। संयोगवश, इनके दो-तीन बार लाठी पटकने से उन बंदरों पर काफी असर हुआ।

जिससे बंदर तुरंत भाग खड़े हुए।

इधर राजेश और निर्मला दोनों गिरते-पड़ते सीढ़ी से नीचे उतरे। उस समय उन्हें बिल्कुल होश नहीं था कि यह सब पल भर में, एकाएक कैसे हो गया? आज राजेश सोचता है कि अगर उस समय उसकी नानी लाठी लेकर ऊपर न आयी होती तो, उसका क्या हश्र होता? शायद उसे और उसकी मौसी का वे काट-काट कर बुरा हाल कर देते? शायद इस दिन, इन बंदरों की हरकत से उसके प्राण भी बचते या नहीं? यही सोचते-सोचते वह गंभीर हो गया।

डॉ. सूरज मृदुल
गुरुद्वारा के सामने, रमना
मुजफ्फरपुर (बिहार)



कैसे पढ़ाये लाड़ले को

डॉ. अनामिका प्रकाश



बच्चों की पढ़ाई के प्रति अक्सर माँ-बाप चिंतित रहते हैं। लोगों की एक ही शिकायत होती है कि 'मेरा बच्चा तो पढ़ता ही नहीं, जैसे-तैसे स्कूल जाता है और वहीं जो कुछ पढ़ता है, लिखता है बस..। वरना घर आने के बाद तो किताब छूता तक नहीं।

यह शिकायत बहुत ही आम है। अक्सर माताओं को ही इसका सामना करना पड़ता है। सच्चाई भी यही है कि बच्चों की प्रारंभिक पढ़ाई का पूरा दारोमदार माताओं पर ही होता है, क्योंकि बच्चे माँ से ही ज्यादा घुले-मिले होते हैं, माँ के पास ही उन्हें ज्यादा रहना पड़ता है। इसका कारण भी है।

आज के व्यस्त जीवन में किसी भी पुरुष का अधिकतर समय दफ्तरों की फाइलों में लग जाता है। प्रायः काम-धंधों की गुत्थियाँ सुलझाने में सुबह का निकला व्यक्ति वापस लौटता है तो प्रायः शारीरिक और मानसिक रूप से थका-हारा होता है। तब उसमें इतनी शक्ति नहीं बची रहती कि वह बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में अपना सिर खपाये। वह तो परिवार या घर की साधारण बातों में भी तब तक नहीं उलझना चाहता जब तक उसका चित्त पूर्णतया शांत और स्थिर न हो जाये। इस अवस्था में बच्चों की पढ़ाई और उनकी पूरी देख-रेख की जिम्मेदारी माँ पर आ जाती है, अगर वह नौकरी पेशा नहीं है। नौकरी-पेशा औरतों के साथ ठीक वहीं कठिनाई आती है, जो पुरुष के साथ। फिर भी इस अवस्था में भी बच्चों की पढ़ाई पर माँ को ध्यान देना ही पड़ता है और ऐसे में सवाल यह उठता है कि आप घर में बच्चों को किस तरह पढ़ाती हैं।

मेरे पड़ोस में एक परिवार है। उनके तीन-चार बच्चे हैं। सुबह उन्हें पिता से पढ़ना पड़ता है और शाम को अपनी माँ से। पिता अक्सर बच्चों को बाहर की बालकनी में ही बिठाकर पढ़ाते हैं और जहाँ बच्चा गलत बोला या उसने कोई सवाल गलत किया तो उसे मुर्गा बनाकर छोड़ देते हैं। काफी देर तक मुर्गा बने रहने के कारण बच्चे के चेहरे की नसे तन जाती हैं और उसका चेहरा पसीने से लथपथ हो उठता है, शाम को जब माँ पढ़ाने बैठती है तो अक्सर बच्चे बहुत डरे रहते हैं, क्योंकि जहाँ कोई गलती होती है माँ एक चिमटे से उसके शरीर के किसी न किसी हिस्से को दाग देती है। यह भयंकर कृत्य बार-बार एक ही प्रश्न मन में उभरता है.. 'क्या बच्चों को घर में इसी तरह पढ़ाया जा सकता है?' और उसके उत्तर में मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि कभी नहीं। इस भयानक स्थिति में बच्चों की पढ़ाई तो होगी नहीं, उल्टे उनके विकास में कई तरह की बाधाएँ उपस्थित हो जाएंगी।

घर में बच्चों की पढ़ाई जितनी जरूरी है, उतना ही जरूरी इस बात का ध्यान रखना भी है कि आप बच्चों को किस तरह पढ़ाती हैं। आपकी बुद्धिमता, सहनशक्ति और सुव्यवहार ये तीन चीजें बच्चों की पढ़ाई के लिए आवश्यक हैं।

बच्चे अपरिपक्व बुद्धि के होते हैं, उनके मन में कई तरह की जिज्ञासाएं भरी होती हैं और अपनी पढ़ाई के दौरान वे तरह-तरह के प्रश्न आपके समक्ष रख सकते हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि उन प्रश्नों का उत्तर किस तरह देती हैं। परंतु एक बात का ख्याल रखें, प्रश्नों का उत्तर सही-सही और सरल रूप में दें।

अपनी भाषा को इतना सहज रखें कि वह बच्चे की समझ में आसानी से आ सके। यदि किसी प्रश्न का उत्तर आप नहीं देना चाहती तो आप बच्चे पर खीझें नहीं बल्कि चतुराई से उस प्रश्न को टाल जायें या बच्चे का ध्यान दूसरी तरफ मोड़ दें। परंतु किसी भी प्रश्न का उत्तर गलत न दें, क्योंकि बातें बच्चों के दिमाग में जल्दी ही बैठ जाती हैं।

कम उम्र से ही अगर बच्चों को नियमपूर्वक उठना-बैठना, खाना-सोना, खेलना, घूमना सिखाया जाये तो वे नियमपूर्वक पढ़ना भी सीख जायेंगे। समय की नियमितता तभी आ पायेगी जब आपका ध्यान उस तरफ हो और आप खुद नियमपूर्वक जीवन जीना चाहती हों।

अगर आप में आलस्य है तो आपका बच्चा आलसी होगा ही। बच्चों पर पहला प्रभाव घर में माँ का ही पड़ता है। बच्चों के प्रति अपना व्यवहार कटु कभी न बनाये, जो बात स्नेह और प्यार से बच्चों को समझा सकती हैं, उन्हें दंडित करके कदापि नहीं। बच्चे मार खाते-खाते जिद्दी तो हो ही जाते हैं, माँ-बाप के प्रति उनके मन में नफरत भी भरती जाती है।

अगर आप अपने बच्चे की नफरत से बचना चाहती हैं तो अपने गुस्से पर नियंत्रण रखने की आदत डालें। डरे बच्चे का मानसिक विकास नहीं हो सकता। इसलिए आप बच्चे को खुद पढ़ाते वक्त इन बातों का ध्यान रखें। अगर कोई मास्टर आकर उनको पढ़ाता है तो उस पर भी नजर रखें कि वह आपके बच्चों के प्रति निर्दयतापूर्वक व्यवहार न करें।

जी-9, सूर्यपुरम्, नन्दनपुरा
झाँसी - 284003

गौरैया के चार बच्चे

शिवचरण मंत्री

एक गौरैया थी। उसके चार बच्चे थे। गौरैया ने अपने नन्हें बच्चों को सुरक्षा की दृष्टि से अपनी सहेली अबाबील (काली चिड़िया) के घोंसले में रख छोड़ा था। एक बार कुछ बदमाश बच्चों ने खेल ही खेल में अबाबील के घोंसले को पत्थरों से नष्ट कर दिया। घोंसला नष्ट होने पर बच्चे वहाँ से इधर-उधर उड़ गए। गौरैया बड़ी दुःखी हुई। पर करती भी क्या? अतः मन को समझा कर चुप बैठ गई।

समय बीता। खेतों में फसल उगी। फसल बड़ी हुई, समय पर फसल बड़ी होकर पक गई। सुनहरा समय था। गौरैया दाना चुगने को एक मक्की के पके दानों के खेत पर गई। गौरैया ने वहाँ अपने खोएं हुए चारों बच्चों को देखा। माँ, अपने बिछुड़े बच्चों से मिल कर बड़ी खुश हुई उसका प्यार उमड़ा। वह चारों बच्चों को अपने घोंसले पर ले आई। गौरैया ने अपने बेटों से बहुत बातें करते हुए सबसे बड़े बच्चे से पूछा बेटा, तुम घोंसले से उड़ कर कहाँ गए, कहाँ रहे और क्या खाया।

माँ, घोंसले से उड़कर मैं एक बगीचे में जा पहुँचा। मैं वहाँ सेब के पेड़ पर एक अबाबील के ही घोंसले में रहने लगा। माँ, मैं सेतु से गिरे फल खाकर अपना पेट भरता और मौज से रहा। माँ, अब सेब पक गए हैं, अतः मैं भर पेट सेब खाकर बड़ा स्वस्थ बन जाऊँगा। पहले बच्चे ने माँ को उत्तर दिया।

‘ठीक है। तुम सेब के नाम में अब सँभल कर रहना।

‘क्यों ? मैं सँभल कर क्यों रहूँ ?

‘बेटा, सेब के व्यापारी बड़े ही लालची होते हैं। वे सेब तोड़ने के लिए डण्डों का प्रयोग करते हैं। ये लोग कभी भी तुम्हें

डण्डों से मार सकते हैं। अतः सावधान रहना और किसी अनजान पर कभी विश्वास मत करना।

दूसरे बच्चे ने कहा माँ, मैं यहाँ से उड़कर एक राजा के दरबार में जा पहुँचा। वहाँ मैंने राजा, उसके दरबारियों, राजा के नौकर पहरेदारों को देखा और अस्तबल में डेरों पड़े जई, मक्का के दानों से....।

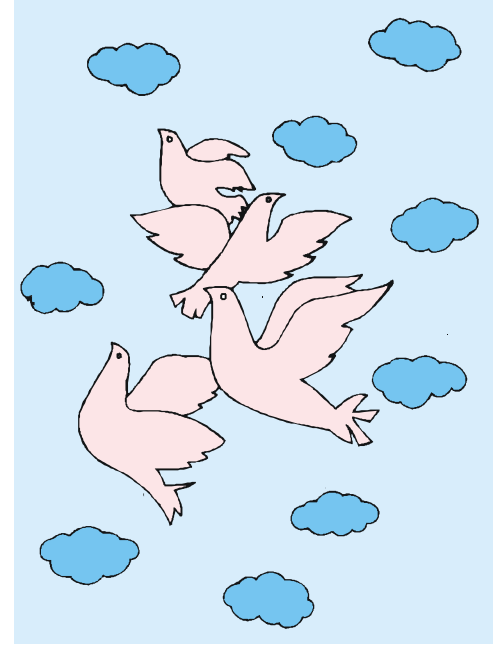
यह तो तूने अच्छा किया। गौरैया ने आगे कहा तू दरबार में रहना सीख गया। सभ्य लोगों के साथ रहकर अच्छा बन गया। पर अस्तबल में कई बदमाश, निठल्ले बच्चे आते रहते हैं। ये बच्चे छोटे बच्चों को पत्थरों से मारते रहते हैं, अतः तू शरारती बच्चों से दूर ही रहना।

माँ, मैं घोंसला टूट जाने पर एक मजदूर बस्ती में चला गया और वही एक दीवार पर रहने लगा। माँ, इस बस्ती में मैंने कचरे-कूड़े में फेंके गए मक्की और जौ के दाने बीन कर पेट भर लिया। तीसरे बच्चे ने कहा।

ठीक है। मजदूर बड़े परिश्रमी, उत्साही, परस्पर मिलजुल कर काम करने वाले होते हैं। पर ये लोग अक्सर बिना बात के लड़ते-झगड़ते और मार-पीट करते रहते हैं। वे अपनी जेबों में मारने को कंकड़ रखते हैं, अतः तुम ऐसे मजदूरों से बच कर रहना।

अरे, तुम बड़े कमजोर और दुबले हो अतः मेरे साथ रहो। मैं तुम्हे प्यार से रखूँगी। पर तुम मेरे.....।

गौरैया अभी कुछ आगे बोलती कि चौथे बेटे ने कहा माँ, जो बिना किसी को नुकसान पहुँचाए अपना पेट पालता है, जो ईश्वर में विश्वास करता है और सुबह शाम उसकी प्रार्थना करता है, नम्र रहता



है, उसकी आत्माशुद्ध हो जाती है और उसे गिद्ध, बाज, उल्लू आदि शिकारी पक्षी भी नुकसान नहीं पहुँचा सकते हैं?

‘परंतु तूने ये सब बातें कहाँ सुनी ?

माँ, मैं यहाँ से उड़कर एक गिरजाघर में चला गया था। वहीं मैंने गिरजाघर में आने वाले भक्तों की ये सब बातें सुनी और जो रूखा-सूखा मिला खा लिया।

बहुत ठीक, मेरे लाडले तू अब जल्दी से यहाँ से गिरजाघर चला जा क्योंकि समर्पित भाव से जो सुबह शाम नियमित रूप से ईश्वर की प्रार्थना करता है, उस पर दृढ़ विश्वास करना है उसके प्रयत्न सफल होते हैं और उसे कोई भी हिंसक पशु नुकसान नहीं पहुँचा सकता। मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है।

गौरैया ने ज्यों ही अपनी बात पूरी की बच्चा वहाँ से उड़ा और गिरजाघर की ओर बढ़ गया।

33/228, नयाशहर, किशनगढ़
अजमेर - राज. 305802

बाल साहित्य एवं बाल मनोविज्ञान

राजकुमार जैन 'राजन'

बालक अर्थात् राष्ट्र का भविष्य। उसकी शिक्षा, संस्कार का मतलब है राष्ट्र शिक्षा-संस्कार। राष्ट्र के नागरिक की यह अवस्था वह बुनियाद है जिस पर राष्ट्र के भविष्य की इमारत खड़ी होगी।

बच्चे का मन एक कोरी स्लेट जैसा होता है। स्लेट पर लिखी इबारत तो कभी भी मिटाई जा सकती है, बाल मन पर अंकित कुछ भी अमिट स्थान बना लेता है। इसलिए बालक के मनोविज्ञान को समझते हुए उसकी शिक्षा-दीक्षा में बड़ी सावधानी रखनी चाहिए।

बच्चा ईश्वर की बनाई वह अलभ्य, अनमोल कृति है जिससे कायम है जीवन की धारा, परम्पराएं, संस्कृति और शाश्वत मूल्य। यह अनुपम कृति जितनी सुकोमल है उतनी ही जिज्ञासु भी। यही कारण है कि बाल मन सबसे अधिक संवेदनशील होता है। अपने आस-पास हो रही हर घटना से सबसे पहले जो प्रभावित होता है वह है यही बाल मन।

हम सभी यह जानते हैं कि आज के परिवेश में बालक की जिज्ञासा का क्षितिज चाहे जितना बड़ा हो गया हो पर उसकी प्रारम्भिक जिज्ञासा अपने मूल रूप में अपरिवर्तित है।

बालक जिस अवस्था में बोलना, सुनना और जानना शुरू करता है उस अवस्था में उसके मनोविज्ञान में बराबर एक जैसी स्थिति बनी होती है। बच्चे के लिए पहली 'रचना' का जन्म उसी दिन शुरू हो जाता है जब उसके मन में जिज्ञासा का जन्म होता है। बाल साहित्य की परम्परा बहुत पहले वाचन और श्रवण से शुरू होती है। विश्व में अनेकों लोक-कथाओं और लोरियों के सर्जक सच्चे अर्थ में बाल मनोविज्ञान के गूढ़

ज्ञाता थे। वे अलिखित लोक कथाएं- अपने मनोरंजक तत्वों तथा कौतूहल से ऐसी सराबोर होती है कि बच्चे की जिज्ञासा इतनी प्रबल होती है कि वह अपना खाना-पीना भूलकर उसे पूरा सुने बिना, सुनाने वाले को उठने ही नहीं देता। बाल मन बड़ा कोमल और कल्पनाशील होता है। प्रारम्भिक अवस्था में पढ़ने की उम्र से पहले ही वह ऐसी कहानियाँ सुनना चाहता है जो उसके कल्पनाशील मन को ऊँची उड़ान दे। ये कहानियाँ उसके मन में ऐसी जिज्ञासा जगा देती है कि आगे चलकर वह अपनी वय वर्ग के अन्तर्गत आने वाली हर प्रकार की रचनाओं को पढ़ने में रुचि लेता है। यह परम्परागत अलिखित बाल साहित्य बच्चों में पठन रुचि की ललक पैदा करता है। बच्चों के लिए इस प्रकार की कहानियों, गीतों, लोरियों आदि के रचयिता कौन थे? आज के बाल साहित्य के इतिहास में व अनाम हैं, पर वे ऐसी बुनियाद हैं जिन्होंने बाल मनोविज्ञान को अपने अन्तर्गमन से जाना और समझा था। उन्होंने अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए ये रचनाएं नहीं गढ़ीं बल्कि बाल मन के धरातल पर अपनी कल्पना को उतार कर यह सब रचा।

यह हम सभी जानते हैं कि जीवन में सब कुछ परिवर्तनशील है और बदलना हम सबकी नियति है। यही प्रकृति का नियम है और विकास की प्रक्रिया भी। किन्तु आज परिवर्तन की आँधी का वेग इतना तेज है कि उसमें सब कुछ विलुप्त होता चला जा रहा है हमारी परम्पराएं, परिपाटियाँ, संस्कार, आचार और विचार। इनसे सबसे पहले कौन प्रभावित होता है? निस्संदेह बच्चे का सुकोमल मन।

दुविधा में पड़ा यह सुकोमल मन अनुभव कर रहा है आधुनिक समाज में

छाई समस्याओं को। किस प्रकार परम्पराएं विलुप्त हो रही हैं, परिवार टूट रहे हैं, सामाजिक जीवन में कडुवाहट आ रही है, संस्कारों का विघटन हो रहा है... स्थिति इतनी सोचनीय है कि कभी-कभी लगता है कि वह कौन-सी चीज है जो हम अपनी भावी पीढ़ी को देकर जाएंगे?

क्या हमें बच्चों को ऐसा स्वच्छ पर्यावरण नहीं देना चाहिये जहाँ वह भय मुक्त होकर स्वच्छंद मन से अपनी बाल सुलभ प्रवृत्तियों को कायम रख सके? आज का हर चिंतक-बाल साहित्यकार इस भयावह परिस्थिति को महसूस ही नहीं कर रहा है बल्कि इसके बारे में चिंता भी कर रहा है।

आज हमारे-आपके सामने यही सबसे बड़ी चुनौती है कि हमें किस प्रकार का बाल साहित्य बच्चों को देना चाहिए। बाल साहित्य की महत्ता और आवश्यकता को तो हमने स्वीकार किया है लेकिन उसके मापदण्ड, मूल्यांकन के आधार और



भारतीय बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए अपेक्षित बाल साहित्य के संदर्भ में हम मौन ही रहे हैं जबकि इस संबंध में गंभीरता से विचार अपेक्षित था।

वक्त के साथ-साथ बाल साहित्य सृजन भी प्रचुर मात्रा में हुआ। आज बाल साहित्य अपने अस्तित्व के प्रति सजग है तथा साहित्य की सभी विधाओं-कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, यात्रा वृत्तान्त, ज्ञान-विज्ञान, पहेलियाँ आदि विषयों से बाल साहित्य समृद्ध हुआ है। बाल साहित्य का लेखक भी पहले जैसा उपेक्षित नहीं रहा। वह प्रतिष्ठित, चर्चित तथा सम्मानित हो रहा है। वह बच्चों के लिए लिखकर संतुष्ट होता है।

बाल मनोविज्ञान को समझना और तदनुसार बाल साहित्य का सृजन करना लेखक के लिए आवश्यक है। यह सही है कि बच्चों के लिए लिखना कठिन है। इसके लिए रचनाकार को स्वयं बालक बनना होता है। बालक बनना आसान नहीं है। प्रख्यात साहित्यकार एवं चिंतक विष्णु प्रभाकर के शब्दों में कहें तो 'बच्चों के लिए लिखने के लिए परकाया प्रवेश आवश्यक है।' अर्थात् अपने बचपन की काया में प्रवेश। अपनी स्मृति के पन्ने पलटते-पलटते वहीं पहुँच जाना जहाँ हम अधिक बोल नहीं सकते थे लेकिन समझ सकते थे। बच्चों के लिए लिखने के पूर्व लेखक की दृष्टि स्पष्ट होनी चाहिये। वह बच्चों के मनोविज्ञान को समझे, उसकी परिस्थितियों और उसकी आयु को ध्यान में रखे और उन्हीं के अनुरूप भाषा का प्रयोग करते हुए साहित्य सृजन करे तभी बालकों के लिए अच्छा साहित्य लिखा जा सकता है।

बालक उन रचनाओं को पसंद करता है जो उनके मनोनुकूल हो। इस वैज्ञानिक युग में संचार के आधुनिक संसाधनों के फलस्वरूप बालक की मानसिक क्षमता में वृद्धि हुई है और वह ज्ञान-विज्ञान की बारीक रेखाओं को भी पकड़ सकता है।

बालक को अपने आस-पास की परिस्थितियों से भी रूबरू होना पड़ता है। उसके चंचल मन के लिए खुला आकाश है। बाल सुलभ जिज्ञासाओं का समाधान, कल्पनाओं की उड़ानयुक्त रचनाएं बालकों को खास-तौर से पसंद आ सकती है। बालकों को बाल साहित्य के नाम पर कुछ भी थोपा नहीं जाना चाहिए क्योंकि थोपे हुए साहित्य को बालक स्वीकार नहीं करेगा। बाल साहित्य लिखने की आवश्यकता और महत्त्व को हम स्वीकारते हैं।

आज हमारे देश के पारिवारिक, सामाजिक वातावरण, बच्चों के मानसिक स्तर और बौद्धिक क्षमता को देख-परख कर उसके अनुसार लिखने की आवश्यकता है। बालकों के आयु वर्ग का निर्धारण हम हमारी परिस्थितियों को देखकर ही कर सकते हैं। बाल साहित्य का भविष्य उज्वल है इसमें अनेक संभावनाएँ दृष्टिगत होती हैं।

यहाँ, मैं पुनः दोहराना चाहूँगा कि आज बाजारवाद के चलते ऐसा बाल साहित्य भी प्रचुर मात्रा में प्रकाशित किया जा रहा है जो बाल मन को गुमराह कर रहा है उसे हिंसक बना रहा है। ऐसे साहित्य से बालकों को दूर रखना भी हमारा ही कार्य है। यदि हम बच्चों की सोच, उनके विचारों, उनकी मानसिकता को ध्यान में रखकर चिंतन करें तो प्रतीत होता है कि आज का वक्त बाल-साहित्यकारों के लिए बहुत बड़ी चिंता और चुनौती का है। क्योंकि उनके पास बागडोर है संसार भर के बच्चों में चेतना जगाने की, उन्हें उचित दिशा प्रदान करने की। कहने का मतलब है कि हमारे बाल साहित्य लेखकों में ऐसा करने की भरपूर क्षमता है, पर आज की आवश्यकता है कि हर साहित्यकार की सोच को आंदोलित किया जाए। उन्हें धिसे-पिटे मूल्यों, अंधविश्वासों, परम्पराओं, पौराणिकता और सामंती मूल्यों के मापदण्ड से थोड़ा हटकर सोचना होगा।

हर बाल साहित्य लेखक के अपने विचार अपनी कल्पनाएँ हैं किंतु मैं केवल

इतना चाहूँगा कि यदि हम आधुनिक बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों की कल्पनाओं को उड़ान भरने की पूरी छूट देते हैं तो साथ ही साथ हमें उसे जिन्दगी के यथार्थ से भी परिचित होने का अवसर देना चाहिये। अतः हमें अब इस प्रकार के बाल साहित्य की रचना पर विचार करना है जो हमारी भावी पीढ़ी तक पहुँच सके और उसे भविष्य की दुनिया में जीने की शक्ति और साहस दें।

आकोला - 312205
चित्तौड़गढ़ - राज.

बाल कथा

उन दिनों गांधीजी चंपारन में थे।
बाहर बैठे चरखा चला रहे थे,
उनके सामने आंगन में दो बच्चे
खेल-खेल में लड़ने-भिड़ने लगे
और एक दूसरे को भद्दी गालिया
देने लगे।

गांधीजी ने दोनों बच्चों के
माता-पिता को बुलाकर डाटा तो
एक बच्चे के पिता ने पूछा- 'बच्चों
के झगड़ने पर आपने हमें क्यों
बुलाया? आप खुद ही बच्चों को
डांट-फटकार लगा सकते थे। उन्हें
डांटने का आपको तो पूरा-पूरा
अधिकार है जी।'

गांधीजी गम्भीरता से बोले-
'मैं तो उन्हें डांट सकता था। पर
डाटता तो तब, जब वे दोषी
होते। ये भद्दी गालियाँ तो उन्होंने
तुम लोगों के बुरे आचार-विचार
आचरण से ही सीखीं होंगी।'
गांधीजी की सच्ची बातें सुनते
ही बच्चों के माता-पिता ने लज्जा
से सिर झुका लिया।

साँवलाराम नामा

यह उम्मीद थी कि बच्चों की स्थिति के विश्लेषणों से उभर कर आ रहे गंभीर निष्कर्षों को राजनैतिक दल स्वीकार करेंगे और उसे अपनी समझ का हिस्सा बनाएंगे। परंतु अफसोस की बात है कि ये इमारतें-सड़कें, उद्योग बनाने, जलस्रोत सुखाने और जंगल काटने में इतने मसरूफ हो गये हैं कि अब इन्हें बच्चे नजर ही नहीं आ रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ने तो इस बार अपने घोषणा-पत्र में बच्चों

बच्चों के कुपोषण का संकट गहरे बादल बनकर समाज के ऊपर छा रहा है। चूँकि जनसंगठन और बच्चों के अधिकारों के आंदोलनों ने इस छिपे संकट से पर्दा उठाकर सत्ता के चेहरे की अमानवीयता उजागर की है, इसलिये भाजपा ने कुपोषण मिटाने के लिये भी युद्ध छेड़ने की बात कही है तो कांग्रेस चालू कार्यक्रम आगे बढ़ायेगी। इस बार के घोषणा-पत्रों में भाजपा, कांग्रेस,



बचपन को झुटलाते घोषणा-पत्र

सचिन कुमार जैन

को अलग-अलग क्षेत्रों में बाँट दिया और उन्हें एक खास सामाजिक वर्ग के रूप में नहीं दर्शाया। एक पूरा हिस्सा गोवंश के लिये है, मंदिर-मठों की भी चिंता की गई है क्योंकि इनसे धर्म की राजनीति भी चलती है। आंगनवाड़ी कार्यक्रम पर सबने वायदे इसलिये कर डाले क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय पूर्व में इस योजना का लोक-व्यापीकरण करने के आदेश दे चुका है।

भाजपा ने बच्चों के लिये कुछ बिन्दु शिक्षा और स्वास्थ्य में डाले हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने सामाजिक क्षेत्रों के तहत एक बिन्दु में अपनी बात कह दी, कांग्रेस ने “बच्चों को एक सामाजिक वर्ग” माना पर बच्चों के अधिकारों को बेहद सीमित नजरिये से देखा। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने भी बेहद सीमित दायरे में तीन बिन्दु डाले हैं। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी को बच्चों के अधिकारों पर काम करने की कोई जरूरत महसूस नहीं हो रही है। तमिलनाडु की ऑल इण्डिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम ने यह तो कहा कि शिशु मृत्यु दर एक बड़ी समस्या है परन्तु बच्चों के अधिकारों पर (शिक्षा के अलावा) उन्होंने कोई दूसरा बिन्दु नहीं उठाया।

सीपीआई और सीपीएम ने आंगनवाड़ी कार्यक्रम (आईसीडीएस) के लोक-व्यापीकरण (हर बस्ती में आंगनवाड़ी केन्द्र की स्थापना) का वायदा किया है परन्तु राष्ट्रीय जनता दल जैसे क्षेत्रीय दल इस विषय पर मौन रहे हैं। उम्मीद तो यह थी कि ये दल ज्यादा संवेदनशीलता के साथ बच्चों के संरक्षण की बात करेंगे। भाजपा ने राष्ट्रीय बाल मजदूर आयोग बनाने का वायदा किया है तो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने बाल मजदूरी को खत्म करने का। इसके अलावा सिर और कंधों पर बोझ उठाने, कचरा बीनते बच्चे या बर्तन धोते बच्चों को ज्यादातर राजनैतिक दल दखल योग्य मुद्दा नहीं मानते हैं।

संविधान संशोधन के बाद शिक्षा का अधिकार अब बच्चों का मूलभूत अधिकार बन गया है। परन्तु भारत की राजनीति इसके प्रति बेहद सजग नहीं दिखती। जो शिक्षा कानून द्वारा लाई जा रही है वह बच्चों के मौलिक अधिकारों को सीमित करता है। इसमें स्कूल-पूर्व शिक्षा और 15 से 18 वर्ष के आयु वर्ग को शिक्षा से पूरी तरह से वंचित किया गया है। समग्र स्कूली शिक्षा का अधिकार

बच्चों को नहीं दिये जाने की मंशा साफ दिख रही है। हमारे यहाँ सबसे गरीब के लिये अलग शिक्षा है और औसत गरीब के लिये अलग ढाँचा है। सरकारी शिक्षा में ही चार वर्ग हैं। राज्य की शिक्षा, केन्द्र का पाठ्यक्रम, केन्द्रीय विद्यालय और खुली शिक्षा व्यवस्था (ओपन स्कूल)। निजी शिक्षा व्यवस्था की तो बात ही छोड़ दें। मध्यप्रदेश के एक सरकारी स्कूल में एक बच्चे पर वर्ष भर में 1600 से 1800 रुपये खर्च किये जाते हैं जबकि केन्द्रीय विद्यालय (यह भी सरकारी है) में यह 18 हजार रुपये होता है।

गौर से देखने पर पता चलता है कि कांग्रेस-भाजपा अब यह नहीं मानती कि शिक्षा से अच्छे व सजग नागरिक पैदा होंगे। कांग्रेस ने नीति बनाई है कि जब बच्चे शिक्षा ले रहे होते हैं तभी उन्हें कर्जदार बना दो ताकि फिर वे वहीं जाएँ जहाँ बाजारवादी नीतियाँ उन्हें ले जाना चाहें, परंतु यह उल्लेखनीय है कि दलित-आदिवासी बच्चों को विश्वविद्यालय स्तर तक निःशुल्क शिक्षा देने का वायदा उन्होंने किया है। भाजपा ने शिक्षा पर ज्यादातर सतही बातें की हैं जैसे सर्वशिक्षा अभियान को बेहतर बनाया जायेगा। पाठ्यक्रमों में बदलाव पर भाजपा की हमेशा रुचि रही है, इस पर घोषणा पत्र में खामोशी के कुछ खास मायने लगते हैं।

भाजपा ने कम से कम मदरसों के विकास की बात की है और घुमंतू सहित वंचित वर्गों की शिक्षा पर ध्यान देने का वायदा किया है। कांग्रेस ने शिक्षा पर खर्च बढ़ाने का वायदा नहीं किया परंतु भाजपा और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत हिस्सा शिक्षा पर खर्च करने की बात कही। जहाँ बुनियादी शिक्षा से सभी मुँह मोड़ रहे हैं वहीं उच्च शिक्षा के मामले में राजनैतिक दलों के दिल और खजाने कर्जे के लिये खुल रहे हैं वहीं उच्च शिक्षा को स्तरीय करने के लिए वे मदद देने को तैयार नहीं है।

बच्चों के स्वास्थ्य का सवाल एक बेहद बुनियादी मसला है। देश की कुल मौतों में से एक चौथाई से ज्यादा मौतें पाँच वर्ष से कम आयु वर्ग में होती हैं। इनमें से ज्यादातर को बचाया जा सकता है। परंतु देश में बच्चों के जीवन-स्वास्थ्य और संरक्षण के बारे में कोई स्पष्ट नीति न होने का खामियाजा ये बच्चे भोगते हैं। हर दो में से एक बच्चा कुपोषित है, चार में से तीन बच्चे खून की कमी के शिकार हैं, डायरिया, मलेरिया और तपेदिक बढ़ रहा है पर बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं का मूलभूत अधिकार नहीं है। कांग्रेस ने बच्चों के स्वास्थ्य पर मौन धारण किया है तो भाजपा ने जननी सुरक्षा योजना के विस्तार की बात की है।

नवजात बच्चों और शिशुओं के लिये विकासखण्ड या जिलास्तरों पर विशेषज्ञ सेवाओं एवं तकनीक की उपलब्धता सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों में सुनिश्चित करने का वायदा किसी ने नहीं किया। इनका निजीकरण जरूर होगा और इसके लिये आम व्यक्ति की थोड़ी-सी कमाई का बड़ा हिस्सा खर्च होता रहेगा। विकलांगता के संदर्भ में भाजपा ने बात उठाई है परंतु कांग्रेस सहित अन्य राजनैतिक दल इस बेहद संवेदनशील मसले पर चुप्पी साधे हुए हैं।

विस्थापित कामगारों के बच्चों की

विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिये नये कार्यक्रम चलाने की मंशा कांग्रेस ने व्यक्त की है परन्तु विस्थापन से बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों को अब भी नजरअंदाज किया गया है। भाजपा के पास अभी विस्थापन के शिकार बच्चों के लिए कोई नीति नहीं है। घटते लिंगानुपात के संदर्भ में घोषणा-पत्रों में नजरिये का अभाव दिख रहा है।

वर्ष 2007 में भारत सरकार ने बच्चों के खिलाफ हिंसा पर अध्ययन का खुलासा किया था कि 77 फीसदी बच्चे हिंसा के शिकार होते हैं। यह हिंसा स्कूलों में, घरों में, खेल के मैदान में, सम्बन्धों की आड़ में या गली-मोहल्ले हर जगह होती है पर अब तक बच्चों के खिलाफ हिंसा रोकने के लिये कोई कानून नहीं बन पाया है। बाल अधिकार आयोग, मानव अधिकार आयोग और महिला-बाल विकास विभाग के नीति निर्देश तो यँ ही खूँटी पर टँगे रहते हैं। इस बार के चुनावों में भी इसके बारे में कोई वायदा नहीं किया गया है।

साम्प्रदायिक हिंसा, आंतरिक हिंसा और आतंकवाद से प्रभावित बच्चों को संरक्षण और उनके मन पर पड़ रहे प्रभावों पर सघन काम की मंशा किसी राजनैतिक दल ने नहीं दिखाई है। बच्चों के व्यापार (चाईल्ड ट्रेफिकिंग) भारत और दक्षिण एशिया के संदर्भ में एक बड़ी खतरनाक स्थिति है। इसके मामले में कानून तो बना है पर प्रक्रिया इतनी जटिल है कि बच्चे आसानी से संरक्षित नहीं हो पाते हैं। यहाँ तक कि पुलिस व्यवस्था की इस समस्या को हल करने में कोई रुचि नहीं दिखती है। बच्चों के हित सुरक्षित करने हेतु राजनैतिक रूप से प्रतिबद्ध प्रक्रिया की आवश्यकता है जिसमें जनप्रतिनिधि खुद भी सक्रिय पहल करें परन्तु किसी भी राजनैतिक दल ने यह प्रतिबद्धता नहीं दिखाई है।

**29, संवाद नगर, नवलखा
इंदौर-452001 (म.प्र.)**

अमीरों के बच्चे भी कुपोषित

आम धारणा है कि कुपोषण का शिकार होने वाले बच्चे वंचित और गरीब तबके के होते हैं, लेकिन आंकड़े कुछ और ही तस्वीर बयां करते हैं। एक सर्वेक्षण के मुताबिक समृद्ध परिवारों के 19.7 और मध्यवर्गीय परिवारों के 33.6 फीसदी बच्चे भी कुपोषित की श्रेणी में आते हैं। भारत में कुपोषित बच्चों की संख्या का प्रतिशत अफ्रीकी देश इथियोपिया से भी अधिक है। क्या इससे हमारी बाल विकास और मध्याह्न भोजन योजनाओं पर गंभीर सवाल नहीं खड़े होते? पंजाब जैसे खाद्य उत्पादक राज्य में भी कुपोषित बच्चों का होना यही बताता है कि हमें संतुलित व पोषक आहार की अपनी धारणाओं में बदलाव लाना होगा।

भास्कर दैनिक
18.10.2010

‘शिक्षा ईंट और चूने से बने मकान की भाँति नहीं है, जिनका नक्शा मिस्त्री पहले से ही तैयार रखता है। शिक्षा तो वृक्ष की भाँति है, जो अपने जीवन की लय के साथ ताल मिलाकर उसके अनुरूप विकसित होता है।’

रवीन्द्रनाथ टैगोर

वही शिक्षा सच्ची व वास्तविक है, जो व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर उसमें सम्पूर्णता लाये, मानव जीवन को सफल बनाने में उसकी सहायता करें। जीवन तथा मानव जाति के मन तथा आत्मा की सम्पूर्णता की अभिव्यक्ति कर मनुष्य और राष्ट्र में सच्चा और अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक हो।

महर्षि अरविन्द

बालक स्कूल में क्यों पिछड़ता है

रूपनारायण काबरा

सामान्यतः स्कूल में बालक की सफलता का मूल्यांकन उसकी अंक-उपलब्धि एवं कक्षा में उसके स्थान से किया जाता है। शिक्षक तो सभी को समान रूप से पढ़ाते हैं फिर भी छात्रों के प्राप्तांकों में, उनकी उपलब्धि में इतना अन्तर क्यों?

छात्रों के निकट अध्ययन से, उनसे वार्तालाप करके ये तथ्य सामने आए कि उनकी सफलता या असफलता के आधार निम्न हैं

- बालक के पिछड़ जाने का एक कारण यह भी हो सकता है कि वह एक ऐसे परिवार से है जो कि निर्धन है जहाँ उसे संतुलित, पौष्टिक भोजन, स्वच्छ, स्वास्थ्यप्रद आवास एवं अच्छे वस्त्र नहीं मिलते हैं, जहाँ उसे अपनी सहज बाल-आकांक्षाओं का दमन करना पड़ता है ऐसे बच्चे अन्य विद्यार्थियों के समक्ष अपने को हीन समझते हैं, लज्जित होते हैं। वे तुलना करते हैं कौन क्या पहनता है, क्या खाता है, सवारी पर आता है, सुन्दर बैग रखता है, अच्छी सुन्दर नोट बुक्स एवं पेन, पेंसिल रखता है। वह यह भी देखता है कि औरों के पिता क्या करते हैं, उनका पद-प्रतिष्ठा कैसी है और ये सब तुलनाएँ जब बहुत बड़ा अन्तर प्रकट करती है तो बच्चा दुखी रहता है। यह दुख, यह हीन भावना उसे कचोटती रहती है और वह मुखरित नहीं हो पाता।

- यदि बालक को अपनी भौतिक, शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं के विकास के प्रचुर अवसर मिलते हैं, उसके माता-पिता उसके साथ अच्छी तरह पेश आते हैं तो वह कक्षा में भी अच्छा महसूस करता है। घर से वह लेकर आता है एक संस्कार, एक पृष्ठ भूमि, सम्प्रेषण कौशल तथा संकोच एवं झिझक, इस प्रकार कई सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव लेकर

आता है जो उसके सीखने को प्रभावित करते हैं। नकारात्मक प्रभावों वाला बालक पिछड़ जाता है।

- यदि बालक जिन जीवन मूल्यों को अपने घर में तथा पास-पड़ोस में देखता है उनमें और स्कूली मूल्यों में अन्तर्विरोध होता है तो बालक पशोपेश में पड़ जाता है, भ्रमित हो जाता है। आचरण एवं व्यवहार के वे तरीके जो परिवार और पड़ोस में देखने को मिलते हैं और जिनके लिये बालक को शाबासी मिलती है संभव है कि स्कूल में ऐसी बातों एवं व्यवहार के लिये उसे दण्ड मिले तो उसकी मानसिक स्थिति में एक अस्थिरता आ जाती है। स्कूल के लक्ष्यों को, मूल्यों को घर में समर्थन मिल भी सकता है और नहीं भी। घर और पड़ोस में जिस आचरण को उचित एवं अनुमोदित माना जाता है उसे स्कूल में समर्थन प्राप्त न हो तो बालक उलझन में पड़ जाता है। बालक को अभिजात्य वर्ग के आचरण विशेष प्रभावित करते हैं। बालक के सीखने पर वातावरण का गहरा असर पड़ता है।

- यदि बालक किसी अल्पसंख्यक वर्ग या जाति का हो अथवा वह तथाकथित समाज के उपेक्षित वर्ग का हो जिनके प्रति समाज में भेदभाव बरता जाता है, ऐसे बच्चों को भेदभाव का सामना करना

विद्यार्थी जिस पिछड़ेपन की अवस्था का सामना करता है वह उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि और परिवेश से उत्पन्न होती है और अंशतः वह स्कूल से ही पैदा होती है। सामाजिक पृष्ठभूमि और शिक्षा संस्थानों का वातावरण दोनों ही मिलकर सफलता-असफलता का कारण बनते हैं क्योंकि इनमें गहरा पारस्परिक संबंध है।

पड़ता है। निम्न वर्ग के बच्चों को स्कूल में भी जब निम्न वर्ग मान लिया जाता है तो अध्यापक उनसे अपेक्षाएँ भी निम्न ही रखते हैं और ध्यान भी कम ही देते हैं।

- यदि पिता के स्थानान्तर के कारण या अन्य परिस्थितियों से बच्चे को स्कूल बदलना पड़ता है तो यह परिवर्तन भी बच्चे को सामान्य नहीं होने देता है। भ्रमणशील जातियों के बच्चे तो इसी कारण अनियमित रहते हैं एवं असफल रहते हैं।

- यदि बालक ऐसे प्रान्त से आये जहाँ की भाषा नये वातावरण से भिन्न हो अथवा छात्र को शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से न दी जावे तो उस पर एक नई भाषा सीखने का विशेष बोझ बढ़ जाता है। यदि ऐसे बालक की बोली का तिरस्कार या उपहास हो तो वह असामान्य हो उठता है।

- यदि बालक ऐसे परिवेश में रहता है यहाँ पढ़ाई को अहमियत ही नहीं दी जाती है बल्कि माता-पिता की यह धारणा हो कि बच्चा यदि पढ़ाई में ज्यादा ध्यान देगा तो घर के काम का नहीं रहेगा। ग्रामीण और नागरिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक एवं भाषागत अन्तर के कारण भी स्कूल में बालक की सफलता पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

- विभिन्न परिस्थितियों एवं परिवेश में एक लड़की की शिक्षा का मूल्य अलग-अलग आंका जाता है। लड़कियों की कितनी पढ़ाई उचित है, इसके बारे में अलग-अलग धारणाएँ हो सकती हैं। कुछ समूह तो लड़कियों को स्कूल भेजने तक का विरोध करते हैं विशेषकर सह-शिक्षा वाले स्कूलों में। कुछ की तो यही मान्यता है कि एक बच्चे की सामाजिक आर्थिक विकास संभावना बढ़ाने में स्कूल का कोई महत्व नहीं होता है। इसलिये वे स्कूल में सफलता को कोई महत्व नहीं देते हैं।

- घर का दूषित वातावरण,

माता-पिता का प्रायः लड़ते-झगड़ते रहना, पृथक अध्ययन-कक्ष का अभाव, किसी शारीरिक दोष का होना यथा ऊँचा सुनना, कम दिखाई देना, रक्ताल्पता या अन्य बीमारी इत्यादि कारण भी बालक के सीखने को कुप्रभावित करते हैं।

● यदि बालक का कोई मित्र न हो तो उसका एकाकीपन उसे असामान्य बना देता है। इसके विपरीत यदि कुछ लोग उसका उपहास करने लगते हैं और उसकी कोई भी सुनता नहीं है तो वह अन्तर्मुखी हो जाता है और उसकी सीखने की क्रिया शिथिल पड़ जाती है। कभी-कभी कोई अध्यापक भी पीछे पड़ जाता है तो भी छात्र दुःखी हो उठता है।

● बालक के स्कूल में पिछड़ने का कारण अध्यापक वर्ग, पाठ्यक्रम, परीक्षा विधि तथा उस समाज के साथ स्कूल का संबंध जिसका कि बालक एक अंग है

ये सब बातें भी उसकी सफलता की संभावनाओं को प्रभावित करती हैं।

ऐसे अध्यापक जो तैयारी करके नहीं आते और अयोग्य हैं, ऐसा पाठ्यक्रम जो बिल्कुल असंगत है, स्कूल का अन्य साजो-सामान जो अपर्याप्त या बेकार है, ऐसे कर्मचारी जो गरीबों के बच्चों के साथ भेदभाव या जाति-भेद और भाषा-भेद, की नीति का पालन करते हैं ये सब बातें विद्यार्थी की सफलता को प्रभावित करती हैं।

प्रायः स्कूलों की शैक्षिक प्रक्रियाओं पर बहुसंख्यक संप्रदायों का प्रभुत्व चलता है जिसके कारण उनसे भिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि में पले विद्यार्थियों के लिये विकास के अवसर सीमित हो जाते हैं। सामाजिक पृष्ठभूमि, अलगाव, गलत पाठ्यक्रम तथा प्रशासकीय विषमता ऐसी स्थिति में डाल दें जिसमें सफलता पाने की संभावनायें कम हो जाती हैं।

संसार के सभी राष्ट्रों में चाहे वे विकसित हों या विकासशील हो, जहाँ कम या ज्यादा मात्रा में नागरिकीकरण और औद्योगिकीकरण हो चुका है, विद्यार्थियों की काफी बड़ी संख्या पिछड़ेपन की स्थिति में स्कूलों में दाखिल होते हैं। विद्यार्थी जिस पिछड़ेपन की अवस्था का सामना करता है वह उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि और परिवेश से उत्पन्न होती है और अंशतः वह स्कूल से ही पैदा होती है। सामाजिक पृष्ठभूमि और शिक्षा संस्थानों का वातावरण दोनों ही मिलकर सफलता-असफलता का कारण बनते हैं क्योंकि इनमें गहरा पारस्परिक संबंध है। बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं इनके पिछड़ेपन का निदान तो हम कर चुके हैं अब आवश्यकता है निराकरण की।

**'किशोर कुटीर' ए - 438,
वैशालीनगर, जयपुर - 302021**

श्रम का महत्त्व

भारती शर्मा

श्रम चाहे कैसा भी और किसी का भी क्यों न हो, उसका सम्मान किया जाना चाहिए। श्रम कभी भी छोटा या हीन नहीं होता। अगर निष्ठा और ईमानदारी से किया जाए तो श्रम हमेशा महान् और पूज्य होता है। इस संबंध में महात्मा ईसा मसीह अपने उपदेशों में एक कथा सुनाते थे, जो इस प्रकार है

जब ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की तो उन्होंने प्रत्येक वस्तु की देखभाल के लिए एक-एक परी को नियुक्त किया। अन्य वस्तुओं के समान घास की देखभाल के लिए भी एक परी को नियुक्त किया गया। मगर वह परी अपने इस काम से संतुष्ट नहीं थी। उसकी शिकायत थी कि ईश्वर ने अन्य परियों को देखभाल

के लिए बड़ी-बड़ी और महत्वपूर्ण वस्तुएं सौंपी हैं, मगर उसे घास जैसी साधारण वस्तु दी गई है। इसलिए उसने घास की निगरानी भली प्रकार नहीं की।

परी की लापरवाही से घास सूख गयी। इससे जमीन में पानी न रह सका और वह भी सूख गयी। जमीन सूखने से पेड़ और जंगल भी सूखने लगे। पेड़ सूखने से धरती पर फल, फूल तथा सब्जियों का अभाव हो गया। जंगल सूखने से वर्षा में कमी आ गयी। इससे फसल भी कम हुई। नतीजा यह हुआ कि सृष्टि पर रहने वाले पशु, पक्षी और मनुष्य भी परेशान हो गये। तब फल, फूल, पेड़, और पशु-पक्षी आदि की देखभाल करने वाली परियां घबराकर ईश्वर के पास गयी और संसार में बढ़ रहे संकटों

की चर्चा की। ईश्वर ने घास की देखभाल करने वाली परी को अपने पास बुलाया और उससे पूछताछ की।

परी ने अपनी शिकायत स्पष्ट शब्दों में बतला दी। इस पर ईश्वर मुस्कराये और बोले- इस संसार में कोई भी काम छोटा या हीन नहीं होता। तुमने घास की निगरानी को छोटा काम समझकर उसमें लापरवाही रखी। मगर उससे पूरा सृष्टि-चक्र ही अव्यवस्थित हो गया। ध्यान रहे, इस संसार में सब कुछ एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। एक के बिना दूसरा व्यर्थ है। इसलिए कभी किसी काम को छोटा या हीन नहीं समझना चाहिए।

परी को अपनी गलती समझ में आ गयी। उसने अपनी लापरवाही के लिए क्षमा माँगी और अपने काम पर लग गयी।

**10/611, कावेरी पथ,
मानसरोवर, जयपुर-302020**

स्वास्थ्य एवं संस्कारों पर ध्यान दें

हीरालाल छाजेड़

बौद्धिक शिक्षा के विकास के साथ-साथ बच्चों के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है किन्तु आजकल माता-पिता अपने इस दायित्व के प्रति इतने सजग नहीं दिखाई देते। यही चिन्ता ज्यादा रहती है कि बच्चा स्कूल में ज्यादा से ज्यादा अंक कैसे प्राप्त करे। जब माता-पिता ही प्रारम्भ से बच्चे की जीवन शैली पर ज्यादा नजर नहीं रखते तब अबोध बच्चे अपनी रुचि के अनुसार जो भी उन्हें पसन्द आता है क्रम बना लेते हैं। अभिभावक समय के अभाव में ध्यान नहीं देते।

आजकल स्कूली बच्चों को कम्प्यूटर पर चैटिंग की इतनी अधिक लत लग जाती है कि परीक्षा के दिनों में पढ़ाई के बीच में अंतराल लेने के दौरान भी वे चैटिंग करना ही पसंद करते हैं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 20 से अधिक स्कूलों में 15 से 18 साल के 2000 से अधिक बच्चों पर किये गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि पचास प्रतिशत बच्चे परीक्षाओं के बीच भी खाली समय के दौरान कम्प्यूटर पर चैटिंग कर तरोताजा होना पसंद करने लगे हैं। एक निजी अस्पताल के मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यावहारिक विज्ञान विभाग द्वारा स्कूली छात्रों पर किए गए सर्वेक्षण के दौरान भी यह बात सच साबित हुई है। इतना ही नहीं हर सौ में से छह बच्चे अपनी याददाश्त बढ़ाने के लिए कोई न कोई दवा लेते हैं। जबकि बीस प्रतिशत बच्चे तो पढ़ाई के दौरान खाने के लिए समय निकालना समय की बर्बादी मानते हैं इसलिए कभी लंच और कभी डिनर नहीं करते हैं। इसी प्रकार करीब 25 प्रतिशत लड़के लड़कियाँ पढ़ाई के बीच में न उठना पड़े इसलिए वे खाना न खाकर

केवल चिप्स, कोल्ड ड्रिंक, चाय या फिर ऐसी ही कुछ मन पसन्द चीज खाकर काम चलाना पसन्द करते हैं। ऐसे खाद्य-पदार्थों से उनके शरीर में सभी प्रकार के तत्वों की आवश्यक पूर्ति नहीं हो पाती और स्वास्थ्य गिरता जाता है। आउट डोर गेम्स व बाहर पैदल घूमने, व्यायाम आदि न करने से श्रम के अभाव में मोटापा व अन्य कई रोगों के शिकार हो जाते हैं। लगातार घंटों पढ़ाई में जुटे रहते हैं यह न जानते हुए कि एक औसत इंसान लगातार 45 मिनट तक ही याद कर सकता है इसलिए इसके बाद एक अंतराल की जरूरत होती है चाहे वह अंतराल 10 मिनट का ही क्यों न हो।

खेलकूद के लिए पर्याप्त समय दें :

आम तौर पर आज के बच्चों का आउटडोर गेम्स के प्रति लगाव बहुत कम हो गया है। बच्चे या तो इनडोर गेम्स या कम्प्यूटर गेम्स खेलना पसन्द करते हैं। इन खेलों से न तो शारीरिक विकास हो पाता है और न ही पर्याप्त मानसिक विकास जितना कि अपेक्षित होता है कुछ अभिभावकों की सोच होती है। कि आउटडोर गेम्स से केवल शारीरिक विकास ही होता है जबकि सच यह है कि खेलने-कूदने से शारीरिक विकास के साथ-साथ उनका मानसिक



विकास भी बहुत अच्छे तरीके से होता है। अतः बच्चों की इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उन्हें खेलकूद के लिए प्रोत्साहित करें।

बच्चों की भावनाओं को समझें :

छोटे बच्चों के मानसिक विकास के लिए उनकी भावनाओं को समझें। माता-पिता समय के अभाव में उनकी भावनाओं को समझने का कतई प्रयास नहीं करते। वे जाने अनजाने उनकी भावनाओं को चोट पहुँचाते रहते हैं जिसका उनके बालमन पर बुरा असर पड़ता है और मन आहत होता है। बच्चे के मानसिक विकास हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि आप उसकी प्रत्येक बात को महत्व दें। उसकी छोटी उम्र का तकाजा समझकर यह न सोचे कि इसका क्या है यह तो अभी बहुत छोटा है। आज के युग में छोटी उम्र के बच्चे काफी समझदार हो जाते हैं यदि आप उसकी बात को महत्व नहीं देंगे तो वह भी आपको नकारना शुरू कर देगा और आपके प्रति लगाव व सम्मान उसका कम होता चला जायेगा। हम लोगों की आदत होती है छोटे बच्चे को उसकी उम्र का हवाला देते हुए डाँट देते हैं, तुम चुप रहो कितनी बार कहा तुम अभी छोटे हो समझोगे नहीं। यह बात बार-बार सुनकर बच्चे मायूस हो जाते हैं उनके मानसिक विकास में बाधा पहुँचती है। बच्चों की भावनाओं को महत्व दें उन्हें शान्ति व प्रेम से सुनकर सही तरीके से उत्तर देकर संतुष्ट करें। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार डाँट देने से बचपन से ही आक्रोश पैदा हो जाता है।

आजकल बच्चे उम्र से पूर्व ही परिपक्व हो रहे हैं, उन्हें उसी तरीके से हैंडिल करने का प्रयास करें। उनकी बातों को ध्यान से सुनें, उन पर मनन करें फिर सन्तोषप्रद



जवाब दें। उन्हें हतोत्साहित कदापि न करें बल्कि उनकी छोटी से छोटी बात को इस प्रकार महत्व दें कि उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हो। समय निकालकर अपनी नई पौध को विकसित व पल्लवित होने में पूर्व सहयोग करें।

प्रारम्भ काल से ही बच्चों को सुसंस्कारों से संस्कारित करें। बालमन में जो अंकुर आप उनके मन में अंकुरित कर देंगे भविष्य में उसी प्रकार के फल लगेंगे। बचपन के संस्कार जीवनभर कायम रहते हैं। अतः अपने बच्चों, के यार-दोस्त मित्रों पर पैनी नजर रखें कि कोई मित्र आचरणों से गिरा हुआ तो नहीं है। बच्चों के प्रति माँ का दायित्व विशेष होता है किन्तु आजकल अनेक माताएँ अपने कैरियर के चक्कर में अपने मातृत्व के कृतत्व को नजर अंदाज करती जा रही हैं। उन्हें अपने बच्चों के कैरियर व भविष्य के प्रति उतनी चिन्ता नहीं जिनती स्वयं को प्रतिस्पर्धा की दौड़ में आगे निकल जाने की फिक्र है।

कुछ छोटे बच्चे ए.डी.एच.डी. (अटेंशन डेफिसिट हाइपर एक्टिविटी डिसऑर्डर) के शिकार होते हैं। ऐसे बच्चे घर में तोड़फोड़ शैतानियाँ बहुत ज्यादा करते ही हैं बल्कि दूसरों के घरों में भी जाने पर भी वे बाज नहीं आते। उनकी हरकतों से मम्मी-पापा दुःखी हो जाते हैं। चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट काउंसलर्स के अनुसार ऐसे बच्चे ए.डी.एच.डी मानसिक रोग से ग्रस्त हैं। स्कूल में भी ऐसे बच्चे अन्य

बच्चों की कॉपी-किताब फाड़ना उनका खाना बिखेर देना, पानी बहा देना या किसी के ऊपर डाल देना, मुँह में चॉक डालकर सिगरेट पीने जैसी हरकत करना, कॉपी- किताब को मोबाइल की तरह कान से लगाकर बात करना ऐसी अनेक हरकते उनकी रोजमर्रा में सम्मिलित रहती हैं।

ये सब बातें बच्चों के नार्मल बिहेवियर में नहीं आती मगर सभी बच्चे अति सक्रिय ए.डी.एच.डी. के शिकार हों यह जरूरी नहीं है। ऐसे बच्चों को शारीरिक व मस्तिष्कीय ऊर्जा का सही दिशा में गाइड करने में उसका दिमाग अक्षम होता है। ऐसे बच्चों में गुस्सा तो हर समय उनकी नाक पर चढ़ा रहता है, कब बात बे बात हर किसी को बिगड़कर पीटने लगते हैं। कोई उनका खिलौना या समान छू भर लेता है तो क्रोध में तोड़फोड़ करने लगते हैं, चीखने-चिल्लाने लगते हैं। ऐसे बच्चों को चाइल्ड साइकोलाजिस्ट को दिखाकर दवा और बिहेवियरल थेरेपी की सहायता से लाभ मिल सकता है। सही गाइडेन्स मिलने से ऐसे बच्चे विशेष योग्यता प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन अतिरिक्त सावधानी और देखभाल की जरूरत होती है।

सार संभाल हेतु कोई कठोर नियम नहीं बनाए जा सकते आखिर बच्चे तो बच्चे ही होते हैं कोई मशीन नहीं। प्रत्येक बच्चा एक दूसरे से भिन्न होता है। जरूरत है एक स्वस्थ पारिवारिक माहौल व वातावरण की जिसका बच्चे के मनोविज्ञान पर गहरा असर पड़ता है। बच्चे की मूल प्रवृत्ति पर आपका वश नहीं है लेकिन वातावरण बनाने का दायित्व आपका ही होता है। अभिभावकों को बच्चे के प्रति प्यार के इजहार में कोताही नहीं बरतनी चाहिए। विशेषज्ञों के अनुसार बच्चा पुनः आश्वस्त होता है कि वो परिवार का एक अहम् सदस्य है, जिसे घर के सभी लोग प्यार करते हैं।

**जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार,
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)**

धूम्रपान घातक है



**तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट
सेवन के कुपरिणाम**



**खांसी, दमा, टी.बी.,
पक्षाघात एवं पेट के रोग**

**फेफड़ा, मुँह, होंठ, वृक्क
गाल-ब्लेडर का कैंसर**

**अंधापन, बहरापन,
थायरॉयड, हृदय रोग,
रक्तचाप**

पसंद आपकी!

संस्कारों को समर्पित : ज्ञानशाला

वर्तमान युग मानव जाति के अस्तित्व के लिए चुनौतीपूर्ण समय है। सबसे पहली समस्या है आतंकवाद, उग्रवाद की। दूसरी समस्या है जल संकट। तीसरी है पर्यावरण प्रदूषण। चौथी है नैतिक मूल्यों का पतन।

आचार्य तुलसी युग की समस्याओं को समझते थे और उसके समाधान के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। नैतिक मूल्यों की समस्या के लिए उन्होंने सर्वप्रथम अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों में विकास हेतु जीवन विज्ञान का अभिनव क्रम प्रारंभ किया। बालकों में संस्कारों का बीजारोपण सहजता के साथ व स्थायी रूप से किया जा सकता है, इसलिए उन्होंने ज्ञानशाला का एक व्यवस्थित क्रम प्रारंभ करवाया जिसके माध्यम से सदसंस्कारों, जैन दर्शन, जीवन विज्ञान, अणुव्रत आदि का परिचय बालकों को कराया जा सकता है।

संस्कार क्या है ?

बालकों में अच्छी आदतों व आदर्शों का निर्माण है संस्कार। जिससे व्यक्ति का जीवन सुख व शांति से व्यतीत होता है एवं वह स्वस्थ समाज व राष्ट्र के निर्माण का मुख्य आधार होता है। संस्कारों का अर्थ है अहिंसा, मैत्री, सत्य, सहिष्णुता, समता, मानवीयता आदि गुणों का जीवन में समावेश।

वर्तमान युग में सारा विश्व संस्कार विहीनता की भयंकर समस्या से जूझ रहा है। महानगरों में शराब, ड्रग्स, ड्रिफिंग या अश्लील फिल्मों देखना आधुनिक जीवनशैली का अंग माना जा रहा है।

एक सर्वे के अनुसार पार्टियां, स्मोकिंग, धूम्रपान, ड्रिफिंग और अश्लील फिल्मों देखने में लड़कियाँ भी पीछे नहीं हैं। दिल्ली, गुडगांव व नोएडा के 1000 (एक हजार) छात्रों का सर्वे किया गया जो

मुनि अमृतकुमार

14-17 वर्ष की आयु के थे। उनमें 541 लड़के और 459 लड़कियाँ थी। मनोचिकित्सक समीर पारेख ने इस अध्ययन का नेतृत्व किया और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश बच्चे बुरी संगत की चपेट में हैं और खतरनाक स्तर पर पहुँच चुके हैं। जिन आदतों को सामाजिक दृष्टि से वर्जनीय माना जाता है उनको वे बड़ी सहजता के साथ काम में लेते हैं। उनमें धूम्रपान, मद्यपान, अश्लीलता है। इन सब गलत आदतों के लिए आधुनिक साधनों इंटरनेट, टीवी, प्रतिबंधित साइट्स, हिंसात्मक दृश्यों का उपयोग भी शामिल है। इन सबके कारण छोटे बच्चे अनुशासनहीन, उद्दण्ड, क्रोधी, हिंसक और मानसिक विकृतियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं। इस दृष्टि से वर्तमान में देखा जाए तो संस्कारों का अत्यधिक पतन हो रहा है।

केवल भारत में ही नहीं सबसे विकसित देश अमेरिका में 9वीं से 12वीं तक के स्कूली बच्चों के एक सर्वे का निष्कर्ष चौंकाने वाला है।

9.9 : - छात्र शराब पीकर कार या अन्य वाहन चलाते पाए गए।

20.2 : - छात्र अफीम जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करते मिले।

35.9 : - छात्र अपने सहपाठियों के साथ हाथापाई करते हैं।

10.2 : - छात्र कार चलाते वक्त कभी सीट बेल्ट नहीं बाँधते।

29.8 : - छात्रों में स्कूली सामान चुराया या सम्पत्ति का नुकसान पहुँचाया।

21.1 : - बच्चे दिन में तीन घंटे से ज्यादा कम्प्यूटर पर फालतू समय बिताते हैं।

25.6 : - बच्चे 13 साल की उम्र से पहले ही शराब चख चुके थे।

18.5 : - छात्र स्कूलों में छुरा, चाकू या पिस्तौल लेकर आए।

43.3 : - स्कूली छात्र शराब का सेवन करते हैं।

23.0 : - छात्रों में सिगरेट पीने की आदत है।

36.5 : - बच्चे दुपहिया वाहन चलाते वक्त हेलमेट नहीं लगाते।

12.9 : - बच्चों में सिगरेट खरीदते वक्त विक्रेताओं ने उम्र नहीं पूछी।

8.0 : - बच्चों में तम्बाकू चबाने की आदत मिली।

37.2 : - बच्चे दिनभर में 3 घण्टे से अधिक टीवी देखते हैं।

संस्कार निर्माण

व्यक्ति संस्कार कैसे प्राप्त करते हैं? संस्कार 4 प्रकार से प्राप्त होते हैं 1. आत्मिक-नैसर्गिक 2. आनुवांशिक 3. संगति से प्राप्त 4. शैक्षिक

वर्तमान में जो सामाजिक परिवेश है वह संस्कारों के निर्माण में सहायक नहीं है। भले ही वह पारिवारिक वातावरण हो, सामाजिक स्थिति हो अथवा शैक्षिक पाठ्यक्रम हो। इन तीनों से संस्कारों का निर्माण नहीं हो रहा है। इस कमी को पूरा



करने के लिए आचार्य तुलसी ने संघीय स्तर पर एक अभिनव क्रम पर बल दिया। जिसके माध्यम से ऐसे वातावरण का निर्माण हो सके जिससे भावी पीढ़ी स्वयं के जीवन का उत्तम निर्माण, समाज के सामने आदर्शों का प्रस्तुतीकरण और देश के लिए उन्नत राष्ट्रीय चरित्र की स्थापना कर सके। वह क्रम है ज्ञानशाला। जिसका सीधा अर्थ है सद्संस्कारों का निर्माण। उसमें मुख्य है त्याग की भावना का विकास, अच्छे आचरण का जीवन में प्रवेश, सेवा की भावना, कर्तव्य के प्रति निष्ठा और स्वयं को अनुशासित करने की कला का निर्माण।

जैन दर्शन जीवन को पूर्णता की ओर ले जाने वाला महान् दर्शन है। पूर्णता के लिए तीन बातों पर इसमें विशेष बल दिया गया। वे इस प्रकार हैं 1. सम्यक् दर्शन 2. सम्यक् ज्ञान 3. सम्यक् चारित्र।

ज्ञानशाला एक अभिनव कार्यक्रम है जिसके माध्यम से जीवन में तीनों का विकास संभव है। इस क्रम से सम्यक् दृष्टिकोण, सही ज्ञान और कुशल चारित्र का निर्माण होता है।

जैन दर्शन केवल एक धार्मिक परंपरा न होकर जीवन की वैज्ञानिक पद्धति है। इसके माध्यम से सुदृढ़ संस्कारों का निर्माण किया जा सकता है। ज्ञानशाला का मुख्य आधार है जैन विद्या का समुचित शिक्षण प्रशिक्षण उसके साथ-साथ व्यक्तित्व निर्माण के विभिन्न प्रयोग, स्वस्थ जीवन के लिये जैनयोग का प्रशिक्षण और जैन इतिहास, परंपराओं व संस्कृति का परिचय, इन्हीं स्तम्भों के आधार पर ही उन्नत, आदर्श और सुखी जीवन का निर्माण हो सकता है।

आचार्य तुलसी की कार्यशैली थी-चिन्तन, निर्णय और क्रियान्विति। इनमें व्यवधान उनको मान्य नहीं था। वर्तमान युग व्यवस्था कौशल का युग है। समुचित व्यवस्था के बिना लक्षित परिणाम को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी को ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने कहा

था 'अव्यवस्था यथेष्ट फल नहीं देती इसलिए ज्ञानशाला को पूरी व्यवस्था के साथ चलाया जाए यह संकल्प बन रहा है।'

बिना समुचित व्यवस्था के सफल व निरंतर ज्ञानशाला का संचालन संभव नहीं है। इसलिए व्यवस्था पक्ष पर गंभीरता से निरंतर ध्यान देते रहना अपेक्षित है।

कैसे हो ज्ञानशाला प्रबंधन?

1. कुशल प्रशिक्षण 2. कुशल कार्यकर्ता 3. उपयुक्त स्थान 4. उपयुक्त संसाधन 5. अपेक्षित सामग्री 6. योजना और संवाद 7. ज्ञानार्थी सम्पर्क।

सबसे पहली अपेक्षा है संख्यात्मक और गुणात्मक प्रशिक्षकों की उपलब्धता। 10 घर अथवा 10 ज्ञानार्थियों पर एक प्रशिक्षित प्रशिक्षक। दूसरी अपेक्षा है व्यवस्था के सम्यक् संचालन के लिए अच्छे कार्यकर्ताओं का चयन। प्रत्येक ज्ञानशाला में कम से कम चार कार्यकर्ता अपेक्षित हैं। तीसरी अपेक्षा है उपयुक्त स्थान का चयन। सामूहिक कार्यक्रम हेतु हॉल व कक्षानुसार अलग-अलग कमरों की व्यवस्था।

चौथी अपेक्षा है अपेक्षित संसाधनों की व्यवस्था। पूरा बजट बना कर उसके अनुसार व्यवस्था करना।

पाँचवी अपेक्षा है अपेक्षित सामग्री का नियोजन। ज्ञानार्थी उपासक बैग, प्रशिक्षक उपासना बैग, ज्ञानशाला बैनर, कक्षा पट्टिका, ज्ञानशाला फार्म, रजिस्टर व पुस्तकें आदि।

छठी अपेक्षा है योग्य बच्चों को इस उपक्रम से जोड़ना। उनसे सम्पर्क, प्रेरणा आदि के द्वारा।

इन सबके लिए ज्ञानशाला संचालन मण्डल का गठन किया जाए, व्यवस्था हेतु संयोजक व प्रशिक्षण कार्य के लिए मुख्य प्रशिक्षक का चयन कर सभी कार्यों को विधिवत सम्पादित किया जाए तो निस्संदेह ज्ञानशाला का अभिनव क्रम स्थायी व प्रभावशाली ढंग से संचालित किया जा सकता है।



तशीले मादक
पदार्थों के
सेवन से
निम्न रोग
होते हैं

यकृत का बढ़ जाना

हिपेटाइटिस

पीलिया

सिरोसिस ऑफ लीवर

पेट में पानी का भरना

पेट्टिक अल्सर

विटामिन्स की कमी

बेहोशी

उच्च रक्तचाप

अम्लीय शून्यता-विषाक्ता

एड्स और एच.आई.वी.



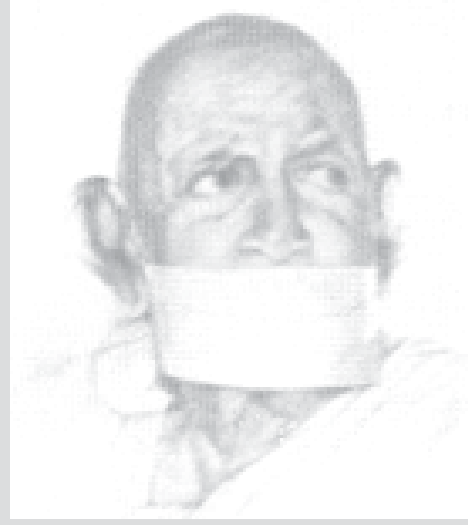
पसंद आपकी!



अणुव्रत, यानी छोटे-छोटे व्रत
सबके लिए सरल और संभव
अणुव्रत : महाव्रत का प्रथम सोपान
जिसके पालन में
न जात-पात का बंधन,
न मजहब की दीवार
इसमें न कोई पूजा-पाठ
न ही कोई उपासना-पद्धति
केवल सद्व्यवहार, सदाचरण
मन से, वचन से, कर्म से
न किसी को सताएं,
न किसी से झूठ बोलें
न चोरी करें, न छीनें,
न आवश्यकता से अधिक संचय करें और
न वासनाओं के वशीभूत बनें।

बस
इतने से ही होता है, अणुव्रत का पालन
और इसी से उगता है
समता, सद्भावना और शांति का सूरज
यही मनुजता का श्रेय भी है और प्रेय भी।
बीसवीं शती के
ऐसे संत-शिरोमणि अणुव्रत प्रणेता
नर से नारायण बन जाने वाले
आचार्य श्री तुलसी की
पावन स्मृति को बारंबार नमन्
शत-शत बार नमन्।

● ए.एल. श्रीवास्तव, लखनऊ (उ.प्र.)



शत-शत नमन

अणुव्रत प्रवर्तक - आचार्य तुलसी

त्याग-तपस्या-जनसेवा का संगम था तुलसी,
मानवता के घावों पर तो मरहम था तुलसी।
जन-मानस में विश्व-प्रेम का सरगम था तुलसी,
घोर अंधेरे में आशा का पूनम था तुलसी।।

नैतिक आदर्शों की चलती-फिरती थी वह तस्वीर,
नील गगन सा ऊंचा था वह सागर सा गंभीर।
अणुव्रत-प्रवर्तक आचार्य तुलसी था धर्म-धुरंधर धीर,
बड़ा क्रांतिकारी था वह, कहने को भले ही फकीर।।

● प्रो. उदय भानु हंस, हिसार (हरियाणा)

श्रद्धावज्रतः

निर्मल एम. रांका • नरेन्द्र एम. रांका
कुलदीप • महिपाल • विनय • पंकज रांका कोयम्बटूर- बगड़ीनगर

MAHAJAN ENTERPRISES

655, Oppankara Street, COIMBATORE - 641001 (T.N.)

Tel. : 0422-4361550(O), 2550105(R) • E-mail : mahajancbe@yahoo.com

M: 09443250152

लोकजीवन में पर्वों और त्योहारों का बहुत महत्व : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, १७ अक्टूबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में महावीर सेवा सदन कोलकाता द्वारा विकलांगों को निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रदान किए गए।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा 'भारतीय लोकजीवन में पर्वों और त्योहारों का बड़ा महत्व है। आज विजयदशमी पर्व है। स्थान-स्थान पर रावण के पुतले जलाए जा रहे हैं। रावण को बुराई का प्रतीक माना गया है। यह पर्व अन्याय पर न्याय की विजय को प्रतिबिंबित करता है। रावण में कुछ दुर्लभ गुण और विशेषताएं थीं। जैन रामायण में उसे चरित्रनिष्ठ माना गया है। किन्तु एक बड़ी भूल के कारण महान विद्वान और पराक्रमी रावण अपने कुल-परिजन सहित विनष्ट हो गया। आज का दिन इसके लिए प्रेरित करता है कि हम अपने भीतर का गहराई से अवलोकन करें कि कहीं बुराईरूपी रावण तो हमारे भीतर विद्यमान नहीं है।'

आचार्यप्रवर ने कहा 'संसार में दुःख है तो उसे दूर करने वाले लोग भी हैं। वे अपने स्तर पर, अपनी सामर्थ्य भर सेवा कार्य में स्वयं को नियोजित करते हैं। महावीर सेवा सदन एक ऐसा ही संस्थान है। यह संस्थान विकलांगों की सेवा के लिए समर्पित है। शारीरिक असमर्थता क्या होती है, इसे वे ही जान सकते हैं, जो इसका दर्द भोग रहे हैं। सेवा ऐसा कार्य है जो व्यक्ति को दूसरों से जोड़ता है। जब

समिति द्वारा अणुव्रत परीक्षाएं

सायरा, 25 सितंबर। अणुव्रत समिति सायरा द्वारा पिछले 15 वर्षों से अणुव्रत परीक्षा कराई जा रही हैं। इस वर्ष 2010-2011 की अणुव्रत परीक्षाएं रा.सी.उ.मा. विद्यालय सायरा, रा.उ.प्रा. विद्यालय काम्बा, ठिकोड़ा, ध्याण

तक इन्द्रियों की शक्ति क्षीण न हो, शरीर व्याधिग्रस्त न हो, तब तक समाज की सेवा और अपनी आत्मा की सेवा कर लेनी चाहिए।'

इस अवसर पर जिला कलेक्टर विकास भाले, नन्दलाल टाटिया, महावीर सेवा सदन के अध्यक्ष चतुरसिंह मेहता, हमीरमल सेठिया, सरदारशहर के विधायक अशोक पींचा, जसवंतसिंह मेहता, बच्छराज चोरड़िया एवं सोहनराज सिंघवी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। प्रेम

सरदारशहर, 24 अक्टूबर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चौधमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत के आर्थिक सौजन्य से जैन विश्व भारती द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला जय तुलसी विद्या पुरस्कार इस वर्ष सरदारशहर के दूगड़ उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं राजेन्द्र विद्यालय को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। यह पुरस्कार जीवन विज्ञान एवं मूल्यपरक शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले विद्यालयों को दिया जाता है। दूगड़ विद्यालय के झब्बरमल, कनकमल दूगड़ एवं राजेन्द्र विद्यालय के प्रबंध समिति के अध्यक्ष रणजीत डागा एवं विद्यालय के संस्थापक रंजतमल भाटी, पृथ्वीसिंह को प्रतीक चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया एवं ट्रस्ट की ओर से दोनों विद्यालयों के प्रतिनिधियों को

मेहता एवं नीलम चोरड़िया ने गीत प्रस्तुत किया। डॉ. बी. के. नेवटिया ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए विकलांगों को कृत्रिम पैर वितरित किए।

महाप्रज्ञ सभागार

राजेन्द्र विद्यालय में नवनिर्मित आचार्य महाप्रज्ञ सभागार का लोकार्पण आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में जिलाधीश विकास एस.भाले ने किया। सभागार का निर्माण मूलचन्द विकासकुमार

विद्यालयों में मिले नैतिकता के संस्कार

एक-एक लाख रुपये का चैक समर्पित किया गया। यह पुरस्कार 2004 से इस ट्रस्ट के सहयोग से जैन विश्व भारती के द्वारा प्रदान किया जाता है। पुरस्कार राशि को इस वर्ष से बढ़ाकर दोगुना यानि 2 लाख कर दिया गया है। अब प्रतिवर्ष यह पुरस्कार दो विद्यालयों को दिया जायेगा।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा पुरस्कार से प्रोत्साहित किया जाता है। पुरस्कार प्राप्त करने वाली दोनों स्कूलों को नैतिकता पर विशेष बल देना है। विद्यालयों में नैतिकता के संस्कार दिये जाने बहुत जरूरी है। आचार्य महाश्रमण ने बचपन में श्री राजेन्द्र विद्यालय से ही शिक्षा प्राप्त की थी।

ट्रस्ट की ओर से सोनिया ने अपने विचार रखे। जैन विश्व भारती के सहमंत्री विजयसिंह चौरड़िया ने जैविभा का परिचय दिया। दूगड़ विद्यालय की ओर से स्वीकृति भाषण कनकमल दूगड़ ने दिया। राजेन्द्र विद्यालय की ओर से रंजतमल ने विचार रखे। पूर्व में गुंजन सेठिया ने फोल्डर का वितरण किया।

वार्षिक अधिवेशन

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा अणुव्रत आदमी को पाप से बचाने वाला आंदोलन है। अगर

मालू के सौजन्य से हुआ है। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने अपने विद्यार्थी जीवन के रोचक संस्मरण सुनाए तथा विकास में योगभूत बने शिक्षकों का विशेष नामोल्लेख किया। आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर चरित्रसंपन्न पीढ़ी के निर्माण की अभिप्रेरणा भी दी। उल्लेखनीय है आचार्य महाश्रमण ने इस स्कूल में लगभग छह वर्ष तक प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की थी।

शिक्षक के जीवन में अणुव्रत आ जाए तो देश में नैतिकता का विकास हो सकता है। कोई भी राष्ट्र नैतिक बल के अभाव में अनेक संकटों में फंस जाता है। आज देश में व्यसनमुक्ति अभियान की बहुत जरूरत है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी सामने है। विद्यार्थियों को नशामुक्त बनाने के लिए योजना बनानी चाहिए। आचार्य महाश्रमण सभा भवन में आयोजित राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के 18वें तीन दिवसीय अधिवेशन के शुभारंभ पर बोल रहे थे।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर देश के एक करोड़ विद्यार्थियों को व्यसनमुक्त बनाने की कार्यदृष्टि प्रस्तुत की। इसे सभी संभागी शिक्षकों ने सहर्ष पूरा करने का संकल्प व्यक्त किया। स्वागत भाषण संगठन के मंत्री धर्मचंद जैन अंजाना ने किया। डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने भावी दृष्टि पर दिशा बोध दिया। इस अवसर पर प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन', धर्मचंद जैन, डॉ. सुधा, डॉ. फारूख, नवल बाबू, वी.एन. पाण्डेय ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन भीखमचंद नखत ने किया।

भ्रष्टाचार का सटीक समाधान है अणुव्रत

सरदारशहर। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने देश में बढ़ते भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता के बोलबाले का सटीक समाधान अणुव्रत को बताया। नवभारत के लिए विशेष तौर पर संवाददाता ईश्वरचंद जैन ने साक्षात्कार में आचार्य महाश्रमण से पूछा कि संपूर्ण विश्व आतंक का दंश झेल रहा है। इसका सटीक समाधान क्या हो सकता है, तो उन्होंने कहा विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान अणुव्रत के माध्यम से हो सकता है। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत जन आंदोलन का रूप ले रहा है। इसे सभी सम्प्रदाय के लोगों द्वारा स्वीकार किया जा रहा है। अणुव्रत के वर्गीय नियमों के अंतर्गत विद्यार्थी वर्ग, शिक्षक वर्ग, सामाजिक एवं राजनीतिक के लिए अलग-अलग छोटे-छोटे

नियम बने हुए हैं। अणुव्रत के नियमों को स्वीकारने से न केवल भ्रष्टाचार जैसी महामारी का इलाज संभव होता है बल्कि हिंसक घटनाओं और नक्सलवाद, आतंकवाद जैसी विश्वस्तर की समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत होता है। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन से प्रारंभ में देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, डॉ. एस. राधाकृष्णन, मोरारजी देसाई सहित अनेक राजनीतिक हस्तियां जुड़ी थीं।

आचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत के नियमों को जीवन में उतारकर देश की अखंडता में योगदान दें। अणुव्रत के द्वारा मनुष्य सही अर्थ में मनुष्य बन सकता है।

अणुविभा में अहिंसा दिवस

राजसमंद, 3 अक्टूबर। महात्मा गांधी जयंती “अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस” पर अणुविभा राजसमंद में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि कमर मेवाड़ी ने कहा गांधीजी के बताए अहिंसा के रास्ते पर चलकर ही हम सच्चे भारतीय बनने योग्य हो सकते हैं। अध्यक्षता डॉ. एम.एल. माण्डोत ने की। डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने अहिंसा की महत्ता पर प्रकाश डाला। नरेन्द्र ‘निर्मल’ ने गांधी की सकारात्मकता को जीवन में उतारने का आह्वान किया। अणुव्रत बालोदय के मंत्री अशोक डूंगरवाल एवं धर्मचंद जैन अंजाना

ने अहिंसा द्वारा ही विश्व में शांति संभव है की बात कही। इस अवसर पर कवि ‘बालक’ हमीद शेख, आशिया, किशन कबीरा, माधव नागदा, कनेरिया, भगवानलाल बंशीवाल, सरावगी, भंवरलाल वागरेचा, मिश्रीलाल, सम्पत लड्डा, दिनेश सनाद्वय, नगेन्द्र मेहता, सागर कावड़िया ने कविताओं के माध्यम से अहिंसा के मर्म पर प्रकाश डाला। बी.एड. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पाल, भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष गणपत धर्मावत ने भी विचार रखे। संयोजन साबिर शुक्रिया ने किया। कार्यक्रम की सफलता में विमल जैन का सराहनीय श्रम रहा।

अहिंसक शक्तियों का प्रवर्तक है अणुव्रत आंदोलन

बाढ़-बिहार, 15 अक्टूबर। अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति और समाज की बुराइयों को कम करके शांति, सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने वाला जन-आंदोलन है। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन आज प्रभावशाली बन गया है, क्योंकि इसके साथ वर्तमान में जुड़ गया है स्वरोजगार का प्रशिक्षण। ये विचार एन.टी.पी. सी. के सीनियर उपप्रबंधक कामेश्वर झा ने स्थानीय अहिंसा

प्रशिक्षण केन्द्र में पेंटिंग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। विशिष्ट अतिथि राजभाषा विभाग के उपप्रबंधक डॉ. रामजी मिश्र थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार ने की। अतिथियों का स्वागत राजेश कुमार ने किया। कार्यक्रम में राणा शत्रुघ्न सिंह, रंजना रानी गुप्ता, राजेश कुमार, नीलम सिंह उपस्थित थे। संयोजन प्रो. साधुशरण सिंह ‘सुमन’ ने किया।

चुनाव शुद्धि अभियान

अहमदाबाद, 7 अक्टूबर। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा गुजरात महानगर पालिका में चुनाव शुद्धि अभियान चलाया गया। मतदाताओं को जागरूक करने की दृष्टि से समिति द्वारा विभिन्न स्थानों पर बैनर एवं होर्डिंग्स लगवाए गये। बैनर का लोकार्पण साध्वी कनकरेखा के कर कमलों द्वारा किया गया। साध्वीश्री ने कहा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य

तुलसी ने विद्यार्थी, शिक्षक, व्यापारी, मतदाता सभी के लिए वर्गीय अणुव्रत नियम बनाए। आज आवश्यकता इस बात की है कि अणुव्रत हर वर्ग द्वारा अपनाया जाए, ताकि राष्ट्र का उचित विकास हो सके। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा, नानालाल कोठारी, अशोक दूगड़, नटवर कोठारी, रविकांत मोदी एवं विजयराज सुराणा उपस्थित थे।



अणुव्रत पुरस्कार-2009

जय तुलसी फाउंडेशन

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
संपर्क सूत्र : 011-23231373 फैक्स - 011-23231363
email : jtfcal@gmail.com

वर्ष 2009 के लिए योग्य अभ्यर्थियों अथवा संस्थाओं के नाम के प्रस्ताव आमंत्रित किए जाते हैं जिन्होंने समाज में मानवीय एकता, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा, अणुव्रत के सिद्धान्तों की स्थापना एवं स्वस्थ समाज संरचना हेतु सघन कार्य किया हो।

अणुव्रत पुरस्कार स्वरूप 1,51,000/- धनराशि, प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

आपके प्रस्ताव निर्धारित फॉर्म पर आवश्यक अनुलग्नकों सहित संस्था के कार्यालय में 30 नवम्बर, 2010 तक जमा हो जाने चाहिए। फॉर्म एवं नियमावली संस्था के कार्यालय से प्राप्त करें।

- सुरेन्द्र कुमार दूगड़ (प्रबन्ध न्यासी)

जीवन परिष्कार की कला सिखाता है जीवन विज्ञान

■ टॉडगढ़

● “जीवन विज्ञान दिवस” पर साध्वी नगीना ने कहा जीवन विज्ञान जीने की कला है। जीवन विज्ञान शिक्षा से मानसिक और भावात्मक विकास होता है। साध्वी मेरूप्रभा ने जीवन विज्ञान गीत प्रस्तुत किया। साध्वी गवेषणाश्री ने कहा कि जीवन विज्ञान सही जीवन जीने की कला सिखाता है। चित्तौड़ कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रोशन पीतलिया ने कहा जीवन विज्ञान जीवन परिष्कार की कला सिखाता है। बद्रीलाल पीतलिया ने कहा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह जागृति का संदेश देता है। आभार ज्ञापन शांतिलाल माण्डोट ने किया।

● “सांप्रदायिक सौहार्द दिवस” पर साध्वी नगीना ने कहा हमारा सभी के प्रति सद्भाव रहे। एक दूसरे की आलोचना न करें तथा सभी के साथ मैत्री का भाव रखें। इस अवसर पर साध्वी मयंकप्रभा, मौलाना मंसूर आलम, साध्वी डॉ. गवेषणा, साध्वी मेरूप्रभा एवं प्रधानाचार्य प्रेमसिंह ने अपने विचार रखे। प्रारंभ साध्वी पद्मावती द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण बडीलाल पीतलिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन चित्तौड़ कॉलेज के प्राचार्य रोशनलाल पीतलिया ने किया। आभार ज्ञापन सुमित्रा कोठारी ने किया।

● “व्यसनमुक्ति दिवस” रा.

उ.मा. विद्यालय में प्राचार्य मोहनसिंह परिहार की अध्यक्षता में मनाया गया। साध्वी नगीना ने विद्यार्थियों को अणुव्रत के नियम बताये, जिनका उन्होंने संकल्प लिया। साध्वी नगीना ने कहा नशा भले ही शराब का हो, बीड़ी-सिगरेट का हो या फिर अन्य किसी नशीले पदार्थ का हो वह घातक ही है। नशेड़ी स्वयं तो अपना जीवन बर्बाद करता ही है साथ ही परिवार को भी दुःखी बना देता है। अतः इससे बचकर रहना चाहिए, क्योंकि व्यसनमुक्त जीवन ही आदर्श जीवन है। प्रारंभ रतनबाई व सुमित्रा कोठारी द्वारा मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर महेश कासट, साध्वी पद्मावती, साध्वी मेरूप्रभा, साध्वी मयंकप्रभा, साध्वी गवेषणा, शांतिलाल माण्डोट, साध्वी पुष्पावती ने विचार रखे। संचालन बद्रीलाल पीतलिया ने एवं आभार ज्ञापन हिम्मत कोठारी ने किया।

● “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” साध्वी नगीना के सान्निध्य में राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय में मनाया गया। साध्वी मेरूप्रभा एवं अन्य साध्वियों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वी नगीना ने कहा प्यास लगने पर ही पानी का मूल्य होता है। सघन अंधकार में ही प्रकाश की

मूल्यवत्ता है। अंधकार न हो तो प्रकाश की अपेक्षा नहीं रहती। आज के भौतिकतावादी समय में अणुव्रत की बहुत उपयोगिता है। साध्वी मयंकप्रभा ने कहा विचार और आचार की पवित्रता के लिए अणुव्रतों को स्वीकार करना अपेक्षित है। इस अवसर पर प्राध्यापक लाधुलाल प्रजापत, हिम्मतमल कोठारी, साध्वी गवेषणा, रतन देवी कोठारी, शांतिलाल माण्डोट ने विचार रखे। संचालन रोशनलाल पीतलिया ने एवं आभार ज्ञापन बद्रीलाल पीतलिया ने किया।

● “अनुशासन दिवस” पर साध्वी नगीना ने कहा व्यक्तित्व निर्माण एवं विकास का पहला सूत्र है अनुशासन। साध्वी नगीना ने कहा व्यक्तित्व विकास की धुरी है अनुशासन। अनुशासन में चलकर ही व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। साध्वी मेरूप्रभा, रतन बाई कोठारी, बसंताबाई पीतलिया ने गीतिका के माध्यम से अपने विचार रखे। साध्वी गवेषणा ने कहा अनुशासन जीवन का प्राण एवं वरदान है। प्राध्यापक दीपक चौहान व कान्ता चौहान का साहित्य द्वारा सम्मान घीसूलाल पीतलिया व रतन कोठारी ने किया। कार्यक्रम में विद्यालय की 200 छात्राओं ने भाग लिया। संचालन बद्रीलाल पीतलिया (बेंगलोर) ने एवं धन्यवाद ज्ञापन हिम्मतमल कोठारी ने किया।

■ जयपुर

अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष एवं अणुव्रत प्रवक्ता जी.एल. नाहर ने अपनी संगठन यात्रा के दौरान बालोतरा, पचपदरा, असाड़ा, टापरा, जसोल एवं जोधपुर में आयोजित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के

कार्यक्रमों में भाग लिया। वर्णन निम्न प्रकार है

● 26 सितंबर 2010 को बाड़मेर में मुनि सुव्रतकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत समिति बाड़मेर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते हुए जी.एल. नाहर ने अणुव्रत दर्शन के विविध प्रसंगों के माध्यम से जानकारी दी। कार्यक्रम की आयोजना में अणुव्रत ईकाई प्रभारी राजेन्द्र सेठिया, तेयुप अध्यक्ष रूपेश कुमार जैन एवं अणुव्रत समिति बाड़मेर के मंत्री का सराहनीय श्रम रहा।

● 27 सितंबर 2010 को बालोतरा में मुनि रविन्द्रकुमार, मुनि पृथ्वीराज के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में जी.एल. नाहर ने जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं अणुव्रत के संदर्भ में विशिष्ट प्रसंगों के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। जवेरीलाल सालेचा मंत्री अणुव्रत समिति बालोतरा का श्रम प्रभावी रहा।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में स्थानीय डी.आर.जे. कन्या विद्यालय में मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य में जी.एल. नाहर ने अणुव्रत के दो प्रमुख घोष संयम: खुलु जीवनम एवं निज पर शासन फिर अनुशासन पर विस्तृत चर्चा की।

रात्रि में दिलीप भदाणी, अशोक चोपड़ा एवं घेवरचंद बोहरा, डी. मांगीलाल भंसाली, पवन सकलेचा की उपस्थिति में असाड़ा में विराजित साध्वी तिलकश्री के सान्निध्य में गोष्ठी आयोजित की गयी। टापरा में विराजित साध्वी गुलाबकुमारी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

● 28 सितंबर 2010 को पचपदरा में मुनि प्रशांतकुमार के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते हुए जी.एल. नाहर ने विद्यार्थी जीवन को सार्थक बनाने



पारिवारिक सौहार्द का आधार है सहजशीलता और श्रमशीलता

की बात कही। इस अवसर पर दिलीप भदानी एवं अशोक चोपड़ा ने भी विचार रखे।

● 29 सितंबर को जसोल के स्थानीय आदर्श विद्या मंदिर में आयोजित “पर्यावरण शुद्धि दिवस” में जी.एल. नाहर ने अपने विचार रखे। शाम को गौतम सालेचा एवं शांतिलाल भंसाली के साथ समदड़ी में मुनि मदनकुमार के सान्निध्य में भावी कार्यक्रमों पर चर्चा हुई।

● 30 सितंबर को बाडमेर में विराजित मुनि सुव्रतकुमार के सान्निध्य में “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” कार्यक्रम में भाग लेते हुए जी.एल. नाहर ने अणुव्रत आचार संहिता की विस्तृत व्याख्या की।

● 1 अक्टूबर को जोधपुर में साध्वी कमलप्रभा के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में जी.एल. नाहर ने अपने विचार रखे।

● 2 अक्टूबर को ही जोधपुर में तातेड़ भवन सरदारपुरा में साध्वी रतनश्री के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेकर जी.एल. नाहर ने सप्ताह के निर्धारित कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। इस दौरान जोधपुर में जी. एल. नाहर ने विभिन्न स्थानों पर चल रहे कार्यक्रमों में भाग लेकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

■ किशनगढ़

अणुव्रत समिति किशनगढ़ के तत्वावधान में उद्बोधन सप्ताह 26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010 तक धूमधाम से मनाया गया। सभी कार्यक्रमों में पतंजलि योग पीठ के जिला प्रभारी प्रभुलाल ने 15 मिनट का योग प्रशिक्षण दिया। सभी कार्यक्रमों के संयोजन एवं मंच संचालन का दायित्व समिति के मंत्री सुरेश जामड़ ने निभाया। सभी कार्यक्रमों के

प्रायोजक समिति के संरक्षक पन्नालाल छाजेड़ बने। निर्देशन समिति के अध्यक्ष कृष्णचन्द्र टवाणी का रहा।

● 26 सितंबर को “साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस” पर साध्वी मधुबाला, काचरिया पीठेश्वर डॉ. जयकृष्ण देवाचार्य, भैरव घाट बालाजी के संत संतोषशरण रसिक, कबीर पंथ आश्रम के संत गौरवदास, नगर परिषद् की अध्यक्ष गुणमाला पाटनी ने विचार रखे। रात्रि में भजन संध्या का भी आयोजन किया गया।

● 27 सितंबर को “अहिंसा दिवस” मनाया गया। कार्यक्रम का विषय था ‘पारिवारिक सौहार्द कैसे रहे?’ इस अवसर पर साध्वी मधुबाला, शिक्षाविद कानसिंह कर्णावट एवं समिति के अध्यक्ष कृष्णचन्द्र टवाणी ने विचार रखे। सभी वक्ताओं का मानना था कि सहजशीलता, श्रमशीलता और विनम्रता ही पारिवारिक सौहार्द का आधार है। रात्रिकालीन कार्यक्रम में दिगंबर जैन वीर संगीत मंडल, मदनगंज के गायक कलाकारों ने भजन प्रस्तुत किये।

● 28 सितंबर को “जीवन विज्ञान दिवस” मनाया गया। कार्यक्रम का विषय था ‘बच्चे, बचपन और माता-पिता’। इस अवसर पर साध्वी मधुबाला, प्रो. डॉ. अनुराग शर्मा एवं पत्रकारिता में गोल्ड मेडलिस्ट सपना भंडारी ने विचार रखे। निष्कर्ष रूप में आया कि माता-पिता बच्चों को जितना अधिक समय देंगे उतने ही वे योग्य बनेंगे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में लिखित प्रतियोगिता रखी गयी।

● 29 सितंबर को “पर्यावरण शुद्धि दिवस” मनाया गया। विषय था ‘स्वास्थ्य एवं आहार’। इस अवसर पर साध्वी मधुबाला, प्रो. सी.पी. पोखरना ने अपने विचार

रखे। सभी विचारकों का मानना था कि यदि शुद्ध आहार मिलेगा तो शरीर स्वतः ही स्वस्थ होगा। रात्रि में कबीर पंथ आश्रम किशनगढ़ के संत गौरवदास ने सुमधुर भजनों का संगान किया।

● 30 सितंबर को “नशामुक्ति दिवस” मनाया गया। विषय था ‘व्यसन एक सामाजिक पीड़ा’। इस अवसर पर साध्वी मधुबाला, आर्य समाज के महंत दिलीप शास्त्री, सुरेश जामड़ ने विचार रखे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में राधा सर्वेश्वर संकीर्तन मंडल, किशनगढ़ के सदस्यों ने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी।

● 1 अक्टूबर “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” मनाया गया। कार्यक्रम का विषय था ‘व्यवसाय जगत की दुष्प्रवृत्तियाँ’। इस अवसर पर साध्वी मधुबाला, अग्रवाल समाज के घनश्याम दास अग्रवाल एवं पतंजलि योग पीठ के प्रभारी प्रभुदयाल कुमावत ने अपने विचार रखे। रात्रि में किशोर मंडल के सदस्यों ने “मिलावट” पर नाटक प्रस्तुत किया एवं कन्या मंडल ने “शब्द चिन्त” कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

● 2 अक्टूबर को “अनुशासन दिवस” मनाया गया। विषय था ‘बनते बिगड़ते विवाह संबंध एक सामाजिक पीड़ा’। उक्त विषय पर साध्वी मधुबाला, समिति के सलाहकार बिरदी चंद पोखरना एवं सुरेश जामड़ ने विचार रखे। सभी का यह मानना था कि युवा पीढ़ी आध्यात्मिकता से दूर होती जा रही है। जिससे उनमें संस्कारों का विकास नहीं हो पाता। पन्नालाल छाजेड़ ने अणुव्रत सप्ताह की शोभा बढ़ाने वालों को स्मृति चिह्न भेंट किये एवं ज्ञान मंदिर किशनगढ़ ने साहित्य भेंट किया। आभार व्यक्त कृष्णचन्द्र टवाणी ने किया।

■ पीलीबंगा

अणुव्रत समिति पीलीबंगा द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह विभिन्न क्षेत्रों में मनाया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि शकीला गोदरा अध्यक्ष नगरपालिका, विशिष्ट अतिथि कमलापति जैन उपाध्यक्ष नगरपालिका, अनिल रांका मंत्री अणुव्रत समिति सूरतगढ़, अमृत चौपड़ा सूरतगढ़ एवं अध्यक्ष दुष्यंत दत्त शर्मा न्यायायिक मजिस्ट्रेट पीलीबंगा थे। इस अवसर पर रामकुमार जैन, जेठा देवी दूगड़, प्रकाश डाकलिया, विजय सहगल, सुभाष गोदरा, बंशीलाल दूगड़, विजय चंद दूगड़ समन्वयक जीवन विज्ञान केन्द्र पीलीबंगा की विशेष उपस्थिति रही।

● 26 सितंबर को जैन भवन पीलीबंगा में “पर्यावरण शुद्धि” दिवस के साथ सप्ताह का शुभरंभ हुआ। समिति के मंत्री सुरेश जैन ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान कस्बे में समिति द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

● 27 सितंबर को “जैन भवन में “जीवन विज्ञान दिवस” मनाया गया। इस अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पर्यावरण विषय पर निबंध प्रतियोगिता रखी गयी।

● 28 सितंबर को “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” केशव विद्यापीठ उच्च माध्यमिक विद्यालय में मनाया गया। इस विद्यालय में अणुव्रत विषय पर निबंध प्रतियोगिता रखी गयी।

● 29 सितंबर को “साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस” जीनियस पब्लिक सी.से. स्कूल में मनाया गया। इसी विषय पर

पर्यावरण सुरक्षा का मूलमंत्र - 'संयम ही जीवन है'

विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता रखी गयी।

सायं 8 बजे जैन भवन पीलीबंगा में मुनि विमलकुमार के सान्निध्य में “सर्वधर्म सौहार्द” गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें विभिन्न धर्मों के प्रबुद्ध लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुस्लिम समुदाय के डॉ. फतेह मोहम्मद व मौलवी मो. अबू नसर, सिख धर्म से परमजीत सिंह, ईसाई धर्म से एम. जॉर्ज, सनातन धर्म से महेश शर्मा व निरंजन शर्मा, निरंकारी मिशन के प्रमुख डॉ. इन्द्रजीत आहूजा, अरोड़वंश सभा के कृष्णलाल कामरा, विश्व हिन्दू परिषद् के सुशील गुप्ता, तरुण संघ के अध्यक्ष अशोक खदरिया, एकता मंच के अध्यक्ष अमर गर्ग ने विचार रखे। अणुव्रत समिति की ओर से सभी प्रतिनिधियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कमलपति जैन ने अणुव्रत पर विचार रखे। मुनिश्री ने भी विचार रखे एवं साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने की प्रेरणा दी।

● 30 सितंबर को “नशामुक्ति दिवस” इण्डियन पब्लिक स्कूल में मनाया गया। इस विद्यालय में नशामुक्ति विषय पर निबंध प्रतियोगिता रखी गयी।

● 1 अक्टूबर को “अनुशासन दिवस” बी.एल. नेशनल सी.से. स्कूल में मनाया गया। इस विद्यालय में अनुशासन विषय पर निबंध प्रतियोगिता रखी गयी। विशेष रूप से पधारे समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान की जानकारी दी।

सायं 3 बजे जैन भवन में नशे के दुष्प्रभाव विषय पर विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों की चित्रकला प्रतियोगिता रखी गयी। इसमें 90 विद्यार्थियों ने भाग लिया। 10 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। मण्डी के जिन विद्यालयों में

सप्ताह मनाया गया उनमें मुनि धन्यकुमार ने अपना उद्बोधन दिया एवं विद्यार्थियों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत प्रचार प्रसार साहित्य एवं अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड स्कूलों में दिये गये। जीवन विज्ञान केन्द्र पीलीबंगा द्वारा विद्यालयों में जीवन विज्ञान पुस्तिका वितरित की गयी। सभी स्कूलों में विद्यार्थियों को बंशीलाल दूगड़ व रामकुमार जैन द्वारा फलों का वितरण किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विजय सहगल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

■ श्री गंगानगर

● “पर्यावरण शुद्धि दिवस” अणुव्रत समिति श्रीगंगानगर के तत्वावधान में साध्वी जयश्री के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी जयश्री ने कहा पर्यावरण प्रदूषण व्यक्ति से ही होता है, पशु से नहीं। प्रदूषण का कारण है असंयम। व्यक्ति को स्वयं की सुरक्षा, प्रकृति की सुरक्षा के लिए “संयम ही जीवन है” इस आदर्श को अपनाना होगा। साध्वी अनुप्रेक्षा ने विचार रखे। प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। राजेन्द्र आंचलिया ने विचार रखे।

● “जीवन विज्ञान दिवस” गुप्ता बाल भारती गर्ल्स स्कूल में साध्वी कमलप्रभा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा जीवन विज्ञान शिक्षा की ऐसी पद्धति है जो सर्वांगीण विकास के द्वार उद्घाटित करती है। साध्वी प्रियदर्शना ने जीवन विज्ञान को संतुलित पद्धति बताया। इस अवसर पर साध्वी कमलप्रभा एवं अध्यापिका कंचन देवी ने विचार रखे।

● “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” सनातन धर्म गर्ल्स महाविद्यालय में साध्वी उज्जवलप्रभा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों को अपनाकर व्यक्ति अपने जीवन में बदलाव ला सकता है। साध्वी अनुप्रेक्षा ने विद्यार्थियों को वर्गीय अणुव्रत नियमों का संकल्प करवाया। इस अवसर पर महाविद्यालय के चेयरमैन श्यामलाल गौड़, प्राचार्या कमलेश कटारिया ने अपने विचार रखे।

● “नशामुक्ति दिवस” पर सनातन धर्म बड़ा मंदिर विद्यालय छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए साध्वी जयश्री ने कहा व्यक्ति को विकृति की ओर ले जाने वाला घटक है नशा। अपनी सुरक्षा के लिए नशे का त्याग करना अनिवार्य है। इस अवसर पर साध्वी अनुप्रेक्षा, विद्यालय के

प्राचार्य नानकराम, संजय शर्मा, रामगोपाल वर्मा ने विचार रखे। साध्वी अनुप्रेक्षा ने विद्यार्थी अणुव्रत के संकल्प करवाए।

● “अनुशासन दिवस” पर अग्रवाल माध्यमिक विद्यालय में साध्वी प्रियदर्शना ने कहा अनुशासन सफल जीवन जीने का मूल मंत्र एवं सफल जीवन जीने की प्रेरक शक्ति है। साध्वी उज्जवलप्रभा ने कहा कि अनुशासन व्यक्ति को भटकाव से बचाता है। साध्वी उज्जवलप्रभा ने छात्र-छात्राओं को प्रयोग करवाए।

● “अहिंसा दिवस” साध्वी जयश्री के सान्निध्य में भिक्षु प्रतिष्ठान के प्रांगण में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा जो अपने समान दूसरों को मानता है एवं वैसा ही व्यवहार करता है। वहां पर अहिंसा फलीभूत होती है। इस अवसर पर साध्वी

‘विज्ञप्ति’ का आजीवन सदस्यता अभियान 30 नवंबर 2010 तक

आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित **विज्ञप्ति** की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर रहे लोगों के रुझान को देखते हुए एवं आजीवन सदस्यता अभियान को कुछ और आगे बढ़ाने के लोगों के आग्रह को ध्यान में रखकर आदर्श साहित्य संघ की कार्यकारिणी ने इस अभियान को चातुर्मास संपन्नता तक यानी 30 नवंबर तक आगे बढ़ाने का निर्णय लिया है। विशेष योजना के अंतर्गत **विज्ञप्ति** की आजीवन सदस्यता में एक हजार रुपये की छूट दी जा रही है। 2100 रुपये की बजाय 1100 रु. आदर्श साहित्य संघ के खाता संख्या 0133000100368359 (पंजाब नेशनल बैंक) में जमा देकर बैंक स्लिप की प्रति के साथ अपना नाम, पता हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय में भिजवाएं।

नोरतनमल दूगड़
अध्यक्ष

बच्छराज कठोतिया
मंत्री

आदर्श साहित्य संघ

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 23234641, फैक्स : 23236480

अणुव्रत एक सार्वभौम सैद्धांतिक धर्म

उज्ज्वलप्रभा, साध्वी प्रियदर्शना एवं विजय गोयल ने विचार रखे।

● “साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस” जी.आर.जी. सिनेमा हॉल में विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधि एवं अनुयायियों को संबोधित करते हुए साध्वी जयश्री ने कहा व्यक्ति संप्रदाय की अनेक एवं भिन्न उपासना पद्धति में न उलझे, इनके बीच जो समन्वय की धारा है उसे उदारता के साथ स्वीकार करें। इस अवसर पर साध्वी अनुप्रेक्षा, इस्लाम धर्म के प्रसिद्ध साहित्यकार अली मोहम्मद पडिहार, फादर अमरदीप, विवेक आश्रम के संचालक स्वामी अनंतानंद, सिख धर्म के हरजीत सिंह जौली, जीआरजी सिनेमा हॉल के संचालक विजय गोयल एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्यामलाल ने विचार रखे। सप्ताह के सभी कार्यक्रमों का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री विमल कोटेचा ने किया।

■ जयपुर

आचार्य भिक्षु साधना केन्द्र श्यामनगर जयपुर के तत्वावधान में मुनि धर्मचंद ‘पीयूष’ के सान्निध्य में 26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010 तक निर्धारित विषयों पर मनाया गया।

● “पर्यावरण शुद्धि दिवस” पर पर्यावरण जागरूकता की दृष्टि से जयपुर पब्लिक स्कूल में चित्रकला प्रतियोगिता रखी गयी। इसमें लगभग 500 बच्चों ने भाग लिया।

● “जीवन विज्ञान दिवस” पर जयपुर पब्लिक स्कूल में ‘जीवन विज्ञान शिक्षा का नव अभियान’ पर कार्यशाला आयोजित की गयी। अगर व्यक्ति जीवन जीने की कला सीख जाये तो उसके जीवन को प्रायोगिक रूप में जीया जा सकता है।

● “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” पर मुनि धर्मचंद ‘पीयूष’ ने कहा अणुव्रत एक सार्वभौम व सैद्धांतिक धर्म है। अणु का अर्थ है छोटा और व्रत है नियम। पवित्रता के साथ इसको अपनाया जाये तो जीवन सार्थक हो सकता है। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे।

● “साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस” पर मुनि धर्मचंद ‘पीयूष’ ने कहा हिन्दुस्तान में सभी धर्म, जातियां, सम्प्रदायों का सम्मान सदियों से होता रहा है। आचार्य तुलसी ने संप्रदाय को धर्म नहीं माना। संप्रदाय एक लिफाफा है उसके भीतर धर्म है।

● “नशामुक्ति दिवस” पर मुनिश्री ने कहा नशा और गुस्सा एक-दूसरे के पूरक हैं। नशा जब जीवन में आ जाता है तो घर और परिवार को आर्थिक रूप में नष्ट कर देता है। आवश्यकता है आज के युग में नशा और गुस्सा दोनों को प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के प्रयोगों द्वारा छुड़ाया जाय और व्यक्ति अपने जीवन को एक उच्च आदर्श बना सके।

● “अनुशासन दिवस” पर मुनिश्री ने कहा अनुशासन और संगठन दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं। जहाँ संगठन है वहाँ अनुशासन की बहुत आवश्यकता है। व्यक्ति अपने मैन्युअल के आधार पर चलता है तो अपने आप में बहुत अनुशासित है। आज नीति एवं नियमों की बहुत आवश्यकता है।

● “अहिंसा दिवस” पर महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती भी मनायी गयी। विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा आज अहिंसा दिवस के दिन हमें जो अमन चैन का संदेश (राम जन्म भूमि के रूप में) मिला है, वह विश्व के सामने एक अभूतपूर्व उदाहरण

है कि हम सब आपस में शांति एवं प्रेम से रहते हैं।

उद्बोधन सप्ताह में मुनि मुनिव्रत, मुनि अशोककुमार, मुनि रश्मिकुमार, मुनि संभवकुमार ने नैतिक मूल्यों पर विचार रखे। विभिन्न विद्यालयों के लगभग 2100 छात्र-छात्राओं ने इसमें भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में कर्नल एन.के. शर्मा, जे.पी. गुप्ता, सुमन कपूर, एस.के. सिंह, एडवोकेट, रमा केडिया, जसबीर सिंह की प्रमुख उपस्थिति रही। उद्बोधन सप्ताह के संचालन में गोपीकृष्ण सिद्धा, नेतृत्व में जयश्री सिद्धा का सराहनीय श्रम रहा। प्रेम बोधरा एवं प्रियंका पुगलिया ने प्रयोग करवाये। प्रेक्षा प्रशिक्षक विजय बोधरा ने अतिथियों का सम्मान किया। आभार ज्ञापन स्नेहा सिद्धा ने किया। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक दलपत सिंह लोढ़ा व अनिल विस्पतियां थे।

■ रीछेड़

अणुव्रत समिति रीछेड़ के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह रीछेड़ के विभिन्न विद्यालयों में मनाया गया। मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार ने निर्धारित विषयों पर विचार रखे। सोहनलाल कोठारी ने स्कूलों में अपने विचार रखे। अहिंसा प्रशिक्षक गुप्ता ने प्रयोग करवाए।

● “अहिंसा दिवस” उद्बोधन सप्ताह के समापन समारोह के रूप में तुलसी विहार में मनाया गया। इस अवसर पर रीछेड़ पंचायत क्षेत्र के सभी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने “अहिंसा रैली” निकाली। रैली शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई तुलसी विहार में सभा के रूप में बदल गयी। मुनि ज्ञानेन्द्रकुमार ने

सभा को संबोधित करते हुए कहा स्वस्थ समाज की रचना नैतिकता से ही संभव है। आचार्य तुलसी ने नैतिकता को जनव्यापी बनाने के लिए अणुव्रत का दर्शन दिया। अणुव्रत जीवन दर्शन है। इसे अपनाकर हर व्यक्ति अहिंसक बन सकता है। मुख्य अतिथि कुंभलगढ़ विकास अधिकारी गौरीशंकर चौधरी थे। अध्यक्षता जिला शिक्षा अधिकारी पृथ्वीसिंह कच्छावा ने की। विशिष्ट अतिथि कुबेरसिंह सोलंकी थे। इस अवसर पर रीछेड़ पंचायत के सरपंच नानालाल खटीक, अमृत सांसद हिम्मत कोठारी, डॉ. समुदर शर्मा, खीमाराम परिहार, लक्ष्मीकांत गुप्ता, बैंक मैनेजर आर के भुवन, जसराज सरगरा ने विचार रखे। समारोह में मुनि ज्ञानेन्द्रकुमार ने अणुव्रत आचार संहिता का वर्णन करते हुए उपस्थित 1000 विद्यार्थियों को वर्गीय अणुव्रत नियमों की पालना का संकल्प करवाया। संचालन अणुव्रत समिति के संरक्षक सोहनलाल कोठारी ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राधेश्याम राणा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। आभार ज्ञापन हिम्मतमल कोठारी ने किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

■ तारानगर-चुरु

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र तारानगर के प्रशिक्षक वंशनारायण राय व प्रेमशीला राय तथा सभा तारानगर के संयुक्त प्रयास से साध्वी उज्ज्वलरेखा के सान्निध्य में उद्बोधन सप्ताह मनाया गया। प्रथम दिन मोहिनी स्मृति भवन में भाषण व गीत गायन प्रतियोगिता रखी गयी।

● “जीवन विज्ञान दिवस” गांधी विद्या मंदिर माध्यमिक

स्वयं पर शासन ही समस्याओं का समाधान

विद्यालय में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा जीवन विज्ञान जीवन जीने की कला सिखाता है।

● “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” शेखावटी चिल्ड्रन अकादमी में मनाया गया। साध्वी उज्जवलरेखा ने छात्र-छात्राओं को विद्यार्थी अणुव्रत नियमों की जानकारी देते हुए ग्रहण करने के संकल्प करवाए।

● “साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस” पर सर्वधर्म सभा का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के प्रमुख घोष “इन्सान पहले इन्सान - फिर हिन्दू या मुसलमान” को जीवन में उतारने की बात कही।

● “नशामुक्ति दिवस” शिवाजी शिक्षण संस्थान तारानगर में मनाया गया। अहिंसा प्रशिक्षक वंशनारायण राय ने विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। साध्वीश्री ने कहा नशा नाश का द्वार है।

● “अनुशासन दिवस” नवीन राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नं. 2 तारानगर में मनाया गया। साध्वी उज्जवलरेखा ने कहा अनुशासन ही विद्यार्थियों को आगे ले जा सकता है। अहिंसा प्रशिक्षक ने विद्यार्थियों को अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए।

● “अहिंसा दिवस” सरस्वती कन्या महाविद्यालय में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा समस्याओं का समाधान केवल अहिंसा ही है। हम सभी मिलकर अहिंसक समाज की संरचना में सहयोग करके अहिंसक विचार को आगे बढ़ा सकते हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य भंवर सिंह ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर साध्वी अमृतप्रभा, अशोक बच्छावत, कमल लूनिया, मदन बैद, नोरतमल रांका, रेशमी संचेती, नरेन्द्र लूनिया ने अपने विचार रखे।

■ हिसार

● 26 सितंबर 2010 को “सांप्रदायिक सौहार्द दिवस” कटला रामलीला सभा भवन में साध्वी कंचनकुमारी ‘लाडनू’ के सान्निध्य में मनाया गया। मुख्य अतिथि हिसार के एस.डी.एम. अमरदीप जैन ने कहा सबसे पहले हमें स्वयं पर शासन करना चाहिए, इसी में सभी समस्याओं का समाधान निहित है। हम क्या कर रहे हैं यही सोचना चाहिए, दूसरे क्या कर रहे हैं इसकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। साध्वी कंचनकुमारी ने कहा अणुव्रत असाम्प्रदायिक आंदोलन है। इस अवसर पर साध्वी सिद्धप्रभा, सत्यपाल शर्मा, आनन्द मुनि, रमेश धमीजा, कु. रेणुका ब्रह्मकुमारी, जरीफ अहमद, डॉ. किशना राम ने विचार रखे। अणुव्रत समिति हिसार के अध्यक्ष कुंदनलाल गोयल ने अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया एवं आभार व्यक्त किया।

● 27 सितंबर को “अणुव्रत प्रेरणा दिवस” साध्वी कंचन कुमारी के सान्निध्य में सभा भवन में मनाया गया। साध्वीश्री ने संभागियों को अणुव्रत आचार संहिता एवं वर्गीय अणुव्रत नियमों की जानकारी दी। साध्वीश्री की प्रेरणा से अनेक

व्यक्तियों ने अणुव्रती बनने का संकल्प लिया।

● 28 सितंबर को “जीवन विज्ञान दिवस” देवी भवन हाईस्कूल हिसार में साध्वी सिद्धप्रभा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान की जानकारी देते हुए प्रयोग करवाए। साध्वी आस्थाप्रभा ने आसन एवं योग के प्रयोग करवाए।

● 29 सितंबर को “अनुशासन दिवस” साध्वी केचनकुमारी ‘लाडनू’ के सान्निध्य में एफ.सी. कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मनाया गया। साध्वीश्री ने बच्चों को अनुशासन संबंधी एवं संस्कार निर्माण संबंधी बातें बताईं। साध्वी सिद्धप्रभा ने सीधे बैठना, सही श्वास लेना, महाप्राण ध्वनि एवं मुद्रा के प्रयोग करवाए। विद्यालय की प्राचार्या एवं शिक्षक परिवार ने भविष्य में भी अपने विद्यालय में इस तरह के कार्यक्रम करवाने का निमंत्रण दिया।

● 30 सितंबर को “पर्यावरण शुद्धि दिवस” साध्वी कंचनकुमारी ‘लाडनू’ के सान्निध्य में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हिसार में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि पर्यावरण शुद्धि के लिए भावों की शुद्धि जरूरी है। साध्वी

आस्थाप्रभा ने बिजली व पानी को व्यर्थ न करने एवं ज्यादा टी.वी. न देखने की प्रेरणा दी। विद्यालय के प्राचार्य सहदेव यादव ने भी विचार रखे। आभार ज्ञापन समिति के अध्यक्ष ने किया।

● 1 अक्टूबर को “नशामुक्ति दिवस” केन्द्रीय सुधार गृह में लगभग 500 बंदियों की उपस्थिति में मनाया गया। साध्वी कंचनकुमारी ‘लाडनू’ ने बंदियों को नशा न करने, क्रोध न करने, अहंकार न करने की प्रेरणा दी। साध्वी सिद्धप्रभा एवं साध्वी आस्थाप्रभा ने बंदियों को नशा न करना व जुआ न खेलने का भी संकल्प करवाया। जेल अधीक्षक जयदेव विश्णोई ने आभार प्रकट किया। संस्था अध्यक्ष कुंदनलाल गोयल ने जेल अधीक्षक का साहित्य द्वारा सम्मान किया।

● 2 अक्टूबर को “अहिंसा दिवस” पर साध्वी कंचनकुमारी ‘लाडनू’ ने महिलाओं को संवाधित करते हुए कहा नारी ही महापुरुषों को जन्म देती है। नारी को स्वयं अच्छे गुणों को ग्रहण करना चाहिए। साध्वी आस्था प्रभा ने गीतिका का संगान किया।

उद्बोधन सप्ताह की सफलता में के.के. गुप्ता, धनपत सिंह जैन, राजेन्द्र अग्रवाल, राजकुमार जैन, श्यामसुंदर जैन, रामप्रसाद सोनी एवं राधेश्याम का सराहनीय श्रम रहा।

■ शेरपुर

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह विभिन्न स्थानों पर मनाया गया। “पर्यावरण शुद्धि दिवस” पर अहिंसा प्रशिक्षक संजय भाई ने कहा शुद्ध पर्यावरण स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण चेतना को



समता की खुशबू का नाम है अणुव्रत

जन-जन तक पहुंचाया जाये, यही इस दिवस का मुख्य उद्देश्य है। इस अवसर पर शेरपुर थाने के इंस्पेक्टर दर्शन सिंह ने पौधे उपलब्ध करवाए एवं कहा कि हर परिवार विशेष उत्सव पर एक पौधा अवश्य लगाये। प्रेम सिंह कीता, कुलजीत कौर, बगा शर्मा ने भी पर्यावरण शुद्धि पर अपने विचार रखे।

■ कोयम्बटूर

● “अणुव्रत चेतना दिवस” साध्वी कीर्तिलता के सान्निध्य में पुनराजम सभा भवन में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा देश में व्याप्त नानाविध समस्याओं को सुलझाने में अणुव्रत संजीवनी बूटी का काम कर सकता है। आज जरूरत है व्यक्ति संयम, व्रत, अनुशासन से स्वयं को संवारे एवं दूसरों को भी प्रेरणा दे। भावी पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु प्रत्येक विद्यालय में अणुव्रत नियमों को लागू करवाया जाय। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने कहा व्रतों की ओर चरणन्यास करने वाला व्यक्ति ही सुखी जीवन जी सकता है।

● “सांप्रदायिक सौहार्द दिवस” पर साध्वी कीर्तिलता ने कहा हम नमन करते हैं दूरदृष्टि व्यक्तित्व आचार्य तुलसी को। जिन्होंने एक असांप्रदायिक धर्म अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर लोगों को नैतिकता की राह दिखायी। अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों को अपनाकर जीवन को संयम द्वारा सुखद एवं शांतिपूर्ण बनाया जा सकता है। अभयराज बांठिया ने कविता प्रस्तुत की। जवाहरलाल एवं साध्वी पूनमप्रभा ने भी अपने विचार रखे।

● “नशामुक्ति दिवस” पर साध्वी कीर्तिलता ने सभा भवन में संभागियों को संबोधित करते हुए कहा नशा आज के युग की गंभीर

समस्या है। आदमी तनाव, समस्या, संघर्ष को भूलने के लिए नशे का सहारा लेता है और वही आदत धीरे-धीरे पूरे परिवार को दुःखी बना देती है। नशे से विवेक चेतना खत्म हो जाती है। साध्वीश्री ने युवापीढ़ी को संकल्प करवाया कि कम से कम एक वर्ष वे नशे से दूर रहें, तभी इस दिवस को मनाने की सार्थकता है। अणुव्रत चरित्र निर्माण का खजाना है। साध्वी शांतिलता ने कहा दुर्बसनों को छोड़कर व्यक्ति आर्थिक, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास कर सकता है।

■ उत्तर हावड़ा

साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि विधायक लगनदेव सिंह ने कहा मैं बस यही आशीर्वाद चाहता हूँ कि मैं अपने दायित्व से विमुख न बनूँ। राजनीति को स्वार्थ का साधन न बना कर, लोक सेवा में उसका उपयोग करूँ। ट्रस्ट के अध्यक्ष सुरेन्द्रकुमार सुराणा ने स्वागत भाषण करते हुए अतिथियों का परिचय दिया।

साध्वी कनकश्री ने कहा अणुव्रत चरित्र-शुद्धि का आंदोलन है। यह मानवीय एकता, सांप्रदायिक सौहार्द, मैत्री और सद्भावना की प्रतिष्ठा करने वाला एक दिव्य जीवन-दर्शन है। इस अवसर पर साध्वी मधुलता, महासभा के उपाध्यक्ष रतन दूगड़, भंवरलाल सिंधी, सुरेन्द्र सुराणा, अमरचंद दूगड़, विमल बैद ने अपने विचार रखे। श्रीचंद भूतोड़िया, लाभचंद सुराणा, सुरेन्द्र सुराणा, जतनमल पारख, अमरचंद दूगड़ ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का प्रतीक चिह्न एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया। संचालन अशोक भंसाली ने किया।

अणुव्रत की गूँज

विगत छः दशकों से मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के संवर्द्धन में समर्पित अणुव्रत आंदोलन के सरदारशहर में आयोजित 61वें वार्षिक अणुव्रत अधिवेशन की सम्पन्नता पर 11 अक्टूबर 2010 को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी को ध्यान में रखते हुए देशभर में आगामी दो वर्षों में कम से कम 500 सक्रिय अणुव्रत समितियां कार्यरत होनी चाहिए, ताकि अणुव्रत आंदोलन में तेजस्विता लाई जा सके। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर देश में मानवीय नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना के लिए कश्मीर से कन्या कुमारी तक लगभग एक लाख किलोमीटर की अणुव्रत पदयात्रा की थी। वर्तमान में अणुव्रत महासमिति से सम्बद्ध जो समितियां पूर्णतया सक्रिय नहीं हैं, वे भी सक्रिय होकर कार्य करें, जिससे अणुव्रत आंदोलन का भावी रूप निखर सके।

इस संदर्भ में सभी प्रादेशिक/जिला/स्थानीय अणुव्रत समितियों से विनम्रः अनुरोध है कि जिन समितियों ने चुनाव नहीं करवाए हैं, वे दिसम्बर 2010 तक आगामी दो वर्ष हेतु चुनाव सम्पन्न करवा कर नयी कार्यसमिति की सूची दूरभाष एवं पूर्ण पते सहित अणुव्रत महासमिति कार्यालय में भिजवा देवें एवं अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं को अपने साथ जोड़ने का श्रम करावें। देशभर में कम से कम 500 सक्रिय अणुव्रत समितियों के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए जिन क्षेत्रों में अणुव्रत समितियां नहीं हैं, वहां पर नयी अणुव्रत समितियों का गठन करने/करवाने में योग्यभूत बनें। इस हेतु अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य उपलब्ध करवाया जायेगा।

इस हेतु अणुव्रत आंदोलन से जुड़े सभी अमृत सांसदों, तेरापंथी सभाओं के अधिकारियों, तेयुप के अधिकारियों से भी हमारा निवेदन है कि वे भी अपने क्षेत्रों में अणुव्रत समितियां गठित करवाने में अपनी सहभागिता का निर्वहन करें तभी आचार्यश्री के लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है। इस संदर्भ में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

हम जानते हैं कि आप अणुव्रत के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। आपसे आशा है कि अणुव्रत आंदोलन की गति-प्रगति को बढ़ाने के क्रम में आपकी टीम का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। इसलिए अपने-अपने क्षेत्र में अणुव्रत समिति के माध्यम से अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं को जोड़ने का प्रयास करें, ताकि अणुव्रत आंदोलन की गति-प्रगति में तेजी लायी जा सके। आपका सहयोग ही हमारा आधार संबल है।

निर्मल एम. रांका, अध्यक्ष